₹ 20

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

क्रान्ति

दिसम्बर 2013

■ काबा की ऐतिहासिकता
–मौ॰ मु॰ मुजीबुद्दीन क़ासिमी

■ जनतांत्रिक व्यवस्था का वंचित तबक़ा!
–डॉ॰ मुहम्मद अहमद

■ जातिगत भेदभाव : सामाजिक अभिशाप
–अहद प्रकाश

■ औपचारिक बनाम सच्चा नाम
–राम पुनियानी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

''नेकी यह है कि
अल्लाह की मुहब्बत में
अपना दिलपसन्द माल
रिश्तेदारों और यतीमों पर,
मिस्कीनों और मुसाफ़िरों पर,
मदद के लिए हाथ फैलाने
वालों पर और ग़ुलामों की
रिहाई पर ख़र्च करे ।''

(कुरआन)

A WELL WISHER
MUMBAI

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 23 अंक 6 दिसम्बर 2013

कहो : "वह अल्लाह यकता है, अल्लाह निरपेक्ष (और सर्वाधार) है, न वह जनिता है और न जन्य, और न कोई उसका समकक्ष है।" **–क़ुरआन**

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

09818799223, 011-26949430

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 20/- विशेषांक रु० 30/-

वार्षिक रु० 220/-, दो वर्ष 425/-

पांच वर्ष 1000/-, आजीवन रु० 5000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–100 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–35 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट 'मासिक कान्ति' के नाम से बनवाएं

वाणी संयम

बहुत समय नहीं हुआ जब
वाणी संयम को
बहुत महत्व दिया जाता था।
पहले तौलो फिर मुंह से बोलो
बचपन में ही सिखाया-समझाया जाता था।
बिना सोचे-समझे अनर्गल बोलने वाला
लबरा और लबार कहलाता था।
समाज में हीन दृष्टि से
देखा जाता था।

युग परिवर्तन हुआ है।
अब आमजन कम
तथाकथित नेता संत, सत्ताधारी अधिक
बेतुके बेहूदा बाज़ारू बयान देते हैं,
अमर्यादित द्विअर्थी कामुक भाषा बोलते हैं
वह भी पब्लिक प्लेटफ़ार्म से
कन्याओं, महिलाओं की उपस्थिति में।

हो हल्ला मचने पर
बजाय झेंपने के खेद जताने के
कुतर्क देते हैं और स्वयं को
सही ठहराने पर उतर आते हैं,

बचाव का कोई रास्ता न रहने पर
कहीं से भी कोई समर्थन न मिलने पर
मात्र खानापूर्ति भर के लिए
टंटा मिटाने की गरज़ से
खेद व्यक्त कर छुट्टी पा लेते हैं।

क्या हमारे सामाजिक पतन का
यह नया रूप
ऐसे ही विस्तार पाता जाएगा ?
क्या ऐसे तत्वों की जिह्वा पर
उचित नियंत्रण हेतु
हमारे समाज का जागरूक वर्ग
सामने नहीं आएगा ?

● **ओमप्रकाश बजाज**

बी-2,गगन विहार, गुप्तेश्वर, जबलपुर-482001 (म०प्र०)



कहां क्या है ?

वाणी संयम (कविता)	–ओम प्रकाश बजाज	3
कुरआन ज्योति		5
स्मरण की मजलिसों का माहात्म्य (हदीस मंजरी)		6
मानव का मौलिक जीवन-सिद्धांत और इस्लाम (संपादकीय)		7
ईद मिलन (आपके पत्र)		9
जनतांत्रिक व्यक्ति का वंचित तबक़ा	–डॉ॰ मुहम्मद अहमद	13
कन्या भ्रूण हत्या एवं घटता लिंगानुपात	–डॉ॰ जनक सिंह मीणा	19
जातिगत भेदभाव : सामाजिक अभिशाप	–अहद प्रकाश	21
परिवार नियोजन और इस्लाम (सवाल-जवाब)	–संपादन प्रभाग	23
इतिहास तोड़कों से सावधान रहें	–डी॰ एन॰ झा	25
काबा की ऐतिहासिकता (विशेष आयोजन)	–मौलाना मुहम्मद मुजीबुद्दीन क़ासिमी	26-27
क्या हरम का तोहफ़ा ज़मज़म के सिवा कुछ भी नहीं ?	–मुफ़्ती मुहम्मद मुजीबुर्रहमान	30
मुद्राराक्षस का इतिहास (?) बोध	–डॉ॰ रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर'	33
बाबाओं के चक्कर में फंसते हताश लोग	–सी॰ के॰ रहमानी	35
मुक्तक	–डॉ॰ यायावर	36
सफल लोकतंत्र का मार्ग	–माहे तिलत सिद्दीक़ी	37
ठूंठ (कहानी)	–मासूम अंसारी	39
औपचारिक बनाम सच्चा न्याय	–राम पुनियानी	41
इस्लाम में शासन करने का अधिकार	–अबरार अहमद	44
जीवनशैली बदलें, दिल के रोगों से बचें (स्वास्थ्य चर्चा)	–राजेन्द्र कुमार राय	45
रोज़गार के अवसर हैं मटीरियल मैनेजमेंट में (कैरियर)		47
मौसम और अल्लाह की महानता (बालवीथी)	–विद्या प्रकाश	49
मचा हुआ कोहराम है (कविता)	–शुचि वंदना	49

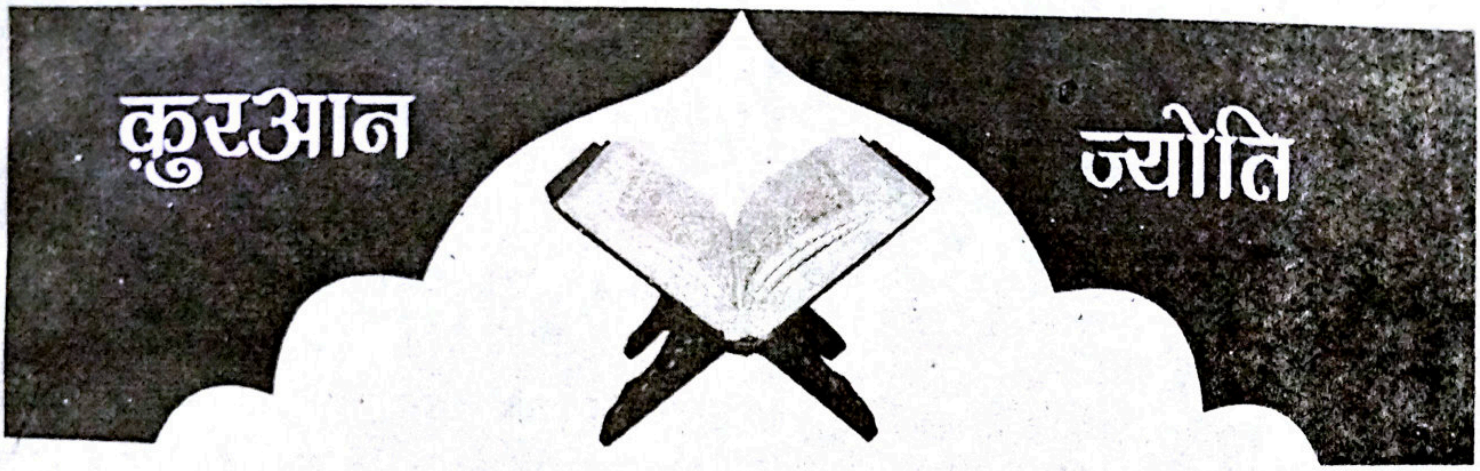

(40) जब वह अपने साथी से कह रहा था कि "ग़म न कर, अल्लाह हमारे साथ है।"[42] उस समय अल्लाह ने उस पर अपनी ओर से हृदय-शान्ति उतारी और उसकी सहायता ऐसी सेनाओं से की जो तुमको दिखाई न पड़ती थीं और इन्कारियों (शत्रुओं) का बोल नीचा कर दिया, और अल्लाह का बोल तो ऊंचा ही है, अल्लाह ज़बरदस्त और गहरी सूझ-बूझवाला है।

(41) निकलो, चाहे हलके हो या बोझल[43] और संघर्ष करो अल्लाह की राह में अपने मालों और अपनी जानों के साथ, यह तुम्हारे लिए अच्छा है अगर तुम जानो।

–क़ुरआन, 9 : 40,41

---

42. यह उस अवसर का उल्लेख है जब मक्का के इस्लाम दुश्मनों ने नबी (सल्ल०) की हत्या का निश्चय कर लिया था और आप ठीक उस रात को, जो हत्या के लिए निश्चित की गयी थी, मक्का से निकलकर मदीना की ओर हिजरत कर गये थे। मुसलमानों की बड़ी संख्या दो-दो, चार-चार करके पहले ही मदीना जा चुकी थी। मक्का में केवल वही मुसलमान रह गये थे जो बिल्कुल विवश थे या कपटपूर्ण ईमान रखते थे और उन पर कोई भरोसा न किया जा सकता था। इस स्थिति में जब आपको मालूम हुआ कि आपकी हत्या का निर्णय हो चुका है, तो आप केवल एक साथी हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) को साथ लेकर मक्का से निकले, और इस विचार से कि आपका पीछा अवश्य किया जाएगा, आपने मदीना का रास्ता छोड़कर (जो उत्तर की ओर था) दक्षिण का रास्ता अपनाया। यहां तीन दिन तक आप सौर नामी गुफ़ा में छिपे रहे। ख़ून के प्यासे दुश्मन आपको हर ओर ढूंढ़ते फिर रहे थे। मक्का के आसपास की घाटियों में उन्होंने कोई कोना ऐसा न छोड़ा जहां आपको खोजा न हो। इसी सिलसिले में एक बार उनमें से कुछ लोग ठीक उसी गुफ़ा के मुहाने पर भी पहुंच गये जिसमें आप छिपे हुए थे। हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) बहुत डरे कि अगर इन लोगों में से किसी ने तनिक भी आगे बढ़कर गुफ़ा में झांक लिया तो वह हमें देख लेगा, लेकिन नबी (सल्ल०) तनिक न घबराये और आपने यह कहकर हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) को तसल्ली दी कि 'ग़म न करो, अल्लाह हमारे साथ है।"

43. 'हलके और बोझल' के शब्द व्यापक अर्थ रखते हैं। अर्थ यह है कि जब निकलने का आदेश हो चुका है तो बहरहाल तुमको निकलना चाहिए, चाहे इच्छा से, चाहे अनिच्छा से, चाहे तंगदस्ती में, चाहे ख़ुशहाली में, चाहे सामान की बहुतायत के साथ, चाहे बे-सामानी के साथ, चाहे अनुकूल परिस्थिति में, चाहे प्रतिकूल परिस्थिति में, चाहे जवान व तन्दुरुस्त, चाहे बूढ़ा व कमज़ोर।



स्मरण की मजलिसों का माहात्म्य

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "निश्चय ही अल्लाह तआला के कुछ फ़रिश्ते ऐसे भी हैं जो रास्तों में चलते-फिरते रहते हैं और ज़िक्र करने वालों को तलाश करते हैं और जब वे ऐसे लोगों को पा लेते हैं जो गौरव के स्वामी प्रतापवान अल्लाह का ज़िक्र कर रहे होते हैं, तो वे पुकारते हैं : अपने उद्देश्य की ओर आओ। तो वे उन्हें अपने पंख से निकटवर्ती आकाश तक ढक लेते हैं। फिर उनका रब उनसे पूछता है—हालांकि वह सब कुछ जानता है—मेरे बन्दे क्या कहते हैं ?" आपने कहा : "फ़रिश्ते कहते हैं : वे तेरा महिमागान करते हैं और तेरी बड़ाई करते हैं और तेरी प्रतिष्ठा का वर्णन करते हैं। वह (अल्लाह) कहता है : क्या उन्होंने मुझे देखा है ? वे कहते हैं : नहीं, अल्लाह की क़सम, उन्होंने तुझे नहीं देखा। वह कहता है : यदि वे मुझे देख लें, तो उनकी क्या हालत हो ?" आपने कहा : "फ़रिश्ते कहते हैं : यदि वे तुझे देख लेते, तो और भी बढ़-चढ़कर तेरी इबादत करते, और भी बढ़-चढ़कर तेरी प्रतिष्ठा का वर्णन करते, और भी अधिक तेरा महिमागान करते। वह (अल्लाह) कहता है : वे मांगते क्या हैं ?" आपने कहा : "फ़रिश्ते कहते हैं : वे तुझसे जन्नत मांगते हैं।" आपने कहा : "वह कहता है : क्या उन्होंने जन्नत देखी है ?" आपने कहा : "वे (फ़रिश्ते) कहते हैं : नहीं अल्लाह की क़सम, ऐ हमारे रब, उन्होंने उसे नहीं देखा।" आपने कहा : "अल्लाह कहता है : यदि वे उसे देख लें, तो उनकी क्या हालत हो ?" आपने कहा : "वे कहते हैं : यदि वे जन्नत को देख लें, तो वे उसके और ज़्यादा लालायित हो उठें, और उसके लिए उनकी चाह और बढ़ जाए और उसमें उनकी उत्कंठा और बढ़ जाए। अल्लाह ने कहा : वे किस चीज़ से बचने की पनाह मांगते थे ? कहा : वे दोज़ख़ से बचने की पनाह मांगते हैं।" आपने कहा : "अल्लाह कहता है : क्या उन्होंने दोज़ख़ को देखा है ? कहा : वे कहते हैं : नहीं, अल्लाह की क़सम उन्होंने उसे नहीं देखा। अल्लाह कहता है : यदि वे उसे देख लें, तो उनकी क्या हालत हो ?" आपने कहा : "वे कहते हैं : यदि वे उसे देख लें, तो और अधिक उससे दूर भागें, और उससे और अधिक डरने लगें।" आपने कहा : "अल्लाह कहता है : मैं तुम्हें गवाह बनाता हूं कि मैंने उन्हें क्षमा कर दिया। आपने कहा : "फ़रिश्तों में से एक फ़रिश्ता कहता है : उनमें फलां व्यक्ति भी है जो उनमें से नहीं है वह तो किसी ज़रूरत से वहां आया था। अल्लाह कहता है : वे ऐसी मजलिस वाले हैं जिनकी मजलिस में बैठने वाला भी बदनसीब नहीं रह सकता है।"

—बुख़ारी, मुस्लिम

('रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

मानव का मौलिक जीवन-सिद्धांत और इस्लाम

इस्लाम इन्सान का मौलिक, वास्तविक एवं स्वाभाविक धर्म है । यह केवल एक आस्था नहीं, अपितु जीवन में अनुकरण करने और आत्मसात करने की तीव्र प्रेरणा देने वाला धर्म है । इस्लाम एक पूरी जीवन पद्धति है । यह इन्सान को जीवन के सभी क्षेत्रों व गतिविधियों में मार्गदर्शन करता है, और वह भी ईश्वरीय मार्गदर्शन ! यह एक सार्वभौमिक धर्म है, अतयव इसका नाम किसी क़ौम, जाति, क्षेत्र या अन्य किसी भौतिक पहचान पर नहीं है, अपितु पालनहार प्रभु और उसके बन्दों के मधुर संबंधों पर है । इस्लाम का अर्थ है–ईश्वर की बन्दगी और उसके आगे पूर्ण समर्पण । कुरआन कहता है कि अल्लाह की सच्चाई आरंभ से एक है । दुनिया का कोई देश और कोई कोना ऐसा नहीं जहां अल्लाह के पैग़म्बर न भेजे गये हों । उन्होंने इन्सानों को हक़ और सच्चाई की शिक्षा दी, परन्तु सदैव ऐसा हुआ कि लोगों ने कुछ समय के बाद अपनी स्वार्थपरता के कारण कल्पना और अंधविश्वास से विभिन्न मिथकों और झूठी बातों के सहारे वास्तविक धर्म-शिक्षाओं को विकृत कर डाला । महादयालु, कृपाशील अल्लाह ने फिर भी इन्सानों पर कृपा दृष्टि की और अपने अंतिम पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को भेजा । आप (सल्ल०) के द्वारा इस्लाम की पूर्ण और प्रमाणिक शिक्षा पेश की । इस्लाम की शिक्षाओं में सर्वप्रथम शिक्षा यह है कि अल्लाह एक है और केवल उसी की बन्दगी की जानी चाहिए ।

इसकी शिक्षाएं इन्सानियत के लिए सर्वथा हितकारी-कल्याणकारी हैं । ये किसी एक समुदाय या क़ौम की सम्पत्ति न होकर सार्वभौमिक और सर्वजन की सम्पत्ति हैं । अतः यह सार्वजनिक, जगतव्यापी एवं सर्वकल्याणकारी धर्म है । सहज रूप से अल्लाह की प्रसन्नता, सामीप्य एवं लोक-परलोक की सफलता प्रत्येक आस्थावान मनुष्य को अभीष्ट है । यह उसी एक जीवन-प्रणाली द्वारा संभव है, जो मानव-जाति के संगठन को अस्त-व्यस्त नहीं करती एवं उसके विचार-व्यवहार को द्वंदात्मक संघर्ष में नहीं ग्रस्त करती तथा जो आख़िरकार मानव-प्रकृति और जगत-प्रकृति से नहीं टकराती । यही इस्लामी जीवन-प्रणाली है । इस्लाम इसलिए नहीं आया कि केवल नैतिक क्षेत्र में आत्मा को संवारे, वह लोगों में मात्र चेतना और अनुभूति बनकर रहे और मस्जिदों में केवल एक उपासना-पद्धति बनकर रह जाए । अपितु यह मानव-जीवन को पूरी तरह अल्लाह के आदेश के अनुरूप ढालने आया है । यह लोगों को उनके धर्म से हटाना नहीं चाहता बल्कि उनके वास्तविक धर्म का उनको अनुगामी बनाना चाहता है । दुनिया में विभिन्न धर्म हैं । हर धर्मावलंबी समझता है कि सत्य केवल उसी के पास है और बाक़ी सब असत्य पर हैं । यह वास्तविकता से परे बात है । सत्य तो केवल एक ही हो सकता है । इस्लाम सत्य में असत्य की मिलावट को दूर कर उसे विशुद्ध और पवित्र बनाता है ।

ईद मिलन

एक लंबे अर्से के बाद आपको पुन: एक ख़त लिख रहा हूं जिसका कारण है कि दिनांक 18-8-13 को मेरे गांव में ईद मिलन समारोह का आयोजन किया गया था, जिसमें मैं भी आमंत्रित था । मैं इस ईद मिलन समारोह को समझने में भूल करता आ रहा था । मैं समझता था कि यह कार्यक्रम एक बिदअंत है (एक नयी रस्म है) या फिर यह एक दिखावा है । मगर 18-8-13 को सही मायने में मुझे ज्ञान हुआ कि जमाअत इस्लामी हिन्द की चकला यूनिट द्वारा इस ईद मिलन समारोह का मुख्य उद्देश्य ईश्वरीय संदेश को आम जनमानस तथा पूरे क्षेत्र के प्रबुद्ध ग़ैर-मुस्लिम भाइयों तक पहुंचाना है ।

हालांकि दो शब्द मुझे भी बोलने का मौक़ा दिया गया था, मगर मैं विस्तार से कुछ भी नहीं कह सका इसका मुझे अफ़सोस है जबकि मैं इस्लाम धर्म के बारे में कुछ विस्तार से ज़िक्र कर सकता था । मगर मैंने जलसे को संबोधन के पश्चात सिर्फ़ एक वाक्य में कहा कि इस्लाम धर्म की शिक्षा है कि "जिस किसी ने किसी निर्दोष व्यक्ति का क़त्ल कर दिया उसने सारी मानवता का क़त्ल कर दिया और जिस किसी ने भी किसी निर्दोष व्यक्ति की जान बचा ली उसने सारी मानवता को बचा लिया ।"

इस्लाम धर्म हमें दुनिया में जीवन कैसे गुज़ारना है इसका गुर सिखाता है । यह जो जीवन हमें मिला है इसका उद्देश्य है कि ईश्वर हम से कुछ अपेक्षाएं रखता है । ईश्वर ने अधिकार दे दिया है और इसके बदले में आख़िरत में हमारे कर्मों का बदला देगा । यह जीवन क्षण-भंगुर है, नाशवान है । अत: हर कार्य नेक होना चाहिए ।

मैंने मासिक पत्रिका 'कान्ति' को लगातार दस वर्षों तक पढ़ा है और इसे पढ़कर जो ज्ञान हुआ है उसी ज्ञान के आधार पर मैं अपनी टूटी-फूटी भाषा में अपने अनुभव को लिखकर आपके पास भेज रहा हूं साथ ही प्रकाशित करने का निवेदन भी कर रहा हूं ताकि जो ईश्वरीय संदेश समस्त मानव कल्याण के लिए अवतरित हुआ है, जिसे जन-जन तक पहुंचाने का मेरा भी कर्तव्य है । और इसी कर्तव्य से मैं ईद मिलन के दिन वंचित रह गया । ऐसा मेरा ज़मीर कहता है इसका मुझे पश्चाताप है । मैं तहेदिल से यह स्वीकार करता हूं कि इस्लाम धर्म एक सत्य धर्म है । यह एक वाहिद मज़हब है । इस्लाम धर्म की बुनियाद एकेश्वरवाद है जबकि अन्य धर्मों का आधार बहुदेववाद है । एक मोमिन एकेश्वरवाद पर ही कहता है "ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" इसका अर्थ है, "ईश्वर के अलावा कोई पूज्य नहीं है और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के रसूल हैं" यही है बुनियादी फ़र्क़ ।

अल्लाह (ईश्वर) एक है इसकी न कोई ब्रांच है, न कोई शाखा और न कोई मददगार है । ईश्वर को कभी न तो नींद आती है और न ही भूख लगती है, वह किसी का किसी भी तरह से किसी चीज़ के लिए मोहताज नहीं है । वह तो सर्वशक्तिमान है, सर्वज्ञानी है । उसकी कृपा की मोहताज सारी सृष्टि है ।

वह कहता है : हो जा और हो जाता है, वह तो दाता है, वह कृपाशील है, वह दयावान है । उस ईश्वर की जितनी भी तारीफ़ की जाए कम है । इस्लाम धर्म हमें यह भी सिखाता है कि इन्सान का पुनर्जन्म नहीं होता है, बल्कि उसे पुनर्जिवीत किया जाएगा । उस ईश्वर के द्वारा जो सारे जहां का आक़ा और मालिक है ।

ईश्वर क़ियामत के दिन सारे मानव को फिर से जीवित कर उससे उसके दुनिया के कर्मों का हिसाब लेगा और उसके आधार पर ही वह न्याय करेगा । जिसका जैसा कर्म होगा उसे दंडित करेगा अथवा पुरस्कृत करेगा । यही सच है और इसी सच को हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने दुनिया को तोहफ़ा के रूप में दिव्य क़ुरआन के माध्यम से सारे मानव को दिया है ।" इस सच को मैं स्वीकार करता हूं और आपके माध्यम से ईद-मिलन समारोह के आयोजकों को तहेदिल से शुक्रिया अदा करता हूं ।

द्वारिका प्रसाद साहु
ग्राम+पो०-चकला,
रांची (झारखंड)

अद्‌भुत कौशल

'कान्ति' पत्रिका का नवीनांक जुलाई-13 अंक पढ़ा, बड़ी प्रसन्नता हुई । खूब पसन्द भी आया । हार्दिक धन्यवाद ।

पत्रिका के प्रारंभिक पृष्ठ पर प्रकाशित जबलपुर के ओम प्रकाश बजाज का काव्यात्मक वरिष्ठ नागरिक विचारोत्तेजक और मार्मिक रूप से प्रकट किये गये हृदयोदगार है । उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द का प्रेरक कहानी ईदगाह स्वाभाविक रूप से सराहनीय और शिक्षाप्रद है । हरियाणा के सुपरिचित रोहित यादव की क्षणिका शैली में प्रस्तुति देखते रह जाओगे व्यावहारिक रूप से विशेष उल्लेखनीय है । संक्षेप में 'कान्ति' मानवीत्यानु की प्रेरक पत्रिका है । प्रकाशन सामग्री का चयन आपके अद्‌भुत कौशल का परिचायक है ।

अगले मास 30 अगस्त को मैं अपनी जीवन यात्रा के 80वें वर्ष में प्रवेश करने जा रहा हूं । मगर आज यह देखकर मुझे बहुत व्यथित होना पड़ रहा है कि पश्चिम से आधुनिक वैज्ञानिक प्रगति के लुभावने झरोखों से आ रही आकर्षक आंधी के दुष्प्रभाव से हमारे अधिकांश युवक विचलित होकर पथभ्रष्ट होते जा रहे हैं । वे अपने वरिष्ठ नागरिकों को उपेक्षित तथा प्रताड़ित करने में भी कोई संकोच नहीं कर रहे हैं । तथा पाश्चात्य जीवनशैली से दुष्प्रभावित होकर हमारी भारतीय प्राचीन प्रशंसनीय सभ्यता तथा संस्कृति से विमुख होते जा रहे हैं, जो चिंता का विषय है ।

पं॰ बी॰ एन॰ मुदगिल
प्रेस सदन, गद्‌दी खेड़ी,
रोहतक, हरियाणा

दीपावली के पटाख़े

बच्चों, आप सबका प्रिय मन भाता त्योहार 'दीपावली' आया । तुम्हारे मन में भी उमंगें तरंगें मारने लगीं । दीपावली पर नये कपड़े पहनें, ख़ूब सारी मिठाइयां खायीं, दीप जलाकर रोशनी की, बम पटाख़े और अनार फोड़े । तुम कितना खुश हुए जब तेज़ आवाज़ में पटाख़े फूटे । बच्चों क्या तुमने इस बात पर भी कभी ध्यान दिया है कि जो पटाख़े तुमने फोड़े उनमें से कितना ज़हरीला धुआं निकला जो हमारे स्वास्थ्य व आसपास के वातावरण के लिए कितना हानिकारक है, बीमार व्यक्तियों व दमे के मरीज़ों के लिए कितना कष्टदायी होता है । नन्हे जीवों की हत्या अनजाने में हो जाती है । हमारे कानों के लिए पटाख़ों से निकली तेज़ आवाज़ कितनी हानिकारक सिद्ध होती है, इस पर विचार किया ।

क्या तुम जानते हो कि इन पटाख़ों में कितने ही विषैले केमिकल्स जैसे कैडमियम, मैग्निशियम, सोडियम आदि मिले होते हैं, इनसे नाक और गले की बीमारियां हो सकती हैं । पटाख़ों से निकला नाइट्रोजन डाईऑक्साइड फेफड़ों में जाकर सांस संबंधित बीमारियां पैदा कर सकता है । पटाख़ों से वातावरण प्रदूषित होता है । अत: बच्चों, दीपावली पर पटाख़े चलाएं तो उपरोक्त बातों पर अवश्य ग़ौर कर लें अन्यथा बाद में पछताएंगे ।

यशपाल जैन 'आदर्श'
494/5, राजा पार्क, जयपुर (राज॰)

महिलाओं का महत्व

जैसा कि लोगों का सामान्य विचार है कि इस्लाम ने महिलाओं को पर्दे में रखकर व उसूलों में बांध कर उनके जीवन को सीमित कर दिया । उनकी न कोई प्रतिष्ठा है, न ही उन्हें कोई महत्व और किसी भी क्षेत्र में कोई स्थान दिया गया है, परन्तु ऐसा नहीं है यह सोचना बिल्कुल निराधार है । इस्लाम में औरतों को वह महत्व प्रदान किया गया है जो लोगों की समझ से परे है । औरतों की समाज में क्या भूमिका रही इसे इस्लामी सभ्यता के अध्ययन से जाना जा सकता है ।

इस्लाम में उच्च एवं शीर्ष स्थान पर महत्व प्राप्त करने वाली औरतें जो मेरे मन-मस्तिष्क में हैं, उनमें सबसे पहले उम्मुल मोमिनीन सैयदा ख़दीजा (रज़ि॰) का नाम लिया जा सकता है जिनकी श्रेष्ठता का मुख्य कारण यह है कि वे सबसे पहले इस्लाम लाने वाली महिला थीं । वे बहुत सुखी एवं संपन्न थीं परंतु इस्लाम के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने में लेशमात्र भी संकोच नहीं किया । अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) की इतनी चहेती थीं कि इनके मरने के बाद भी आप (सल्ल॰) याद किया करते थे ।

अल्लाह का सर्वप्रथम संदेश (इक़रा) उसकी साक्ष्य (गवाह) 'ख़दीजा (रज़ि॰) थीं । अल्लाह की ओर से अंबिया के बाद जिन बन्दों को सलाम भेजा गया उनमें उम्मुल मोमिनीन ख़दीजा (रज़ि॰) का नाम शामिल है ।

विशेष गुणों से संपन्न हज़रत आइशा (रज़ि॰) का स्थान इतना ऊंचा है कि उसका अनुमान लगाना असंभव है वे आप (सल्ल॰) की सबसे प्रिय पत्नी थीं । इन्होंने आप (सल्ल॰) की नि:स्वार्थ भाव से सेवा की । इस्लामी नियम सबसे

ज़्यादा इनके द्वारा ही सुने गये यह अपने समय में हदीसों का सबसे अधिक ज्ञान रखने वाली महिला थीं ।

इनकी महत्ता का एक प्रसिद्ध उदाहरण यह है कि आपकी प्रशंसा एवं महत्ता के लिए अल्लाह ने स्वयं कुरआन में कुछ आयतें उतारी तथा उन आयतों के द्वारा आपकी पवित्रता का प्रमाण भी दिया ।

महानता के आधार पर दूसरी उम्मुल मोमिनीन भी कम नहीं, जिनका नाम आप (सल्ल०) के साथ संलग्न है वे 'सफ़िया (रज़ि०)' हों चाहे 'मैमूना (रज़ि०)' हों चाहे 'उम्मे सलमा (रज़ि०)' हों या जुवैरिया (रज़ि०)' या फिर 'मारिया क़िबतिया (रज़ि०)' हों इत्यादि ।

इन सब सहाबियात को सभी मोमिनों की माएं कहा गया । अर्थात नबी की बीवियां तमाम मोमिनों की माएं हैं । इसके आगे औरतों में ''सय्यदा फ़ातिमा (रज़ि०)'' का स्थान इतना ऊंचा है कि जिनकी महानता अवर्णनीय है । यह आप (सल्ल०) की प्रिय पुत्री थीं तथा कम उम्र में इस्लाम लाने वाली महिला थीं ।

इनके अतिरिक्त एक ऐसी प्रतिष्ठित नामवर महिला जिनका वर्णन यदि विशेष गुण-संपन्न महिलाओं के बीच न किया जाए तो शायद इतिहास अधूरा रह जाएगा वे धैर्य व संतोष की प्रतीक सय्यदा हाजरा (रज़ि०) हैं । जो इबराहीम (अलैहि०) की पत्नी एवं इस्माईल (अलैहि०) की मां हैं । जिन्होंने बयाबान बंजर भूमि, जीव-जंतुओं से विहीन सुनसान स्थान को आबाद किया । इस स्थान को आबाद करने के लिए धैर्य के साथ संघर्ष किया । उनकी मेहनत का परिणाम यह हुआ कि अल्लाह ने स्वयं उस बयाबान स्थान को हरम-ए मक्का बना दिया । अरब में स्थापित यह पवित्र शहर मुसलमानों का पवित्र तीर्थ स्थान है एवं अपनी अखिल ज्योति प्रकाशित करने वाला अनुपम शहर है । इस अनुपम शहर में पहले दूर-दूर तक पानी जैसी अनमोल चीज़ का नामोनिशान तक नहीं था परंतु इनकी ही दिव्य साधना से वहां पर ज़मज़म जैसा पवित्र स्वच्छ पानी प्राप्त हुआ, इसकी हर एक बूंद के प्रति लोगों के हृदय में प्रेम एवं श्रद्धा है ।

एक ऐसी ही प्रभुत्व संपन्न महान हस्ती सय्यदना ईसा (अलैहि०) की मां हज़रत मरयम (अलैहि०) हैं, जिनके नाम पर अल्लाह ने पूरी एक सूरह उतार दी तथा उन्हें वह महत्ता प्रदान की जिसकी बड़े-बड़े विद्वान, ज्ञानी, कल्पना नहीं कर सकते हैं । वह यह है कि क़ियामत तक नबी ईसा (अलैहि०) के नाम को हज़रत मरयम (अलैहि०) के नाम से पुकारा जाएगा । अल्लाह ने खुद उनको ''ईसा इब्ने मरयम'' का नाम दिया ।

आज महिलाओं को स्वयं पर गर्व होना चाहिए कि जिस धर्म में महिलाओं के जीवन को सीमित करने जैसे आरोप लगाये जाते हैं उस धर्म में ही महिलाएं स्वतंत्र रूप से बिना किसी दबाव के मार्गदर्शन करती रहीं । इन महिलाओं की प्रतिष्ठा एवं महानता को ध्यान में रखकर धर्म-कर्तव्य की ओर आगे बढ़ना चाहिए और हर क्षेत्र में अपनी भूमिका निभानी चाहिए ।

डॉ० दरख़्शां बानो
अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव,
जामिया नगर, नयी दिल्ली-25

पहल की प्रतीक्षा क्यों ?

वैसे तो मैं एक आम भारतीय नागरिक हूं, लेकिन मुझे भी कभी-कभी राहुल गांधी की तरह गुस्सा आता है । मुझे कभी-कभी भारतीय जनता पर गुस्सा आता है । मुझे आसाराम के मामले में भारतीय जनता पर गुस्सा आता है । हाल ही में आसाराम यौन शोषण के मामले में गिरफ़्तार किये गये हैं । मुझे गुस्सा इस बात पर आता है कि जनता ने यदि शुरू में ही हिम्मत दिखायी होती तो जाने कितनी लड़कियां आसाराम के चंगुल से बच जातीं ।

हम क्यों डरते हैं ? हम क्यों सोचते हैं कि पहल कोई और करे ? हम क्यों नेतृत्व करना नहीं चाहते ?

आज जब आसाराम की शिकार हुई एक लड़की ने उनके विरुद्ध आवाज़ उठायी, तब कहीं जाकर दूसरी लड़कियों में हिम्मत आयी और सबने बताया कि हमें भी आसाराम ने अपना शिकार बनाया था । यदि ये लड़कियां दस वर्ष पूर्व ही हिम्मत करके आसाराम के विरुद्ध आवाज़ उठातीं तो इन दस वर्षों में अनगिनत लड़कियों की अस्मत लुटने से बच जाती ।

इस मामले में हम यह भी नहीं कह सकते हैं कि देर आयद-दुरुस्त आयद । क्योंकि कई लड़कियों की इज़्ज़त लुट चुकी है और उस इज़्ज़त को कौन वापस लौटाएगा ? जिन लोगों को आसाराम ने नुक़सान पहुंचाया, उसकी भरपाई कौन करेगा ?

मैं एक आम भारतीय नागरिक होने की दृष्टि से यह

कहना चाहता हूं कि अब यदि कोई घटना घटित हो, तो जनता फ़ौरन प्रतिक्रिया दे । यह नहीं होना चाहिए कि हम सोचें कि हम क्यों मुसीबत मोल लें । हम क्यों यह सोचते हैं कि पहल कोई और करे ?

मैं कोई आसाराम का समर्थक नहीं हूं । मैं जानता हूं कि आसाराम के समर्थक भी यही बोल रहे हैं कि अब क्यों सामने आ रहे हो, पहले क्यों नहीं आवाज़ उठायी ?

जबकि मैं एक आम भारतीय नागरिक होने की हैसियत से यह सवाल जनता से पूछना चाहता हूं कि देरी क्यों ? देरी का नतीजा तो सामने आ ही गया है । जिस इन्सान को दस साल पहले जेल में होना चाहिए था, वह दस साल या उससे भी अधिक समय तक न सिर्फ़ खुला घूमता रहा बल्कि अनगिनत ज़िन्दगियों को उसने बरबाद भी किया ।

आसाराम की करतूतें अक्षम्य हैं, और कुछ लोग उनके लिए फांसी की सज़ा की भी मांग कर रहे हैं । हालांकि उनको फांसी दिये जाने से किसी भी लड़की की इज़्ज़त लौट नहीं आएगी परंतु फिर भी ऐसे इन्सान को मृत्युदंड देना आवश्यक है जो चोला वो संत का पहनता है, परंतु कृत्य शैतान का करता है ।

इस मामले में न्याय जल्दी होना इसलिए भी आवश्यक है कि इस घटना से कुछ लोगों को पूरे हिन्दू धर्म को अपमानित करने का मौक़ा मिल गया है । इस घटना से संत समाज आहत है । अत: संत समाज को भी चाहिए कि बिना देरी किये आसाराम पर एक मुक़दमा दायर करें कि उन्होंने समस्त संत समाज का अपमान किया है । इस मामले में अब और देरी नहीं होनी चाहिए ।

अबरार अहमद (लाखेरी वाले)
म०नं०-554, गली-3, जे०पी० कॉलोनी, रंगपुर रोड, कोटा जंक्शन, ज़िला-कोटा (राजस्थान)

दावेदारी का औचित्य ?

सितम्बर मास में अबरार भाई का नरेन्द्र मोदी के बारे में लिखा हुआ लेख पढ़ा । पढ़ने के बाद यह सोचने पर मजबूर हुए कि क्या वाक़ई ऐसे व्यक्ति को प्रधानमंत्री पद की दावेदारी करनी चाहिए, जिस पर ''दंगों का दाग़'' है । जिस व्यक्ति ने अपने राजनीतिक गुरु की राजनीति पर विराम लगा दिया हो, जो अपने गुरु का सम्मान न कर सका हो, वह आम देशवासियों के आत्म-सम्मान की रक्षा कैसे करेगा । जब वह भाषण में अपने ''हिन्दू राष्ट्रवादी'' होन की बात करता है तो अनायास ही वह दौर याद आ जाता है जब हिटलर ने पूरी विश्व शांति को तहस-नहस कर दिया था । एक समुदाय विशेष की तुलना एक ''कुत्ते के पिल्ले'' से करके उन्होंने अपनी निकृष्ट सोच का परिचय दे दिया है ।

जिस व्यक्ति ने अपनी ही पार्टी को तोड़ दिया वह देश को कैसे जोड़ेगा तथा स्वयं के लिए छत्तीसगढ़ की रैली में लालक़िले के जैसा मंच सजवाकर उन्होंने अपनी महत्वाकांक्षा का परिचय दे दिया है । ऐसे व्यक्तियों के लिए किसी शायर ने क्या ख़ूब कहा है–

अजब अंदाज़ है मुहब्बत आपकी नज़रों में,
यहां कुछ और कहती हैं, वहां कुछ और कहती हैं,
जो कुछ तुम करते हो, हम तो मान लेते हैं,
पर दुनिया आपका दामां कुछ और कहती है ।''

नाम, पता नहीं लिखा

अनुकरणीय इस्लामी सिद्धांत

मुसल्लम ईमान इन दो शब्दों के योग से बना है ''मुसलमान'' शब्द, जो ईमान धर्म का पालन करता है, सच्चाई पर चलता है । जो बेईमानी, चोरी, डकैती, जुंआ, रिश्वत, वैश्यावृत्ति नहीं करता है । अपना ध्यान अल्लाह (ईश्वर) में ही लगाता है । वही सच्चा मुसलमान हो सकता है । जो देश से, धर्म से बेईमानी करता है एवं बुरे काम करता है वह तो जहन्नम का मेहमान बनता है । जो नेक काम करता है । अपना पैसा जनहित में ख़र्च करता है, ग़रीबों व भूखों तथा असहाय लोगों को भोजन, कपड़ा व अन्य आवश्यक वस्तुएं देता है । भोजन-पानी का प्रबंध करता है । शिक्षा का प्रबंध करता है । पशुओं के चारे का प्रबंध करता है । ईशभक्त रहता है । मुनाफ़ाख़ोरी, धोखा, लूट-खसोट, कालाबाज़ारी नहीं करता है, वही सच्चा मुसलमान होता है ।

जो व्यक्ति दूसरों से ब्याज-बट्टा करता है, दूसरों को रुपया क़र्ज़ पर देता है तथा उन मूल रुपयों पर ब्याज लेता है । देश से धोखा करने वाला ग़द्दार व आतंकवादी व्यक्ति सच्चा मुसलमान नहीं हो सकता है । उन व्यक्तियों को जहन्नम में ही जगह मिलती है । सच्चा मुसलमान इस्लाम धर्म के सिद्धांतों को पूर्णरूपेण पालना करता है । वही व्यक्ति जन्नत में जाता है । इस्लाम धर्म के आदर्श सिद्धांत अनुकरणीय होकर प्रशंसनीय हैं ।

अनोखी लाल कोठारी
महावीर मार्ग, उदयपुर (राज०)

हमारी कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें

इस्लाम एक सामान्य परिचय	–शैख़ अली तंतावी	90.00
इस्लाम एक स्वयंसिद्ध ईश्वरीय जीवन व्यवस्था	–राजेन्द्र नारायण लाल	25.00
प्यारे नबी की पाक ज़िन्दगी	–एजाज़ुल हक़ क़ुद्दूसी	30.00
इतिहास के साथ यह अन्याय	–बी॰ एन॰ पाण्डे	7.00
मेरे दावती तजुर्बात (प्रथम)	–नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	25.00
ग़लत फ़हमियों का निवारण	–डॉ॰ ज़ाकिर नाइक	25.00
क़ुरआन और हम मुसलमान	–नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	15.00
क़ुरआन का पैग़ाम	–ख़ुर्रम मुराद	10.00
क़ुरआन पर अनुचित आक्षेप	–नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	15.00
हमें ख़ुदा कैसे मिला?	–अब्दुल ग़नी फ़ारूक़	100.00
इस्लाम आतंक या आदर्श?	–स्वामी लक्ष्मी शंकराचार्य	40.00
इस्लाम और इनसान (1-6)	–डॉ॰ सैयद शाहिद अली	84.00
दलित समस्या जड़ में कौन?	–इन्तिज़ार नईम	140.00
हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) और भारतीय धर्म-ग्रंथ	–डॉ॰ एम॰ ए॰ श्रीवास्तव	18.00
इस्लामी सभ्यता	–मुंशी प्रेम चन्द्र	5.00
क़ुरआन पुकारता है "ऐ लोगो..."	–मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन मंसूरी	12.00
आधुनिक नारी	–नुज़हत यासमीन	10.00
इस्लाम एक मात्र रास्ता	–मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन मंसूरी	12.00
शैतानी धोखे के विभिन्न रूप	–डॉ॰ सैयद शाहिद अली	40.00

हमारी सभी पुस्तकें मर्कज़ी मक्तबा इस्लामी पब्लिशर्स से भी प्राप्त की जा सकती हैं।

MADHUR SANDESH SANGAM

E-20, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025

E-mail : madhursandeshsangam@yahoo.co.in, Ph. : 9212356332

राजेन्द्र जी का दैहिक अवसान–हार्दिक भावान्जलि

जनतांत्रिक व्यक्ति का वंचित तबक़ा !

❖ डॉ॰ मुहम्मद अहमद

हिन्दी साहित्य में नयी विधा 'नयी कहानी' के आद्यक राजेन्द्र यादव जी का 28 अक्तूबर 2013 को 84 वर्ष की आयु में देहान्त हो गया । उन्हें हार्दिक भावान्जलि...। वे मुंशी प्रेमचंद द्वारा स्थापित पत्रिका 'हंस' के संपादक थे । 1930 में प्रकाशित 'हंस' का प्रकाशन 1953 में बन्द हो गया था । 31 जुलाई 1986 को इसका पुनर्प्रकाशन किया गया, तभी से राजेन्द्र यादव जी इसके संपादक थे । वे प्रगतिशील जनवादी विचारधारा के थे । उन्होंने भारतीय मुसलमानों पर केन्द्रित 'हंस' का एक विशेषांक अगस्त 2003 में प्रकाशित किया था । यह विशेषांक भी जनवादी दृष्टिकोण पर आधारित था । इसमें यादव जी की साफ़गोई भी परिलक्षित होती थी, लेकिन इस विशेषांक का उन्होंने संपादन कराया था । उन्होंने लिखा कि ''ईमानदारी की बात यह है कि मैं उनके (मुसलमानों के) बारे में उतनी गहराई से नहीं जानता, इसलिए बचता हूं ।'' यादव जी ने सितम्बर 2002 के 'हंस' के अंक में संपादकीय लिखा था, जिसके बारे में उनका कहना है कि यह भारतीय मुसलमानों को लेकर बनी आम धारणाओं (जनरल-पर्सेपशन) को आधार बनाकर लिखा गया था । वे बिना किसी लाग-लपेट के लिखते हैं कि ''ऊपर और दूर से जितना जानता हूं उसी आधार पर वह संपादकीय लिखा गया ।''

स्पष्ट है कि उक्त विशेषांक में जो 'मेरी-तेरी उसकी बात' संपादकीय शैली में है, वह भी यादव जी की साफ़गोई पर आधारित है । अत: इसकी इस अर्थ में तारीफ़ होनी चाहिए कि जन चेतना का प्रगतिशील कथा मासिक 'हंस' की धवलता किसी न किसी हद तक पारदर्शी है । आख़िर इसके संस्थापक प्रेमचंद जी जो ठहरे, जिनका नाम आद्यक के रूप में आज के हंसवाले छापते हैं । 'हंस' के अस्ल संपादक का विशेषांक के बारे में कहना है कि ''हमने फ़रवरी 2003 के अंक को 'मुसलमान अंक' की तरह घोषित कर दिया । डर यह था कि सांस्कृतिक राष्ट्रवादियों की तरह यहां भी हर लेखक इस्लाम की महानता और शरीअत-क़ुरआन की प्रासंगिकता पर ही न चालू हो जाए । इसलिए आग्रहपूर्वक शीर्षक दिया : 'भारतीय मुसलमान : वर्तमान और भविष्य' ।

जब संपादक महोदय की ऐसी इच्छा (?) हो तो विशेषांक की क्या दुर्गति होगी, सहज ही बोधगम्य है । यह कहा जा रहा है कि इसका संपादन यादव जी ने इसलिए नहीं किया क्योंकि वे इस विषय पर पर्याप्त जानकारी नहीं रखते । बात ठीक भी है, लेकिन यहां यह भी देखना होगा कि प्रस्तुत विशेषांक में जिन रचनाओं को स्थान दिया गया है, उनके पास संबंधित विषय की कितनी जानकारी है । अतिथि संपादक के लेख को ग़नीमत भी मान लिया जाए तो वह कौन-सा लेख है जो वस्तुनिष्ठ भी है और भारतीय मुसलमानों की सही स्थिति का चित्रण करता है ?

इस प्रकार यह विशेषांक संभव है यादव जी जैसे लोगों की प्रबुद्धता को किसी हद तक तुष्ट करता हो और यादव जी के लेखन को अन्यायपूर्ण ढंग से संतुलित करता हो, पर यह अपने प्रत्यक्ष या परोक्ष सभी उद्देश्य में पूर्णतया नाकाम है । धर्म विरोध, वह भी अतार्किक, असत्य, असंयत और आधारहीन ढंग से ! क्या कोई पढ़ा-लिखा व्यक्ति 'जनवाद' के नाम पर यह सब कुछ सहन कर लेगा ? कदापि नहीं किसी चीज़ को स्वीकार करने की बात तो कोसों दूर की है ।

इस कृत्य से तो प्रेमचंद जी की रचनाधर्मिता ही आहत और लहूलुहान हो सकती है । जिस पत्रिका में संस्थापक के रूप में प्रेमचंद जी का नाम छपता हो, उसमें बहानों की ओट लेकर स्वस्थ एवं मौलिक धार्मिक मूल्यों का विरोध किसी अन्याय से कम नहीं ! क्या जनवाद के भाइयों और बहनों को 'हंस' के संस्थापक प्रेमचंद जी का यह कथन याद नहीं कि ''वे सिद्धांत जिनका श्रेय अब कार्ल मार्क्स और रूसो को दिया जा रहा है, वास्तव में अरब के मरुस्थल में प्रसूत

हुए थे और उनका जन्मदाता अरब का उम्मी था, जिसका नाम मुहम्मद (सल्ल०) था ।'"

इस विशेषांक को वरिष्ठ साहित्यकार भीष्म साहनी जी को समर्पित करना विचित्र और दुर्भाग्यपूर्ण था । सहज ही आशा की जा सकती है कि यदि साहनी जी उस समय जीवित होते, तो स्वयं इससे निर्लिप्तता का इज़हार करते । प्रस्तुत विशेषांक इतना उथला और थोथा बन पड़ा है कि आश्चर्य होता है । जब इसके साथ प्रेमचंद जैसे महान रचनाकार का नाम जुड़ा है, तो स्तर का इतना लिहाज़ रखना चाहिए कि तथ्य ठीक से और सही सन्दर्भ में प्रस्तुत किये जाते । भ्रामकता से परहेज़ किया जाता और पाठकों को सही जानकारी उपलब्ध करायी जाती । मगर ऐसा तभी संभव हो पाता, जब संबंधित विषय पर गहरी नज़र रखने वाले रचनाकारों से लेखादि लिखवाये जाते । तब लेख, लेख ही रहते दुष्प्रचारक और तथ्य-भंजक न बनते ।

इसकी बानगी के तौर पर हम यहां 'इस्लाम और आधुनिक दलित चिंतन' शीर्षक से प्रकाशित लेख पर एक विहंगम दृष्टि डालने का प्रयास करेंगे, जिसमें अनेकानेक भ्रमोत्पादक बातों का भरपूर सहारा लिया गया है । अच्छा होता यह लेख 'आज' में ही छपवाया जाता, जिसमें 6 अप्रैल 2003 के अंक में लेखक महोदय का "आधुनिक परिप्रेक्ष्य में धर्मान्तरण का प्रश्न' शीर्षक से आलेख छपा था, ताकि 'आज' के पाठक भी इस अति महत्वपूर्ण (?) लेख से लाभान्वित होते । संभव है, वहां प्रस्तुत लेख छपवाने का प्रयास किया गया हो और इस बार आज वालों ने लेख और लेखक की असलियत से परिचित होकर प्रकाशन से इन्कार कर दिया हो । फिर 'हंस' की छाया में क़दम रखा गया हों । यह तो हंसवाले सज्जन ही बता सकते हैं कि उन्होंने अधकटे लेख को क्यों प्रकाशित किया ? यदि प्रकाशित करके लेखक का हौसला ही बढ़ाना था और भ्रामकता का प्रसार करना था, तो क्यों नहीं आजवाला लेख भी साथ में प्रकाशित किया गया ? ताकि हक़ीक़त और बेनक़ाब होती ।

ये पंक्तियां इसलिए नहीं लिखी जा रही है कि हममें लेखक के प्रति कोई विरोध-भाव है, बल्कि हम तो उन्हें बधाई देते हैं कि उन्होंने अपने, दिल की बातों को जुबान दे दिया । इसके लिए मुहम्मद क़ैसर साहब को भी मुबारकबाद, जिन्होंने लेखक महोदय को उद्वेलित किया । अन्यथा दिल की आवाज़ दिल में ही रहकर बेज़ुबान हो जाती ।

अब आइए देखते हैं कि क्या कुछ लिखते है लेखक महोदय ? सबसे पहले यह बताते चलें कि यह लेख अधिक नहीं सिर्फ़ सामान्य पत्रिका साइज़ में साढ़े चार पृष्ठ में सिमटा हुआ वार्तालाप-शैली का है, जिसमें कम से कम तीस बार 'मुहम्मद क़ैसर' का नामोल्लेख है । वैसे भी यह मुहम्मद क़ैसर के पत्र का जवाब है, जिसके लिए 'हंस' का सहारा लिया गया । लेख का अंदाज़ ऐसा है मानो मुहम्मद क़ैसर लेखक को इस्लाम क़बूल करने के लिए बाध्य कर रहे हों, लेकिन हम यहां जो कुछ लिख रहे हैं उसे लेखक को अन्यथा न लेना चाहिए । यह जो कुछ यहां लिखा जा रहा है वह तो भ्रान्तिपूर्ण लेख से उपजी विडंबनाओं और असंगतियों की ओर ध्यान दिलाने के लिए लिखा जा रहा है, ताकि पाठकों को यथार्थ की जानकारी हो जाए । किसी चीज़ को मानना या इन्कार करना किसी भी व्यक्ति के

Jamaat-e-Islami Social Service Society (Regd), Gaya

The Society is in service in the field of education, health and Islamic Understanding for the last 34 years. Our resources are limited, our task is tremendous. We seek your co-operation in the following activities:-

1. **IQRA PUBLIC SCHOOL :** Besides 800 paying students, about 150 poor or orphan girls & boys are provided free education upto Matriculation with Islamic Carriculam.
2. **MILLAT HOSPITAL :** Every year about 15,000 poor & needy patients are provided with free medical treatment & medicine besides other services.
3. **ISLAMIC INFORMATION CENTRE :** Established at Bodh-Gaya, where lakhs of foreigners visit every year during Nov-March. The Centre provides reading materials on Islam, distributes Islamic literature and invites interested visitors for discussion besides inter-faith dialogue on regular basis.

Kindly send your Cheque/Draft in favour of the society

(Nayyarruzzama)
Chairman

(Prof. Inamul Huque)
Secretary

J I S S S

Millat Campus, Leitch Road, Gaya-823001

स्वविवेक पर निर्भर करता है । इसके लिए किसी को बाध्य नहीं किया जा सकता ।

लेख के महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर चर्चा करने से पूर्व यह निवदेन कर देना उचित प्रतीत होता है कि इससे हमें कुछ नये 'तथ्यों' (?) की जानकारी हुई । इनमें से तीन बातें तो चौंकाने वाली मालूम होती हैं : पहली-दलितों को नास्तिकता की शिक्षा, लेकिन अम्बेडकरवाद का इन्कार, दूसरी-कबीरपंथ की प्रेरणा और तीसरी-दलित धर्म की अवधारणा (जिसका कुछ खुलासा नहीं किया गया) । पूरे लेख में लेखक ने दलितों को धार्मिक मूल्यों को अस्वीकार करने के लिए प्रेरित किया है, लेकिन दलित क्या मानें इसका कोई ब्योरा नहीं दिया गया है, इसलिए लेख का मंतव्य निहित ही रह गया, जो कुछ दिखायी पड़ा वह इस्लामी शिक्षाओं के विरोध तक सीमित रहा । इस स्थिति में यह दुस्साहस डॉ॰ अम्बेडकर की लीक से हटकर हुआ । इस पर तुर्रा यह कि 'इस्लाम पर लिखना एक ख़तरनाक कर्म है, यह जानते हुए भी विश्व-भर में बहुत-से विद्वानों ने इस्लाम पर अपना बेबाक रचना-कर्म किया है । उनके प्रति धर्मान्ध मुसलमानों की हिंसा के बावजूद इस्लाम पर आधुनिक दृष्टि से चिंतन-विश्लेषण जारी है ।'

स्पष्ट है, यहां पर लेखक महोदय सलमान रुश्दी, तसलीमा नसरीन जैसों के बीच खड़ा होने की कोशिश करते हैं । पूरे लेख में न तो कोई आधुनिक चिंतन (शीर्षकानुरूप) है और न बेबाक रचना-कर्म । वही घिसे-पिटे आरोपों का पिटारा है जो इस्लाम विरोधी अपने सिरों पर ले-लेकर ढोते रहते हैं इसे हालत में भी कोई उन्हें ठीक से घास तक नहीं डालता । बस अपना काम निकलवाने के लिए एकाध खर-पतवार डालकर उन्हें तुष्ट करने की कोशिश करता रहता है । यह एक लिहाज़ से उनके लिए काफ़ी भी हो जाता है । तभी वह किसी समाज का स्वयंभू प्रवक्ता और न जाने क्या-क्या बन जाता है ?

लेखक महोदय बार-बार यह कहते नहीं थकते कि दलितों को यह नहीं चाहिए, वह नहीं चाहिए । स्वयंभू तौर पर अपने को कुछ कह देना ठीक नहीं होता । इसके सदैव आत्मघाती परिणाम ही सामने आते हैं । हमारे दलित भाई-बहनें मूढ़ नहीं, बुद्धिमान हैं, उन्हें वरग़लाया नहीं जा सकता ।

इस लेख पर आगे कुछ कहने से पहले यह समीचीन मालूम होता है कि डॉ॰ अम्बेडकर का इस्लाम और मुसलमानों के संबंध में क्या दृष्टिकोण था, इसको संक्षेप में जान लिया जाए, ताकि लेखक के मंतव्य का मर्म समझने में आसानी हो सके और भ्रामकता हट जाए ।

''डॉ॰ अम्बेडकर निश्चय ही इस्लाम के समानता के उसूलों से प्रभावित थे । उन्हें इस बात का दुख था कि भारत में इन उसूलों को हिन्दुत्व निगलकर उन्हें विकृत बना रहा है । इसका उन्होंने कई स्थानों पर उल्लेख किया और इसके लिए अंततः हिन्दुत्व को दोषी ठहराया । डॉ॰ अम्बेडकर ने व्यावहारिक स्तर पर भी इस्लाम की एकता की भावना को सराहा । वे मुसलमानों के बीच सहचार की भावना से अभिभूत लगते थे और धर्मान्तरण के लिए इसको प्राथमिकता देने के पक्षधर थे । जब उन्होंने 1935 ई॰ में येओल में घोषणा की कि वे हिन्दू धर्म का त्याग करेंगे और मृत्यु से पहले एक नया धर्म स्वीकार करेंगे, तब उनके कुछ अनुयायियों ने धर्म-परिवर्तन का फ़ैसला किया और डॉ॰ अम्बेडकर के पास गये । उन्होंने उन्हें इस्लाम धर्म स्वीकार कर लेने का परामर्श दिया । डॉ॰ अम्बेडकर ने अपने मिशन के मुखपत्र 'बहिष्कृत भारत' के 15 मार्च 1929 के अंक में लोगों का आह्वान किया कि यदि वे धर्म परिवर्तन की इच्छा रखते हैं तो इस्लाम धर्म स्वीकार कर लें ।''[2]

डॉ॰ अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म क्यों अपनाया, इसका कारण किसी प्रकार का इस्लाम-विरोध नहीं था । इसके परिस्थितिजन्य कारण थे । इसी प्रकार कुछ मुस्लिम नेताओं से उनकी नाराज़गी का यह अर्थ कदापि नहीं निकाला जा सकता कि वे मुसलमानों के विरोधी थे, जैसा कि कुछ संघ परिवारी दुष्प्रचार कर रहे हैं । डॉ॰ अम्बेडकर ने अपने मुखपत्र में धारावाहिक रूप से कई अंकों (अंक 10 से 18 में) में लेख लिखे, जिनमें इस्लाम की शिक्षाओं की तारीफ़ की थी । ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता जिससे यह कहा जा सके कि वे इस्लाम-विरोधी थे ।

'इस्लाम और आधुनिक दलित चिंतन' शीर्षक जो स्वयं भ्रामक शीर्षक है, इसके लेखक महोदय ने इस्लाम-विरोध से पूरा लेख भर डाला है, लेकिन सप्रमाण कोई बात कहने में वे असमर्थ रहे हैं । संभव है इसके निहितार्थ हों, लेकिन इससे कोई भी झांसे में नहीं आने वाला । एक तो पहले ही से दलित भाई काफ़ी जाग्रत है, दूसरे आशा की जाती है कि प्रस्तुत लेख बची-खुची कमी पूरी कर देगा । दलित-चेतना

का एक उदाहरण श्री एस०एल० सागर के शब्दों में प्रस्तुत है–

''पढ़े-लिखे दलित भी अनभिज्ञता के कारण अथवा शासक वर्ग के द्वारा भ्रष्ट किये जाने के कारण बुद्ध की क्रांति के विरुद्ध प्रति क्रांति के एजेंट बने हुए हैं ।''[3] अफ़सोस की बात यह भी है कि दलित आन्दोलन का एक बड़ा तबक़ा आज समझौते का शिकार होकर उनके माध्यम से 'मुक्ति' पाने का भ्रम पालने लगा है ।

दूसरे शब्दों में यही सब दलितों का 'सवर्ण' बन जाता है । 'हंस' में ऐसा ही तो लेख छपा है, उसमें कहा गया है कि 6 अप्रैल 2003 के अंक में दैनिक 'आज' में जो लेख (शीर्षक 'आधुनिक परिप्रेक्ष्य में धर्मान्तरण का प्रश्न') छपा, उसमें दलित मुक्ति के दृष्टिकोण से इस्लाम पर भी चर्चा है । लिखा गया ''दरअस्ल इस लेख का आधार ही इस्लाम की वह दावत है जो जमाअत इस्लामी के संगठन 'मधुर संदेश संगम' ने दलितों को दी है । इसमें परलोक की बात कही गयी है । मैंने लिखा कि दलित परलोक के सुख के लिए इस्लाम नहीं अपना सकते । उन्हें परलोक में नहीं, लोक में मुक्ति चाहिए ।'' ...लेखक का भ्रम-प्रचार यहीं नहीं ठहरता, बल्कि वह इस्लाम से संबद्ध कर कहता है कि इस्लाम की शिक्षा है : ''स्थायी सुख (पारलौकिक जीवन) को छोड़कर क्षण-भंगुर का यानी अस्थायी (लौकिक) सुख की कामना मत करो । मेरी आपत्ति (लेख में) यह है कि जब संसार क्षण-भंगुर है, तो दलितों के कष्ट भी क्षण-भंगुर हैं । ऐसा दर्शन दलितों का कोई हित नहीं कर सकता ।''

स्पष्ट है, यह इस्लामी शिक्षाओं की मौलिक शक्ल नहीं है और न ही 'शांति और सम्मान' (प्रकाशक : मधुर संदेश संगम, जिसे जमाअत इस्लाम का संगठन बताना त्रुटिपूर्ण है) में इस प्रकार का तथ्य प्रस्तुत किया गया है, बल्कि इस्लाम की उन कल्याणकारी शिक्षाओं के साथ उसकी पारलौकिक धारणा को भी स्पष्ट किया गया है, जिन्हें स्वीकार करके अनगिनत इन्सान अपनी ज़िन्दगियां संवार चुके हैं । इनमें बड़ी संख्या दलित और अन्य पिछड़े वर्ग के भाइयों व बहनों की है । क्या लेखक को इसका ज्ञान नहीं ?

इस्लाम की शिक्षा संसार त्याग की नहीं है । यह कुछ अन्य धर्मों की शिक्षा हो सकती है । इसकी शिक्षा तो लोक-परलोक दोनों को समृद्ध और सफल बनाती है । अल्लाह ने अपने बन्दों को यह दुआ बतायी है, जिसमें लोक-परलोक दोनों जीवनों का महत्व स्पष्ट होता है । पवित्र क़ुरआन में यह दुआ है–

रब्बना आतिना फ़िद्दुनिया हसनतंव्वफ़िल् आख़िरति हसनतंव्व क़िना अज़ाबन्नार । (2:201)

अर्थात, ऐ रब (पालनकर्ता प्रभु)! हमें इस संसार में भी और परलोक में भी सुख-सुविधाएं प्रदान कर एवं हमें नरकाग्नि से सुरक्षित रख ।

इस्लाम की शिक्षा दुआ के साथ-साथ कर्मशील और कर्मठ जीवन व्यतीत करने की भी है न कि हाथ पर हाथ धरे बैठने की, जैसा कि लेखक ने किसी विशेष मानसिकता के कारण लिख डाला है । कृपया इस्लाम को निवृत्तिवादी कहने की धृष्टता मत करें । क्या यह अन्यायपूर्ण नहीं है कि धर्म की शिक्षा को विकृत करके प्रस्तुत किया जाए ? लेखक ने पारलौकिक जीवन संबंधी धारणा के अतिरिक्त अन्य जो आरोप लगाये हैं, वे भी घिसे-पिटे हैं ।

पाठकों की जानकारी के लिए यहां लेखक महोदय के उन विचारों को उद्धृत करना उचित होगा जो उन्होंने पारलौकिक जीवन के संबंध में अंयत्र व्यक्त किये हैं । ''आप क्या बनना पसन्द करेंगे ?'' लेख में वे लिखते हैं, ''प्रश्न यह उठता है कि आप क्या पसन्द करेंगे–स्वर्ग या नरक ? आप झट कह उठेंगे कि स्वर्ग । यह इसलिए कि आपको पहले से मालूम है कि स्वर्ग में सुख मिलता है । किंतु नहीं, केवल यही मालूम होने से आप एकदम स्वर्ग का चयन नहीं कर सकते । पहले आप दोनों के विषय में विस्तार से समझिये कि स्वर्ग का कौन अधिकारी है तथा नरक किसे मिलता है ? फिर उस पर मनन कीजिए ।''[4]

फिर गरुड पुराण के नरक संबंधी एक चित्रण का उल्लेख करके लेखक महोदय इस्लाम की तत्संबंधी शिक्षाएं पवित्र क़ुरआन से उद्धरित करते हैं । वे जिन पांच आयतों का उल्लेख करते हैं उनमें सूरह अस-सजदा की यह आयत (क्रमांक 20) भी है, जिसमें है–

''और वे लोग जिन्होंने अवज्ञा की उनका ठिकाना आग है । जब कभी वे चाहेंगे कि उससे निकल आएं, उसी में लौटा दिये जाएंगे और उनसे कहा जाएगा–चखो, उस आग की यातना का मज़ा जिसे झुठलाते थे ।''

लेखक महोदय आगे इस यथार्थ का उल्लेख इन शब्दों में करते हैं–''देखा आपने यह है वह नरक, जो कुफ़्र करने वालों को मिलेगा । विचारिए उन्हें नरक में किन-किन यातनाओं को भोगना पड़ेगा ।''[5]

आगे 'स्वर्ग' शीर्षक से लेखक महोदय लिखते हैं–''अब आगे स्वर्ग के विषय में जानिए जो ईमान वालों को प्राप्त होगा : (इस विषय में क़ुरआन की जो चार आयतें पेश की गयी हैं, उनमें पहली दो आयत हैं :)

''और जो लोग ईमान ले आये और अनुकूल कर्म किये उन्हें शुभ सूचना दो कि उनके लिए ऐसे बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जब-जब इन बाग़ों में से कोई फल इन्हें खाने को दिया जाएगा तो कहेंगे कि यह तो वही है, जो इससे पहले हमें मिला था और दिये जाएंगे एक-दूसरे से मिलते-जुलते । उनके लिए वहां पाक-साफ़ जोड़े होंगे और वे वहां सदैव रहेंगे ।'' (अल-बक़रा : 25)

''सदैव रहने के बाग़ है, जिनमें वे प्रवेश करेंगे और उनके पूर्वजों और उनकी पत्नियों और उनकी संतानों में से जो नेक होंगे, वे भी (उनके साथ प्रवेश करेंगे) और फ़रिश्ते हर दरवाज़े से उनके पास (बधाई देने) आएंगे ।''

(अर-रअद : 23)

डॉ॰ जगदीश सिंह राठौर अपनी पुस्तक 'दलित युवाओं के परवर्ती दृष्टिकोण' (पृ॰ 12) में श्री नर्मदेश्वर प्रसाद के विचार को उद्धृत करते हुए लिखते हैं–''ब्राह्मणों की वर्णाश्रम-व्यवस्था ने जिन लोगों को समाज से च्युत कर दिया, वे लोग बौद्ध हो गये और आगे चलकर वे सब मुसलमान हो गये, क्योंकि इस्लाम ने उन्हें सामाजिक समता दी और संसार में ऊंचा उठने का अवसर दिया ।''

स्वामी विवेकानन्द कहते हैं–''हिन्दुस्तान में मुसलमानों की जीत ग़रीबों और कमज़ोरों के लिए मुक्ति बनकर आयी । यही कारण है कि हमारे देश का पांचवां भाग मुसलमान हो गया । ...हिन्दुस्तानी मुसलमानों की बहुसंख्या कैसे मुसलमान हुई ? यह कहना पूर्णत: ग़लत है कि वे मुस्लिम समुदाय में ज़बरदस्ती लाये गये । वे ज़मींदारों और पुरोहितों के ज़ुल्म से बचने के लिए मुसलमान हो गये । इसलिए बंगाल के किसानों में मुसलमान हिन्दू से अधिक हैं ।''[6]

इस विशेषांक पर जब मैंने यह विशद समीक्षात्मक टिप्पणी, जिसके बहुत अल्प अंश यहां प्रकाशित किये गये हैं, 'हंस' की सेवा में प्रकाशनार्थ भेजी, तो राजेन्द्र यादव जी ने इसे स्वीकार कर लिया । 'हंस' कार्यालय से मेरे पास पोस्टकार्ड आया कि अगले अंक में इसका प्रकाशन होगा, किन्तु जब अगले अंक में भी इसे प्रकाशित नहीं किया गया, तो मैंने दरियागंज, दिल्ली स्थित 'हंस' कार्यालय फ़ोन किया । मुझे बताया गया कि आपका लेख कंपोज हो चुका है, लेकिन जब अंक की फ़ाइनल कॉपी संपादक महोदय राजेन्द्र यादव जी के पास भेजी गयी, तो उन्होंने इसे पढ़ने के बाद प्रकाशित न करने का निर्णय लिया । इसका कारण क्या था, यह तो वही जानें, लेकिन मेरे लिए यह आश्चर्य और चिंता की बात थी और आज भी है कि जिस रचनाकार ने समाज के उपेक्षित-वंचित वर्ग की लगातार पैरवी की हो, उससे ऐसी चूक कैसे हो गयी ?!

सन्दर्भ

1. इस्लामी सभ्यता : प्रेमचंद, इंडिया टुडे साहित्य वार्षिक 1995, पृ॰ 24-26
2. Ambedkar on Muslims : Anand Teltumbde V AK Publication, Mumbai, p. 25-26
3. अनार्य भारत, हिन्दी साप्ताहिक, 9 दिसम्बर 2002 मैनपुरी (उ॰प्र॰), पृ॰ 2
4. इस्लाम एक मधुर उपहार : इस्लामी साहित्य प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1998, पृ॰ 128
5. वही, पृ॰ 130
6. 'विवेकानन्दरा क्रान्तिकार का विचारागलू' (कन्नड़), पृ॰ 62,63

किताबें

किताबें भी बातें करती हैं
और हमारे दुख-दर्द हरती हैं ।
किताबें हम से बहुत कुछ कहना चाहती हैं
और यह हमारे पास ही रहना चाहती हैं ।
किताबों में कहानियां भी हैं व ज्ञान भी है,
और इन्हें अपने पास रखने में हमारी शान भी है ।
किताबें हमारे अन्दर प्रेम भी भरती हैं
और यह हमें शांत भी करती हैं ।
इन किताबों में ख़ुशियों, ग़मों की बातें भी हैं
और कुछ बीती हुई गर्म-सर्द रातें भी हैं ।
किताबें ऐसी भी जो हमें मार्ग दिखाती हैं
और इन पर आकांक्षा सजायी जाती हैं ।
''लाडी'' यह हमारे बहुत काम आती हैं
और हमें जीवन-सच सिखलाती हैं ।

अमित कुमार लाडी
मुख्य संपादक ''आलराउंड''
डोडां स्ट्रीट, फ़रीदकोट-151203 (पंजाब)

بسم اللہ الرحمن الرحیم

"नेकी यह है कि
अल्लाह की मुहब्बत में
अपना दिलपसन्द माल
रिश्तेदारों और यतीमों पर,
मिस्कीनों और मुसाफ़िरों पर,
मदद के लिए हाथ फैलाने
वालों पर और ग़ुलामों की
रिहाई पर ख़र्च करो ।"

(कुरआन)

Ek Hamdard, Ranchi
(Jharkhand)

कन्या भ्रूण हत्या एवं घटता लिंगानुपात एक गंभीर प्रश्न

❖ डॉ॰ जनक सिंह मीणा
(जयपुर, राज॰)

मानव ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है । लेकिन प्रश्न उठता है कि जब मानव सृष्टि में उत्कृष्ट है तो फिर उसमें भेद, असमानता की व्याप्तता क्यों पनपी ? इसी भेद एवं असमानता ने मनुष्य-मनुष्य के बीच खायी पैदा की और अब सिलसिला शुरू होता है ऊंच-नीच, वर्ग, समुदाय, जाति, लिंग, क्षेत्रीयता, भाषायी आदि भिन्नताओं का । चूंकि यह विषय मानवता से जुड़ा एवं सामाजिक विज्ञानों में चिन्तन का विषय है और समाज से जुड़ा प्रत्येक व्यक्ति सामाजिक वैज्ञानिक एवं चिन्तक है, अत: प्रत्येक सामाजिक प्राणी को मानवीय जीवन से जुड़े इस संवेदनशील एवं महत्वपूर्ण विषय पर चिंतन करने की आवश्यकता है । सभी चिन्तक, विद्वान, पुरोधा, राजनीतिज्ञ, प्रशासक, समाज सेवक एवं गैर-सरकारी संगठन सैद्धांतिक तौर पर महिला एवं पुरुष को समाजरूपी रथ के दो पहियों की संज्ञा देते हैं तथा समाज की उन्नति के लिए दोनों की भूमिका को महत्वपूर्ण मानते हुए एक-दूसरे के पूरक समझते हैं, परन्तु वास्तविकता से मुंह नहीं मोड़ा जा सकता है कि आज भी पुरुष दमनकारी की मानसिकता प्रत्येक स्तर एवं स्थान पर देखी जा सकती है और महिलाओं के साथ आज भी दोयम दर्जे का व्यवहार हो रहा है ।

> **देश के कई समाजों में लड़की के जन्म को ही अपशगुन माना जाता है और या तो उन्हें पैदा ही नहीं होने दिया जाता या पैदा हो भी जाती हैं तो ज़िन्दा या मारकर गाड़ दिया जाता है । कन्या भ्रूण हत्या के लिए कोई यह तर्क दे कि अशिक्षा के कारण ये सब हो रहा है तो यह क़तई मान्य नहीं होगा । इसके लिए न केवल शिक्षित बल्कि उच्च शिक्षित एवं व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त लोग अधिक ज़िम्मेदार हैं । उच्च शिक्षित एवं व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त अधिक बच्चे पैदा नहीं करना चाहते और वे सब कुछ जानते हुए लिंग परीक्षण करवाते हैं और भ्रूण हत्या में भी नहीं सकुचाते हैं ।**

देश में सकल लिंगानुपात की बात की जाए तो यह वर्ष 2001 में 933 था, जो 2011 की जनगणना में 940 हो गया है, परन्तु भविष्य की ओर जो संकेत प्राप्त हो रहे हैं वे नकारात्मक हैं । भारत में 0-6 आयु वर्ग में लिंगानुपात 2001 में 927 था, जो 2011 में घटकर 914 रह गया है । राजस्थान के संदर्भ में बात की जाए तो सकल लिंगानुपात 2001 में 921 था जो 2011 में बढ़कर 926 हो गया । परन्तु 0-6 आयु वर्ग में 2001 में 909 की तुलना में 2011 में 883 रह गया है । राजस्थान में वर्ष 2011 की जनगणना में सर्वाधिक लिंगानुपात डूंगरपुर ज़िले में 990 है जो कि वर्ष 2001 में 1022 था, राजसमंद 988 है, जहां 1000 था, वहीं न्यूनतम लिंगानुपात धौलपुर ज़िले में 845 है । इसी प्रकार 0-6 आयु वर्ग में सर्वाधिक लिंगानुपात प्रतापगढ़ ज़िले में 926 है, जबकि झुंझुनू में न्यूनतम 831 है । अब प्रश्न उठता है कि राज्य में लिंगानुपात कम क्यों हो रहा है ? देश में केरल में ही सर्वाधिक लड़कियां क्यों पैदा हो रही हैं ? अथवा राजस्थान में डूंगरपुर में ही लड़कियां सर्वाधिक क्यों पैदा हो रही हैं, धौलपुर में क्यों नहीं ?

मानव ही मानव का दुश्मन क्यों बनता जा रहा है ? एक

ओर हम विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की दिशा में निरंतर प्रगति करते हुए आगे बढ़ रहे हैं, वहीं दूसरी ओर इस सूचना एवं प्रौद्योगिकी के युग में तकनीकी का नकारात्मक दिशा में प्रयोग कर स्वयं अपनी जड़ें काट रहे हैं । अंग्रेज़ी में कथन है–Science is a good servant but a bad master अर्थात विज्ञान एक अच्छा सेवक है परन्तु एक घातक मालिक ।

विज्ञान के इसी तकनीकी विकास ने लिंगभेद की खायी को और बढ़ाया है तथा प्राकृतिक संतुलन को भी बिगाड़ने में कोई क़सर नहीं छोड़ी है । अल्ट्रासाउंड मशीन हो या इसी प्रकार के अन्य उपकरण यदि विज्ञान के इन उपकरणों का ग़लत दिशा में उपयोग करते रहे तो लड़कियां पैदा होना ही बन्द हो जाएंगी । यह प्रश्न देश की लिंगानुपात के संदर्भ में बात करते हैं तो हरियाणा पर लागू होती है क्योंकि वहां सर्वाधिक अवैध तरीक़े से लिंग परीक्षण होता है और भ्रूण के स्त्रीलिंग होने पर गर्भपात, कन्या भ्रूण हत्या, जन्म के बाद भी हत्या कर दी जाती है क्योंकि हरियाणा में आज भी लड़कियों को हेय दृष्टि से देखा जाता है । खाप पंचायतों द्वारा फ़रमान जारी कर लड़कियों को कलंकित कर दिया जाता है अथवा काला मुंह करके नग्न अवस्था में गधे पर बैठाकर सार्वजनिक रूप से उनकी इज़्ज़त को तार-तार कर दिये जाने की घटनाएं आज भी देखने को मिलती हैं । हालांकि हरियाणा में न्यूनतम लिंगानुपात होने के दुष्परिणाम उनके सामने हैं और शादी-विवाह नहीं हो पाने के कारण दूसरे राज्यों से लड़कियों एवं औरतों को ख़रीद कर गृहस्थ जीवन जीने के लिए लोग मजबूर हो रहे हैं ।

समाज में आज भी धारणा बलवती है कि सामाजिक सुरक्षा एवं वंश, नाम तथा सम्पत्ति के वारिस के लिए लड़का होना आवश्यक है । लड़का या लड़की का निर्धारण तो गुणसूत्रों के मिलन का परिणाम है परन्तु 90 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या में रूढ़िवादिता, धार्मिक मान्यताएं, देवी-देवताओं की इच्छा, टोटके, विभिन्न प्रकार की दवाइयों को लिंग का निर्धारक तत्व मानते हैं । बड़े-बड़े बाबाओं, भोपाओं, श्याणों, घुड्ल्या, पुजारी अपनी निराधार धारणाओं से लोगों को गुमराह एवं ग़लत आश्वासन देते हैं ।

देश के कई समाजों में लड़की के जन्म को ही अपशगुन माना जाता है । या तो उन्हें पैदा ही नहीं होने दिया जाता या पैदा हो भी जाती हैं तो ज़िन्दा या मारकर गाड़ दिया जाता है । कन्या भ्रूण हत्या के लिए कोई यह तर्क दे कि अशिक्षा के कारण ये सब हो रहा है तो यह क़तई मान्य नहीं होगा । इसके लिए न केवल शिक्षित बल्कि उच्च शिक्षित एवं व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त लोग अधिक ज़िम्मेदार हैं । उच्च शिक्षित एवं व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त अधिक बच्चे पैदा नहीं करना चाहते और वे सब कुछ जानते हुए लिंग परीक्षण करवाते हैं और भ्रूण हत्या में भी नहीं सकुचाते हैं ।

राजस्थान के जैसलमेर ज़िले में कन्या भ्रूण हत्या की घटनाएं सबको चौंका देने वाली हैं, वहां के एक गांव में 0-6 आयु वर्ग के लड़कों की संख्या तो सैकड़ों में परन्तु लड़कियां केवल 3 बची हैं । एक ख़बर ने सभी को सोचने को मजबूर कर दिया जिसमें एक डॉक्टर द्वारा अवैध लिंग परिक्षण किया जाता था और कन्या भ्रूण होने पर गर्भपात करवाने पर उस भ्रूण को अपने कुत्तों को खिलाने का मामला सामने आया जिसने मानवता को शर्मसार कर दिया । जिनको हम जीवन रक्षक समझते हैं क्या वे ही ऐसे कुकृत्य कर मानवता के लिए कलंक नहीं हैं ? अब हम बात करते हैं कि क्या इनकी रोकथाम के लिए कोई क़ानून उपलब्ध नहीं है ? जिसके जवाब में उत्तर है क़ानून तो ढ़ेर सारे हैं परन्तु पहली बात क़ानून कोई जादू की छड़ी नहीं है और दूसरी बात क्या हर बात के लिए क़ानून आवश्यक है ? क्या हम सबकी कोई ज़िम्मेदारी नहीं है ? शायद इन प्रश्नों का उत्तर हम खोजें तो समस्याएं अपने आप हल हो जाएंगी ।

भारतीय संविधान में क़ानूनों की भरमार है परन्तु उनकी पालना अथवा क्रियान्विति उस रूप में नहीं हो पाती है जिस रूप में उनका निर्माण होता है । फिर यदि उसकी क्रियान्विति करने की कोशिश भी की जाती है तो कई प्रकार के दबाव, नकारात्मक हस्तक्षेप, घूंस आदि तैयार रहती हैं । समाज में जो नकारात्मक अवधाराणाएं बनी हुई हैं जिनमें लड़के के जन्म को पुत्र रत्न कहा गया है, उसे घर का चिराग़, दीपक, वारिस, मालिक कहा गया है और उसके जन्म पर पार्टी या विशेष समारोह का आयोजन किया जाता है, वहीं लड़की के जन्म को धिक्कार के रूप में लेते हैं, वे आज तो यथार्थ नहीं होनी चाहिए क्योंकि यदि हम इन्दिरा गांधी को लें तो वे जवाहर लाल नेहरू की इकलौती बेटी थी, क्या आज नेहरू जी का वंश नहीं चल रहा है, क्या उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान नहीं बनायी ?

आज छोटे से लेकर बड़े-बड़े ओहदों पर महिलाएं आसीन हुई हैं और सफलता का परचम पहनाकर एक नयी इबारत लिखी है । इसलिए कन्या बचाओ, आगे बढ़ाओ और ख़ूब पढ़ाओ तभी विकास का बिगुल बजेगा ।

जातिगत भेदभाव : सामाजिक अभिशाप या मानवीय त्रासदी

■ अहद 'प्रकाश'

संयुक्त राष्ट्र के विशेषज्ञ समूह की रिपोर्ट के अनुसार दुनिया भर में 26 करोड़ से ज़्यादा लोगों के साथ जातिगत आधार पर भेदभाव किया जाता है, आख़िर क्यों ? दुनिया भर के करोड़ों लोगों के मानव अधिकारों का जिस बेदर्दी और हैवानियत के साथ उल्लंघन होता है, वह समस्त समाज के लिए चिंतनीय और घोर निंदा का विषय है । उक्त निष्कर्ष संयुक्त राष्ट्र द्वारा नियुक्त विशेषज्ञों के एक स्वतंत्र दल द्वारा दिया गया है ।

यह जातिगत भेदभाव एक सामाजिक अभिशाप की शक्ल में हमारे सामने उजागर होता है । दक्षिण एशियाई देशों को इस दल द्वारा यह चेतावनी भी दी गयी है कि वह इस मामले में जागरूक रहें एवं मानवों की रक्षा के लिए क़ानूनों को सख़्त बनाएं ।

बड़ी विडंबना है कि एक ही परिवार में इस तरह की त्रासदियां मिल जाती हैं । सभ्य और पढ़े-लिखे समाज में ऐसे-ऐसे उदाहरण देखने को मिलते हैं जिन्हें देख और सुनकर रूह कांप जाती है ।

भारत, पाकिस्तान और बंगलादेश में भेदभाव की अधिक घटनाएं मिलती हैं । संयुक्त राष्ट्र के विशेषज्ञ समूह ने कहा है कि जाति आधारित भेदभाव की जड़ें बहुत गहरी हैं । इसके पीड़ितों को संरचनात्मक भेदभाव, उपेक्षा और व्यवस्थित बहिष्कार के अलावा अपनी जान से भी हाथ धोना पड़ जाता है । यह मानवाधिकारों का जिस तरह का उल्लंघन है और क्रूर प्रकार की हिंसा है वह सारे समाज के लिए चिंतनीय है ।

दक्षिण एशियाई देशों में अभी भी निचली जाति के लोगों को दलित और अछूत माना जाता है । इन लोगों का आर्थिक और सामाजिक बहिष्कार किया जाता है । यदि उच्च जाति का कोई युवक नीचली जाति की लड़की से शादी कर लेता है तो उस लड़की और उस परिवार को भी समाज में बहिष्कृत करते हुए, समाज द्वारा स्वीकृति नहीं मिल पाती है और यदि लड़का नीचली अथवा दलित जाति से होता है तो उसकी हत्या कर दी जाती है ।

एक ही परिवार में यह दृश्य देखने को मिल जाते हैं । उन लोगों को हाशिये पर रखा जाता है जो निचली जाति से संबंधित होते हैं । इस तरह की जातिगत विसंगतियां क़ानून के कटघरे में न्याय की बाट जोहते हुए दिखायी देती हैं । इस तरह की मानवीय त्रासदियां हमारे समाज के लिए अभिशाप हैं परन्तु अशिक्षा, अज्ञान और झूठी शान-शौकत के चलते आये दिन समाचार पत्रों की सुर्ख़ियां बनती रहती हैं । यह हमारे सामाजिक विघटन की द्योतक हैं । पीने के पानी, शौचालय, साफ़-सफ़ाई, नयी कालोनियों की बसाहट तथा रोज़गार के मामलों में भी भारी भेदभाव देखने को मिल रहा है ।

कौन है कितना बड़ा जानवर
दौड़ है यह इंसानों में
सभ्य लोग होंगे हमसे
चर्चा है हैवानों में
सड़कों पर नंगे हैं लोग
कपड़े सजे दुकानों में
अहद प्रकाश पर टूटा पंछी
छिपता फिरे मकानों में ।

ऐसी विकट स्थिति में आदमी का आदमी के प्रति व्यवहार निस्संदेह सोच का विषय है । यदि इसी तरह जातिगत भेदभाव की घटनाएं समाज में बढ़ती रहेंगी तो हम बेहतर और उजली दुनिया की कल्पना भी नहीं कर पाएंगे । भारत में खाप पंचायतों की गतिविधियां और उनके खुले निर्णय सभ्य समाज के लिए नये सवालों को जन्म देते हैं ।

जातिगत भेदभाव के कारण पूरे समाज में अनेकानेक

विसंगतियां जन्म लेती हैं । हिंसा की बढ़ती घटनाएं, धार्मिक उन्माद, सांप्रदायिक दंगे, जातीय विद्वेष के चलते सामाजिक आक्रोश एवं आर्थिक विपन्नता नित नये सुरों के साथ सामाजिक एवं राष्ट्रीय ताने-बाने को छिन्न-भिन्न कर देते हैं । ऐसे में पीड़ितों को न्याय मिलने की संभावनाएं लगभग शून्य हो जाती हैं । राजनीति और समाज प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से इन जातीय संघर्षों से बुरी तरह प्रभावित होते रहे हैं जिसके चलते भाषाई और सांप्रदायिक असहिष्णुता बढ़ती है । कट्टरपंथी और आतंकी संगठन समाज में व्याप्त निराशा और विक्षोभ को अपने पक्ष में भुनाने में कामयाब हो जाते हैं ।

जातिगत भेदभाव केवल भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका, बर्मा और बंगलादेश की ही समस्या नहीं है बल्कि दक्षिण पूर्व एशिया में भी भीतर ही भीतर ज्वालामुखी की लहरें फैल रही हैं । थाईलैंड से लेकर फ़िलीपींस तक इस समूचे इलाक़े में उग्रवादी संगठन ज़ातीयता के बल पर बहुत तेज़ी से अपना सिर उठा रहे हैं । लगभग 25 करोड़ लोग इससे प्रभावित हो रहे हैं । हाल ही में मलेशिया, इंडोनेशिया, दक्षिणी थाईलैंड और फिलीपींस में जातीय उग्रवाद सक्रिय हो रहा है । यह पूरा क्षेत्र ग़रीबी और ग़ैर-बराबरी जैसी समस्याओं से ग्रस्त है ।

जातिगत भेदभाव से निपटने के लिए सरकारों और समाज की इच्छाशक्ति ही महत्वपूर्ण है । यदि वही नाकारा हो जाती है तो हिंसा और ख़ून-ख़राबा उस क्षेत्र का भविष्य बन जाती है । हिन्दू-मुसलमान, ईसाई-मुसलमान, बौद्ध-मुसलमान, दलित और उच्च वर्ग सभी टकराव और विध्वंस का सहारा लेकर कोई बेहतर समाज की संरचना नहीं कर सकते हैं । किसी भी जाति को सिरे से मिटाया नहीं जा सकता है । नफ़रत का प्रचार-प्रसार, हिंसा और आतंक का साम्राज्य ज़्यादा दिनों तक चलाया नहीं जा सकता है । इसके ख़तरे सर्वविदित हैं । राज्यों की सरकारों और पुलिस बलों को इन्हें समझना होगा । साथ ही जातीय संघर्ष और भेदभाव जहां भी देखा जाए, उसको पूरी तरह से नष्ट करने का प्रयास करना चाहिए अन्यथा हम वैज्ञानिक युग से सीधे पाषण युग की ओर धकेल दिये जाएंगे ।

हरेक शहर में धुआं-धुआं है
हर आदमी आज जल रहा है
तुम अपने साये से डर गए हो
ज़माना करवट बदल रहा है ।

जातीय हिंसा से पूरे समाज को बचाने की ज़िम्मेदारी प्रत्येक उस व्यक्ति की है जो नयी दुनिया को अंधकार, निराशा और डर के साये से निकालना चाहता है । दुनिया भर के इन्सानों को इस ज़रूरी सवाल पर विचार करने की ज़रूरत है जो जातिगत भेदभाव को पूरी दुनिया से मिटाने की थोड़ी-सी भी इच्छा शक्ति अपने अन्दर रखता है । हम इन्सान बनें, मानवीय दर्द को समझने वाले बनें और किसी भी प्रकार की हिंसा का विरोध करें, यह विरोध गांधीवादी तरीक़े से किया जाए । संयुक्त राष्ट्र के विशेषज्ञ समूह की रिपोर्ट पर सभी को विचार करने की ज़रूरत है ।

SHATABDI FOUNDATION, GAYA

- Started Shatabdi Public School in 2001 with primary classes, has now developed into a 10+2 CBSE affiliated educational institution with quality education in modern subjects with moral orientation.
- Presently there are around 1400 students who are provided modern teaching facilities. The Foundation also adopts poor/ orphan students
- Free education is given to poor students of the locality after school time.
- Our immediate needs are—Purchase one more school bus, Construction of Prayer Hall & Purchase of 30 Computers.

(Prof. Z. H. Khan) Chairman

(Prof. M. B. Zaman) Secretary

SHATABDI PUBLIC SCHOOL

Katari Hill Road, Gaya-823001 (Bihar) INDIA

परिवार नियोजन और इस्लाम

■ इस्लामी शरीअत में परिवार नियोजन के विषय में क्या आदेश हैं, विस्तार से बताइए ?

जवाब : इस्लाम प्राकृतिक धर्म है । इसकी प्रत्येक शिक्षा और व्यवस्था प्रकृति के नियमों के अनुकूल है । इस कारण से भी इस्लामी प्रावधान इन्सानों के लिए उपयोगी और कल्याणकारी हैं । अत: यह आवश्यक हो जाता है कि इन्सान प्रकृति के नियमों का पालन करे । ये वे नियम हैं जिन पर सृष्टि की यह सम्पूर्ण व्यवस्था चल रही है । इन्सान के लिए यह अनिवार्य है कि वह ऐसी जीवन-व्यवस्था न अपनाए जो प्रकृति के नियमों के विरुद्ध काम करने पर उसको बाध्य करती हो । अल्लाह के अंतिम पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर उतारी गयी किताब क़ुरआन इन्सानों को बताता है कि अल्लाह ने हर चीज़ को पैदा करके उसके सहज-स्वभाव में इस तरीक़े की शिक्षा भी दी है, जिस पर चलकर वह चीज़ अपने कार्य-क्षेत्र में अपने हिस्से का कार्य भली-भांति करते रहें । क़ुरआन में है–हमारा रब (पालनकर्ता-प्रभु) जिसने हर चीज़ को उसकी आकृति प्रदान की, फिर उसको उन उद्देश्यों को पूरा करने का मार्ग भी बता दिया, जिनके लिए वह पैदा की गयी ।

(क़ुरआन, 20:50)

सृष्टि की सभी चीज़ें निर्विघ्न रूप से उस आदेश का पालन कर रही हैं जो सर्वशक्तिमान ईश्वर ने उनके काम के विषय में दिया है । उसने उनके लिए जो मार्ग निश्चित किया है, उससे विमुख होने की उनमें सामर्थ्य नहीं है, परन्तु इन्सान को यह सामर्थ्य प्रदान की गयी है कि वह इस मार्ग से हट सकता है, उस पर चलने से इन्कार कर सकता है, अपनी बुद्धि और विवेक से ग़लत काम करके प्राकृतिक नियमों के विपरीत दूसरे रास्ते निकाल सकता है और कोशिश करके उस पर चल भी सकता है । लेकिन हर वह रास्ता जिसे इन्सान अल्लाह के बताए हुए रास्ते को छोड़कर अपनी मनोकामनाओं के अनुपालन में बनाता और ग्रहण करता है, टेढ़ा रास्ता है एवं उसका अनुसरण पथभ्रष्टता है । क़ुरआन में है–

"उससे अधिक पथभ्रष्ट और कौन होगा, जिसने ईश्वरीय पथ-प्रदर्शन के बिना अपनी मनोलोलुपताओं का पालन किया ।" (क़ुरआन, 28:50)

यह पथभ्रष्टता प्रत्यक्ष रूप से भले ही अधिक लाभप्रद दिखायी पड़े, परन्तु वास्तव में जो मनुष्य अल्लाह के नियत मार्ग को छोड़ता है और उसकी निश्चित मर्यादाओं को भंग करता है, वह स्वयं अपने ऊपर ज़ुल्म करता है, क्योंकि फलस्वरूप उसका यह ग़लत काम स्वयं उसी के लिए हानिकारक सिद्ध होता है । क़ुरआन में है–"और जिस किसी ने अल्लाह की निश्चित मर्यादाओं का उल्लंघन किया, उसने स्वयं अपने ऊपर ज़ुल्म किया ।" (क़ुरआन, 65:1)

क़ुरआन कहता है कि अल्लाह की बनायी हुई बनावट



को बदलना, और उन प्राकृतिक नियमों को भंग करना, जिन्हें सर्वश्रेष्ठ खुदा ने इस सृष्टि में जारी किया है, वस्तुतः एक शैतानी कर्म है और शैतान ही इस कर्म को सिखाता है । कुरआन में है–"शैतान ने कहा कि मैं मानवजाति (आदम-संतति) को आदेश दूंगा तो वे अल्लाह की बनावट को बदल डालेंगे ।" (कुरआन, 4:119)

और शैतान कौन है ? वह जो आदि काल से मानव का खुला हुआ शत्रु है । कुरआन में है–

"और तुम शैतान का आज्ञापालन न करो, क्योंकि वह तुम्हारा खुला शत्रु है । वह तुमको निकृष्टता एवं निर्लज्जता के कार्यों का आदेश देता है ।" (कुरआन, 2:169)

अतएव इस्लाम ने जिस सिद्धांत पर सभ्यता व संस्कृति तथा अर्थ व समाज की व्यवस्था की नींव रखी है, वह यह है कि मनुष्य व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से अपनी प्रकृति की तमाम अपेक्षाओं को प्राकृतिक नियमों के ठीक अनुसार पूरा करे और अल्लाह की प्रदत्त सम्पूर्ण शक्तियों से उस ढंग पर काम ले, जिसका आदेश स्वयं अल्लाह ने दिया है । किसी शक्ति को अकर्मण्य एवं निरर्थक न बनाए, न किसी शक्ति के प्रयोग में खुदा के दिये हुए आदेशों से विमुख हो जाए और न शैतानी प्रलोभनों एवं प्रेरणाओं से पथभ्रष्ट होकर अपना हित एवं कल्याण उन तरीक़ों में खोजने लगे जो प्रकृति के सीधे मार्ग से हटकर निकलते हैं ।

इस सिद्धांत को दृष्टि में रखकर जब आप इस्लाम पर नज़र डालेंगे, तो आप देखेंगे कि इस्लामी सभ्यता की व्यवस्था ने सिरे से उन कारणों एवं तत्वों का ही उन्मूलन कर दिया है, जिनके कारण मनुष्य अपनी प्रकृति की उस महत्वपूर्ण अपेक्षा अर्थात संतानोत्पत्ति से दूर रहने पर विवश हो जाता है । यह आपको ज्ञात हो चुका है कि मनुष्य को मनुष्य होने की हैसियत से परिवार नियोजन की आवश्यकता कदापि नहीं होती और न उसकी प्राकृतिक बनावट ही इसकी अपेक्षा करती है ।

इन तमाम बातों का सार यह है कि इस्लाम के सामाजिक नियम, उसकी नैतिक शिक्षाएं, आध्यात्मिक प्रशिक्षण ने इन कारणों एवं तत्वों में से प्रत्येक कारण को और प्रत्येक तत्व को मिटा दिया है जो पाश्चात्य संस्कृति एवं सभ्यता में बर्थ कंट्रोल के लिए प्रेरक सिद्ध हुए हैं । अगर मनुष्य मानसिक एवं व्यावहारिक हैसियत से एक सच्चा मुसलमान हो तो न कभी वह बर्थ कंट्रोल की कामना कर सकता है और न उसके जीवन में ऐसी स्थितियां उत्पन्न हो सकती हैं जो उसको प्रकृति के सीधे मार्ग से विमुख होने पर बाध्य कर दें ।

मनुष्य जब परिवार नियोजन जैसा कृत्य करता है, तो उसके जीवन में भी अस्वाभाविकता आ जाती है और उसका कुप्रभाव जीवन की सभी गतिविधियों पर पड़ता है । इस तथ्य से अधिकतर डॉक्टर सहमत हैं कि गर्भ-निषेध के उपायों का शरीर पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता । इसका ख़ामियाज़ा स्त्री को अधिक भुगतना पड़ता है ।

● संपादन प्रभाग

आप कैसी पत्रिका पढ़ना चाहते हैं ?

जी हां !
देश में कमी नहीं है
पत्रिकाओं की–
पर क्यों नहीं ?
ये आपकी प्रिय पत्रिका बन पाती हैं
और स्वस्थ चेतना जगाती हैं–
जी हां !
आ गयी है, वह पत्रिका
जो आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिंब है
जो देती है वास्तविक
जानकारी घटनाक्रमों की–
और बताती है
सांसारिक और पारलौकिक
जीवन संवारने का ।

पढ़िए और पढ़ाइए

कान्ति

स्वस्थ चेतना का वाहक हिन्दी साप्ताहिक अख़बार

मूल्य-प्रति कॉपी 10/-वार्षिक 110-

प्रधान कार्यालय
दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव,
जामिया नगर, नई दिल्ली-110025

इतिहास तोड़कों से सावधान रहें

■ डी॰ एन॰ झा

कभी-कभी राजनेता ऐसी बातें कह देते हैं जिनका कोई ऐतिहासिक आधार नहीं होता । हमारे पास जो ऐतिहासिक साक्ष्य हैं उनसे वो बातें कभी नहीं सिद्ध हो सकतीं । जैसे मोदी ने पटना में अपने भाषण में इतिहास का जो ज़िक्र किया उसमें सारी की सारी बातें ग़लत हैं । उनकी बातों की गंभीर इतिहास में कोई जगह नहीं है । मोदी ने कहा कि चाणक्य का युग स्वर्ण युग था । चाणक्य चंद्रगुप्त मौर्य का बौद्धिक अभिभावक और गुरु ज़रूर था, उसने देश के बड़े हिस्से का एकीकरण किया लेकिन देश का अस्ली एकीकरण अशोक के समय में हुआ । हालांकि अशोक के राज्य में भी सुदूर दक्षिण के राज्य शामिल नहीं थे । एक राष्ट्र के रूप में भारत की परिकल्पना पहले जमाने में थी ही नहीं, न ही मौर्य काल में न ही गुप्त काल में । मुग़ल काल के बाद ब्रिटिश काल ममें इस तरह की भावना आयी । ख़ासतौर पर साम्राज्यवाद के ख़िलाफ़ लड़ाई शुरू होने के बाद यह भावना प्रबल होती गयी । यह कहना ग़लत है कि चंदगुप्त का समय स्वर्णकाल था । उनके समय में कृषि उत्पादों का एक बटा चार हिस्सा कृषि कर के रूप में देना होता था यानी वह एक शोषणकारी राज्य था ।

अकाट्य तथ्य है कि अशोक जब लुंबिनी गये तो उन्होंने स्थानीय लोगों को राहत देने के लिए कर की दर घटा कर एक बटा छह की थी । इससे पता चलता है कि उसके पहले कर की दर इससे ज़्यादा थी । चाणक्य ने अपने अर्थशास्त्र में ज़िक्र किया है कि राजस्व एकत्रित करने के लिए अंधविश्वास वाली चीज़ों का प्रयोग किया जा सकता है । जैसे कि कहीं कोई मूर्ति लगा दी और वहां जो चढ़ावा आये, उसे लेकर राजकोष में डाल दिया जाए । पतंजलि के योग सूत्र से भी इस बात की पुष्टि होती है कि मौर्यों ने ऐसा किया था । चाणक्य के समय को स्वर्णकाल कहना इसलिए भी ग़लत है क्योंकि उस समय सामाजिक एकीकरण नहीं हुआ था । उसके समय तक जाति प्रथा काफ़ी मज़बूत हो चुकी थी ।

अपने अर्थशास्त्र में नये गांव बसाने के संदर्भ में चाणक्य ने लिखा है कि किसी गांव में शूद्रों की आबादी ज़्यादा होना अच्छी बात है क्योंकि उनका शोषण करना आसान है । तो ऐसे में चाणक्य का समय मोदी के लिए स्वर्णकाल हो सकता है लेकिन दूसरे लोगों के लिए नहीं हो सकता है । मोदी ने कहा कि बिहार के लोगों ने सिकंदर को मार भगाया जबकि सिकंदर कभी बिहार गया ही नहीं । अगर इतिहास को गांधी मैदान में बैठकर गढ़ा जाए तभी ऐसी बातें निकल सकती हैं । नशे में इतिहास लिखा जाए तभी ऐसी बातें लिखी जा सकती हैं । जहां तक साक्ष्यों की बात है तो सिकंदर ने सबसे प्रमुख लड़ाई पंजाब में झेलम के किनारे पोरस से लड़ी थी । उसके बाद उसकी सेना वापस चली गयी । पूरब की तरफ़ तो वो कभी बढ़ा ही नहीं ।

इसी तरह एक बार प्रतिभा पाटिल ने कह दिया था कि मुसलमानों के इस देश में आने के बाद उनकी सेनाओं से हिन्दू औरतों को बचाने के लिए पर्दा प्रथा शुरू हुई । हमारे यहां जो संस्कृति या प्राकृत साहित्य है उसमें कई जगह ऐसी चर्चा है जिसमें औरतें पर्दा कर रही हैं । संस्कृत में एक शब्द है अवगुंठन, जिसका अर्थ ही है घूंघट । संस्कृत नाटकों और ऐतिहासिक उपन्यासों में अंत:पुर का ज़िक्र है । अंत:पुर का मतलब है कि आइसोलेशन या आंतरिक स्थान है यानी एक तरह का पर्दा पहले भी था । इसलिए पर्दा प्रथा को मुसलमानों से नहीं जोड़ना चाहिए था । इससे लोगों का दृष्टिकोण सांप्रदायिक हो गया । नेताओं को यदि इतिहास के तथ्यों का प्रयोग करना भी है तो उन्हें गंभीर इतिहासकारों की सलाह लेकर ऐसा करना चाहिए, नहीं तो वो लाखों लोगों को ग़लत इतिहास बताते रहेंगे । ग़रीबी बढ़ती जा रही है । पैसे वालों का धन बढ़ता जा रहा है । साफ़ है कि देश बहुत सुखी या अच्छे रास्ते पर नहीं जा रहा है । मुझे उम्मीद नहीं है कि आने वाले समय में कोई इतिहासकार इस समय को अच्छा युग कहेगा कम से कम फ़िलहाल तो यही लगता है ।

काबा की ऐतिहासिकता

■ मौलाना मुहम्मद मुजीबुद्दीन क़ासिमी

'बैतुल्लाह' ख़ान-ए-काबा को कहा जाता है, जो मक्का में स्थित है । दुनिया के इबादतगाहों में बैतुल्लाह शरीफ़ (अल्लाह का घर) अल्लाह तआला की सबसे प्राचीन और पहली इबादतगाह (उपासना स्थल) है । पवित्र कुरआन में है–

"निस्संदेह सबसे पहली इबादतगाह जो इन्सानों के लिए निर्मित हुई, वह वही है जो मक्का में स्थित है ।"

(कुरआन, 3:96)

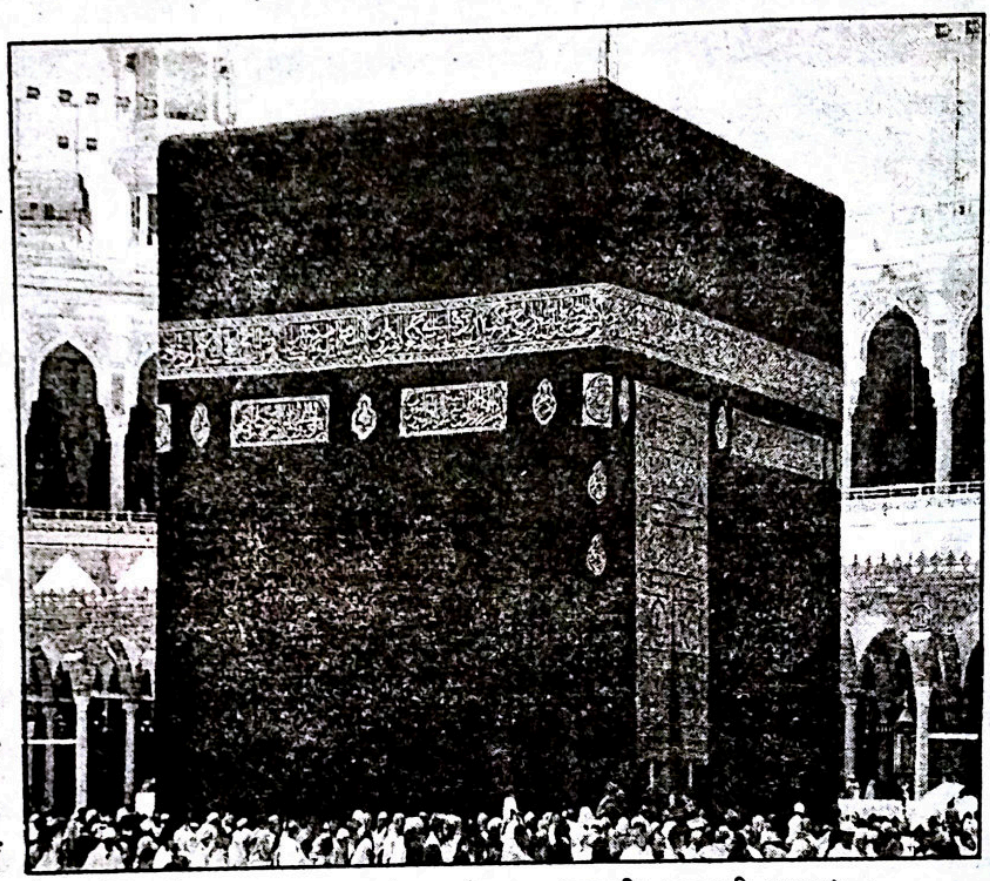

इतिहासकारों ने लिखा है कि ज्ञात सूत्रों के अनुसार अब तक ख़ान-ए-काबा का निर्माण 12 बार हो चुका है, जिनमें से केवल हज़रत इबराहीम (अलैहि०) के निर्माण का वर्णन पवित्र कुरआन में है, शेष निर्माणों का वर्णन या तो हदीस में है या ऐतिहासिक उल्लेखों में मौजूद है, जो इस तरह है–

● ख़ान-ए-काबा का सबसे पहला निर्माण फ़रिश्तों के द्वारा हुआ । यह निर्माण अल्लाह के आदेश से हज़रत आदम (अलैहि०) के जन्म से दो हज़ार वर्ष पहले किया गया (मिरक़ात 5/419)। प्रसिद्ध व्याख्याकार मज़हरी ने एक रिवायत नक़ल फ़रमायी है कि हज़रत अली-बिन-हुसैन (रज़ि०) से उल्लिखित है कि अल्लाह ने अर्श के नीचे एक मकान का निर्माण किया, जिसे बैतुलमामूर (चौथे आसमान पर बनी हुई मस्जिद जो ख़ान-ए-काबा के ठीक ऊपर है) कहते हैं । फिर फ़रिश्तों को आदेश दिया गया कि उसकी परिक्रमा करें । फ़रिश्तों ने उसकी परिक्रमा की । फिर ज़मीनी फ़रिश्तों को आदेश दिया गया कि ज़मीन पर भी इस घर अर्थात बैतुलमामूर की तरह एक घर बनाओ । फ़रिश्तों ने आदेश का पालन करते हुए बैतुल्लाह (ख़ान-ए-काबा) का निर्माण किया और उसकी परिक्रमा की तथा उस मकान का नाम 'ज़ुराह' रखा (तफ़्सीर मज़हरी 2/95) ।

● हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) से उल्लिखित है कि जब हज़रत आदम (अलैहि०) आसमान से ज़मीन पर आये तो फ़रिश्तों का साथ और उनकी पवित्र बातें सुनने को न मिलीं, जिसके क़ारण उनका दिल उदास हो गया । आपने अल्लाह से दुआ की ऐ अल्लाह ! मैं फ़रिश्तों से अलग हो गया हूं, अकेलेपन का एहसास हो रहा है, तो अल्लाह तआला ने आपको आदेश दिया कि आप मक्का जाएं और वहां पर मेरा घर बनाकर उसकी परिक्रमा करें और उसके पास नमाज़ पढ़ें, जिस तरह फ़रिश्ते मेरे अर्श की परिक्रमा करते हैं और नमाज़ पढ़ते हैं । अतः हज़रत जिबरील (अलैहि०) के मार्गदर्शन में हज़रत आदम (अलैहि०) मक्का पहुंचे ।

जिबरील (अलैहि०) ने अपना पर मारकर बैतुल्लाह की बुनियादें ज़ाहिर कर दीं, जो बहुत गहरी थीं । फिर फ़रिश्ते पांच अलग-अलग पहाड़ों से पत्थर लाए और हज़रत आदम

एकेश्वरवाद का केन्द्र

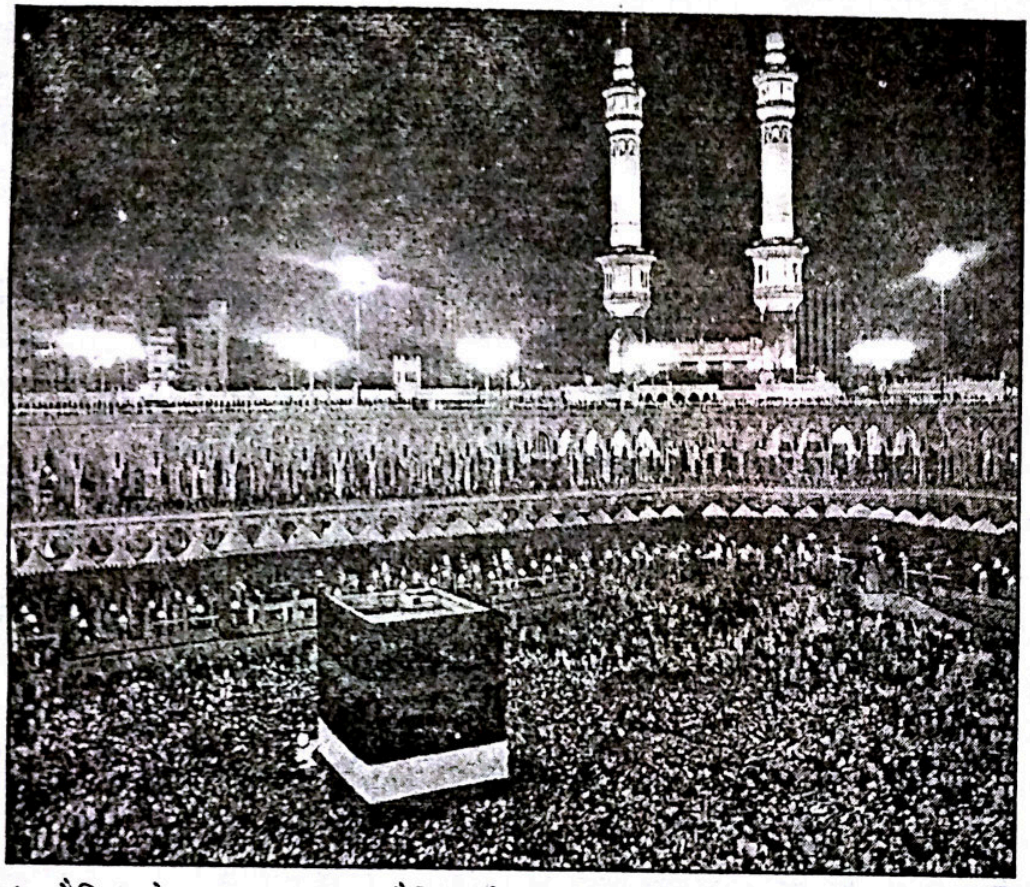

(अलैहि॰) ने हज़रत हव्वा (अलैहि॰) के साथ मिलकर उन पत्थरों से बैतुल्लाह शरीफ़ का निर्माण करने का सौभाग्य प्राप्त किया। हज़रत आदम (अलैहि॰) ने पत्थरों से बुनियादें भर दीं, जब बुनियादें भर गयीं तो अल्लाह ने फ़रिश्तों के द्वारा जन्नत का एक खेमा जो याक़ूत का था, उन बुनियादों पर रखवाया। इस तरह बैतुल्लाह का निर्माण हुआ। फ़रिश्ते जिन पहाड़ों से पत्थर लाए थे उनके नाम इस तरह हैं, जबले लेबनान, जबले तूर, जबले ज़ैता, जबले जूरी और जबले हिरा (इब्ने कसीर, 1/236)। जब बैतुल्लाह का निर्माण पूरा हो गया तो हज़रत आदम (अलैहि॰) को उसकी परिक्रमा करने का आदेश मिला।

● इमाम अज़रक़ी (रह॰) हज़रत वहब बिन मम्बा से रिवायत करते हैं कि याक़ूत का वह खेमा जो हज़रत आदम (अलैहि॰) के लिए जन्नत से उतारा गया था, उसे अल्लाह ने हज़रत आदम (अलैहि॰) के विसाल (मृत्यु) के बाद आसमान पर उठा लिया था। तब उन्हीं बुनियादों पर हज़रत आदम (अलैहि॰) की औलाद (हज़रत शीस अलैहि॰) ने मिट्टी और पत्थरों से बैतुल्लाह का निर्माण किया, जो तूफ़ाने नूह (अलैहि॰) तक स्थापित रहा (अख़बारे मक्का :19)।

● अल्लाह के आदेशानुसार हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) ने अपनी बीवी और नवजात बच्चे को एक मरुस्थल व निर्जन घाटी में छोड़ दिया और कभी-कभी उनकी देख-रेख के लिए मक्का आया करते थे। जब हज़रत इस्माईल (अलैहि॰) जवान हो चुके, तो हज़रत इब्राहीम (अलैहि॰) मक्का आये और अपने होनहार व आज्ञाकारी बेटे से फ़रमाया, "मुझे अल्लाह ने ख़ान-ए-काबा का निर्माण करने का आदेश दिया है, क्या तुम इस काम में मेरा साथ दोगे ? हज़रत इस्माईल (अलैहि॰) ने जवाब दिया कि आप ज़रूर निर्माण कीजिए, ख़िदमत के लिए मैं हाज़िर हूं।"

उस वक़्त बैतुल्लाह शरीफ़ वाली जगह लाल उभरे हुए टीले की रूप में थी, और उसकी बुनियादें दब चुकी थीं। आपकी दुआ की वजह से अल्लाह के आदेशानुसार हज़रत जिबरील (अलैहि॰) ने बुनियादों की निशानदेही फ़रमायी। बाप-बेटे दोनों ने उस जगह की खुदाई शुरू कर दी, यहां तक कि वे प्राचीन बुनियादें ज़ाहिर हो गयीं, जिन पर हज़रत आदम (अलैहि॰) ने बैतुल्लाह का निर्माण किया था। हज़रत इस्माईल (अलैहि॰) पत्थर ला-लाकर हज़रत इब्राहीम (अलैहि॰) को देते और आप काबा का निर्माण करते जाते और साथ ही साथ दुआ करते जाते, जिसको क़ुरआन में यूं बयान किया गया है–

"और याद करो, इब्राहीम और इस्माईल जब इस घर की दीवारें उठा रहे थे, तो दुआ करते जाते थे : 'ऐ हमारे रब, हमसे यह सेवा स्वीकार कर ले, तू सबकी सुनने और

सब कुछ जानने वाला है । ऐ रब, हम दोनों को अपना मुस्लिम (आज्ञाकारी) बना, हमारी संतति से एक ऐसी क़ौम उठा, जो तेरी मुस्लिम (आज्ञाकारी) हो, हमें अपनी उपासना के तरीक़े बता और हमारी कोताहियों को माफ़ कर तू बड़ा माफ़ करने वाला और दयावान है ।'' (कुरआन, 2:127,128)

जब बैतुल्लाह शरीफ़ की दीवारें ऊंची होकर उस स्थान तक पहुंच गयीं, जहां हजरे असवद लगा हुआ है, तो जिबरील (अलैहि०) की निशानदेही पर हज़रत इबराहीम (अलैहि०) को दो पत्थर जबले अबी क़बीस के छोटे से पहाड़ से मिले, उनमें से एक 'हजरे असवद' और दूसरा 'मक़ामे इबराहीम' के नाम से प्रसिद्ध है (इब्ने कसीर, जिल्द अव्वल)। हज़रत इबराहीम (अलैहि०) के इस निर्माण में बैतुल्लाह शरीफ़ की छत न थी ।

● क़बीला बनू जरहम जो आरम्भिक काल में बैतुल्लाह की तरफ़ आबाद हुआ और उसी क़बीले के सरदार मज़ाज़ बिन अम्र की लड़की से हज़रत इस्माईल (अलैहि०) का निकाह हुआ । हज़रत इबराहीम (अलैहि०) और हज़रत इस्माईल (अलैहि०) के द्वारा निर्मित ख़ान-ए-काबा बीते ज़माना और बारिश की वजह से जर्जर व जीर्ण-शीर्ण हो गया था, इसीलिए बनू जरहम ने इसका निर्माण किया ।

● बनू जरहम के बाद बैतुल्लाह शरीफ़ के निर्माण का सौभाग्य क़ौमे अमालिका को प्राप्त हुआ । इन दोनों निर्माणों के सिलसिले में अल्लामा आलूसी (रह०) ने इस क्रम के विपरीत पहला निर्माण अमालिका, फ़िर दूसरे निर्माण में बनू जरहम का ज़िक्र किया है (रूहुलमाफ़ी 3/9) । हज़रत अली (रज़ि०) से उल्लिखित है कि हज़रत इबराहीम (अलैहि०) के द्वारा निर्मित ख़ान-ए-काबा जब धराशायी हो गया, तो फिर बनू जरहम ने उसको नये सिरे से निर्माण किया और जब बनू जरहम का निर्माण भी धराशायी हो गया तो क़ौमे अमालिका ने उसे बनाया । (ऐलामुलऐलाम : 24)

● क़ुसई बिन किलाब अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के पूर्वजों में से हैं । आपने बहुत-से नुमाया काम किये, उन्हीं में से एक नुमाया काम है बैतुल्लाह शरीफ़ का निर्माण भी है । क़ुरैश में आप पहले व्यक्ति हैं, जिनको बैतुल्लाह शरीफ़ के निर्माण का सौभाग्य प्राप्त हुआ । आपने क़ुरैश को बैतुल्लाह के निर्माण के लिए कहा । अत: क़ुरैश ने इसके लिए उचित धन की व्यवस्था की और बैतुल्लाह की जीर्ण-शीर्ण इमारत को गिराकर उसे नये सिरे से निर्मित किया । इस निर्माण की विशेषता यह थी कि पहली बार ख़ान-ए-काबा पर छत डाली गयी, क्योंकि अब तक काबा पर छत नहीं हुआ करती थी । इस निर्माण में खजूर के पत्तों और टहनियों से छत डाली गयी (तारीखुल क़वीम, 3/129)।

● इमाम ज़हरी की रिवायत के अनुसार एक औरत बाख़ूर से धूनी दे रही थी कि अचानक उसकी एक चिंगारी काबा के गिलाफ़ में लग गयी, जिसके कारण काबा का गिलाफ़ जल गया और आग की वजह से बैतुल्लाह शरीफ़ की दीवारों में दरारें पड़ गयीं (फ़तहुलबारी, 3/345) ।

इसके अलावा काबा के तटीय क्षेत्र में होने की वजह से बारिश का पानी उसके इर्द-गिर्द जमा हो जाया करता था, जिसके कारण उसकी दीवारें जीर्ण-शीर्ण होती जा रही थीं । इस वजह से क़ुरैश ने बैतुल्लाह का नये सिरे से निर्माण करने का फ़ैसला किया । अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के पिता हज़रत अब्दुल्लाह के मामू अबू वह्ब मख़्ज़ूमी ने क़ुरैश की सभा में यह प्रस्ताव पेश किया कि इस निर्माण में केवल हलाल (वैध) पैसा लगाया जाए । अत: अबू वह्ब मख़्ज़ूमी की इस हिदायत पर बहुत सख़्ती से अमल किया गया और केवल पाकीज़ा व हलाल कमाई ही इस निर्माण में लगायी गयी । इस निर्माण में क़ुरैश के अधिकतर क़बीलों ने शिरकत की, मगर हजरे असवद को स्थापित करने के समय हालात बिगड़ गये और नौबत ख़ून-ख़राबे तक पहुंच गयी । हर क़बीले के सरदार की इच्छा थी कि हजरे असवद को स्थापित करने का सौभाग्य उसे प्राप्त हो, मगर यह समस्या हल नहीं हो पा रही थी ।

अंतत: क़ुरैश के सबसे ज़्यादा उम्र दराज़ बुज़ुर्ग अबू उमैया बिन मुग़ीरा ने यह राय पेश की कि कल सुबह जो सबसे पहले हरम (ख़ान-ए-काबा) में दाख़िल हो उसे अपना सरपंच बना लिया जाए और वह जो निर्णय करे हम सब उसको स्वीकार करें । सबने इस राय को मान लिया । अत: अगले दिन ख़ान-ए-काबा में सबसे पहले अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) दाख़िल हुए ।

आपको देखकर सब लोगों ने ख़ुशी से झूमकर कहा कि हम इन सादिक़ और अमीन के फ़ैसले से राज़ी हैं । आपने

निहायत हिकमते अमली से इस विवाद का निर्णय किया कि एक चादर मंगवा कर उसमें हजरे असवद को रखा और कुरैश के एक-एक सरदार को बुलाकर उनसे चादर उठाने को कहा । जब चादर हजरे असवद सहित उस स्थान तक पहुंच गयी, तो आपने अपने मुबारक हाथ से हजरे असवद को अपनी जगह पर रख दिया (सीरतुल मुस्तफ़ा, 1/116)।

● कुरैश के निर्माण को अभी एक सदी भी नहीं गुज़री थी कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि॰) ने बैतुल्लाह शरीफ़ का नये सिरे से निर्माण करने का इरादा किया । इसकी अस्ल वजह यह थी कि कुरैश का निर्माण हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) के निर्माण से अलग ढंग से था और अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) की तमन्ना थी कि बैतुल्लाह का निर्माण हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) के निर्माण के तर्ज पर हो, मगर हालात की नज़ाकत की वजह से आप (सल्ल॰) अपने जीवन काल में इस नेक काम को न कर सके । हज़रत आइशा (रज़ि॰) से उल्लिखित है कि आप (सल्ल॰) ने इरशाद फ़रमाया, "आइशा ! तुम्हारी क़ौम का ज़माना अज्ञानपूर्णता से क़रीब न होता, तो मैं बैतुल्लाह शरीफ़ को धराशायी करने का आदेश देता और जिन चीज़ों को कुरैश ने बैतुल्लाह से अलग कर दिया है मैं उसे दोबारा उसमें सम्मिलित कर देता और बैतुल्लाह के दरवाज़े को ज़मीन के बराबर कर देता और उसके दो दरवाज़े बनाता" (बुख़ारी, 1/215)।

अंततः हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि॰) ने आप (सल्ल॰) के इच्छानुसार बैतुल्लाह के निर्माण का इरादा किया और पन्द्रह जमादिस्सानी 64 हिजरी शनिवार के दिन बैतुल्लाह शरीफ़ की दीवारें गिराने का काम शुरू हुआ । इस दौरान बैतुल्लाह के चारों कोनों पर लकड़ियां लगाकर ऊपर परदा लगा दिया गया, ताकि नमाज़ व परिक्रमा में परेशानी न हो । इस तरह बैतुल्लाह का निर्माण पूरा हुआ, (तारीख़े काबा, पृ॰ 127)।

● हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि॰) के निर्माण को क़रीब दस वर्ष हो चुके थे । आपकी शहादत के बाद शासन की बागडोर हिजाज बिन यूसुफ़ के हाथ आयी । उसने ख़लीफ़ा अब्दुल मलिक बिन मर्वान को लिखा कि हज़रत ज़ुबैर (रज़ि॰) ने बैतुल्लाह को कुरैश के निर्माण से अलग कर दिया है । ख़लीफ़ा ने आदेश दिया कि बैतुल्लाह शरीफ़ को कुरैश के निर्माण के अनुसार कर दिया जाए । अतः हिजाज बिन यूसुफ़ ने काबा की पश्चिमी दीवार को गिराकर अलग कर दिया और उस तरफ़ एक परनाला लगा दिया । पूर्वी दरवाज़ा क़देआदम के बराबर ऊंचा कर दिया और पश्चिमी दरवाज़ा बन्द कर दिया (तारीख़े काबा, पृ॰ 129)।

उसी दौरान ख़लीफ़ा अब्दुल मलिक के लड़के वलीद ने ख़ालिद बिन अब्दुल्लाह अल क़सरी को 36 हज़ार दीनार दिये और आदेश दिया कि इनकी प्लेटें बनाकर बैतुल्लाह शरीफ़ के दरवाज़े और मीज़ाते रहमत के ऊपर चढ़ा दें और बैतुल्लाह के अन्दर जो लकड़ी के खंभे हैं, उन पर भी सोने का काम किया जाए । इस तरह बैतुल्लाह का निर्माण दोबारा कुरैश के अनुसार हो गया ।

● हिजाज बिन यूसुफ़ के निर्माण के क़रीब एक हज़ार वर्ष बाद मक्का में भीषण बारिश व ओला गिरा, जिसके कारण बैतुल्लाह के चारों ओर बाढ़ जैसी स्थिति हो गयी । पानी के जमा होने की वजह से बैतुल्लाह की दीवारें टूटकर गिरने लगीं, जिसके कारण बैतुल्लाह की इमारत को काफ़ी नुक़्सान हो गया । इस संगीन सूरतेहाल को देखकर सुल्तान मुराद ख़ान ने दो जमादिअव्वल 1040 हिजरी को ख़ान-ए-काबा के निर्माण का काम शुरू करवाया और क़रीब साढ़े छह महीने की अवधि में ख़ान-ए-काबा का निर्माण पूरा हुआ । विदित रहे कि सुल्तान मुराद ख़ान ने यह निर्माण हिजाज बिन यूसुफ़ के निर्माण के ऐन मुताबिक़ करवाया ।

(तारीख़े काबा, पृ॰ 130)

● सुल्तान मुराद ख़ान के निर्माण के पौने चार सौ वर्ष बाद तत्कालीन ख़ादिमुल हरमैन अल-शरीफ़ैन शाह फ़हद बिन अब्दुल अज़ीज़ ने ख़ान-ए-काबा के निर्माण का आदेश दिया । अतः मुहर्रमुलहराम 1417 हिजरी में काबा के नवीनीकरण का काम शुरू हुआ । इस नवीनीकरण में काबा की ऊपरी दीवारों को मज़बूत किया गया । काबा की दीवारों से लगे हुए ज़मीनी भागों की भी मरम्मत की गयी और पत्थरों के बीच से पुराना मसाला निकालकर नया सीमेंट भरा गया और दोनों छतों का नये सिरे से निर्माण किया गया तथा आंतरिक स्तंभों को नयी लकड़ी से बनाया गया, क़रीब 6 महीने में यह सारा काम पूर्ण हुआ । (साक़ी कौसर, पृ॰ 49)

क्या हरम का तोहफ़ा ज़मज़म के सिवा कुछ भी नहीं ?

■ मुफ़्ती मुहम्मद मुजीबुर्रहमान

सद्कर्म करने का ईशयोग प्राप्त होना अल्लाह की ओर से बन्दों पर अनुग्रह है । यह इतना महत्वपूर्ण उदारदान है कि इस पर जितना भी आभार प्रकट किया जाए, वह कम है । यदि सद्कर्म में हज करने का सौभाग्य प्राप्त हो जाए तो यह अल्लाह का बहुत बड़ा एहसान है । अल्लाह की निशानियों की ज़ियारत और पवित्र स्थानों की आध्यात्मिकता, बरकतों और भलाई से लाभान्वित होना बहुत ही शुभ और सौभाग्य की बात है । हज के सिलसिले में आप (सल्ल०) का कथन है–"जिसने अल्लाह के लिए हज किया और उसमें गुनाहों से महफ़ूज़ रहा, वह नवजात शिशु की तरह गुनाहों से पाक व साफ़ होकर लौटा ।" (मिश्कात : 221)

कुछ कर्मों के करने पर कुछ शुभसूचनाएं व बशारतें एवं किसी कर्म के करने पर कई फ़ज़ीलतें इस्लामी शरीअत में आयी हैं, लेकिन बहुत ही कम कर्म ऐसे हैं, जिनके सिलसिले में यह फ़ज़ीलत आयी है कि इस कर्म के द्वारा उसके पिछले सारे गुनाह, जो अल्लाह के हक़ के अन्तर्गत हों, माफ़ हो जाते हैं । इन्हीं कर्मों में से एक सुकर्म हज है । इस सिलसिले में आप (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया–

"हज हाजी के पिछले गुनाहों को मिटा देता है । हाजी ने असंख्य कठिनाइयों व परेशानियों को सहन करके हज जैसे पवित्र कर्तव्य को अंजाम दिया, उसके बदले (प्रतिकार) का वर्णन करते हुए आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : अल्लाह की स्वीकृत हज का बदला तो जन्नत ही है ।"

(मिश्कात : 221)

एक और हदीस में आप (सल्ल०) ने हज के सिलसिले में फ़रमाया–

"जो व्यक्ति ज़ादे राह (पाथेय) और ऐसी सवारी का मालिक हो, जो बैतुल्लाह तक पहुंचा दे, इसके बावजूद वह हज की सआदत से लाभांवित न हो, उसका कोई भरोसा नहीं कि वह यहूदी होकर मरे या नसरानी ।"

(मिश्कात : 222)

एहराम की हालत पर अगर इन्सान ग़ौर करे तो अच्छी तरह महसूस होता है कि यह अल्लाह के प्रति प्रेम व आसक्ति पर फ़िदा होने का मनोरम दृश्य है । यह भावना व्यक्ति के शेष जीवन में बनी रहनी चाहिए । अल्लाह के घर (काबा) में हर समय लोग इबादत में व्यस्त रहते हैं । सुकर्मों की बहुलता होती है । इबादतों में बहुत लगन और तन्मयता होती है । मुझ में भी हज के अनुष्ठान करने का शौक़ व लगाव पैदा हुआ । वहां रहते हुए हज के अनुष्ठानों की अंजामदेही कोई कठिन काम न था । वास्तव में यह उस रूहानी (आध्यात्मिक) कैफ़ियत का फल था, जो हमें उन स्थानों से प्राप्त हुआ था ।

यह रूहानी सुरूर व सुकून जो हमें प्राप्त हुआ है, अब उसकी सुरक्षा की बात है, और उस रूहानी कैफ़ियत में सुकर्मों व अनुष्ठानों में लगन के द्वारा वृद्धि वांछित है । हरम का क्षेत्र जो सुकर्मियों का अभीष्ठ स्थान है । हर सुकर्मी व सदाचारी का कम से कम दिली व आत्मिक संबंध इस क्षेत्र से ज़रूर होता है । इन सदाचारियों के साथ वहां की जो मुलाक़ातें थीं, वहां के दर्सों (धार्मिक प्रवचनों) में जो हाज़िरी थी वह बदस्तूर बाक़ी रहनी चाहिए इसका मैंने संकल्प लिया ।

प्राचीनकाल में बैतुल्लाह का सफ़र बहुत ही कठिन था, लेकिन इस प्रगतिशील दौर में जबकि दुनिया वैश्विक गांव में परिवर्तित होती जा रही है, हज के सिलसिले में बहुत-सी आसान सुविधाएं हो गयी हैं, लेकिन थोड़ा-बहुत अब भी हाजी कई समस्याओं और परेशानियों से दो-चार होते रहते

हैं । जिन कष्टों को हमने हज जैसे अहम रुक्न की अदायगी के लिए सहन किया है, जिस कर्तव्य को पूरा करने के लिए हमने अथक प्रयास किया है, जब हम उससे निवृत्त हुए, तो उससे प्राप्त सदुपदेशों एवं अनुप्रेरणाओं को भी सामने रखें ।

यहां सफ़ा पहाड़ियों से मानो हाजियों को आवाज़ दे रही है कि ऐ हाजियो ! तुम केवल ज़मज़म के पानी पर संतोष न करो, तुम खजूर की लज़्ज़त में गुम न हो । तुम इस यात्रा को अन्य यात्राओं की तरह न समझो, बल्कि तुम हमारी उन क़ुर्बानियों को याद करो, जो इस पवित्र स्थान तक पहुंचने के लिए अंजाम दिये गये हैं । आज तुम इतनी सुविधाओं के साथ इस पवित्र घर में नमाज़ अदा कर रहे हो...क्या तुम भूल गये कि इसके लिए तुम्हें कितने ही कठिन मंज़िलों से गुज़रना पड़ा ? अगर तुम्हें याद हो तो उन मुश्किलों और त्यागों को भी अपने मन में बसा ले जाना और सत्य धर्म के लिए बेताब लोगों को इससे संतृप्त करना । अगर हाजी इस सोच व फ़िक्र को वहां से न लाए, जो फ़िक्र वहां से चली थी, जो तड़प वहां से उठी थी, जो महक वहां से फैली थी, तो याद रहे कि हम एक मुख्य उद्देश्य से ख़ाली हाथ ही रहे ।

हम उस पवित्र स्थान पर पहुंचे, जहां से हक़ और सत्य के ध्वजावाहक उठे, जिन्होंने भटकी हुई इन्सानियत के सुधार के लिए अपना जीवन लगा दिया, जहां से ऐसे विद्वान व वफ़ादारों ने जन्म लिया, जिन्होंने क़ुरआनी आयतों के सामने सिर झुका दिया, जो ऐसे कि इस्लाम के लिए सिर-धड़ की बाज़ी लगाने के लिए हर समय तैयार रहते और धर्म के मार्ग में आने वाली परेशानियों व कष्टों को सहन कर लेना उनके लिए कोई कठिन न था, जिन्हें अपनी ज़िन्दगी से अधिक दीने मुहम्मदी की फ़िक्र थी । हज के सफ़र से उनकी ज़िन्दगियों के उन गोशों पर भी नज़र होनी चाहिए और हमें इस बात की प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि शेष जीवन हम उन प्रतिभावान व श्रेष्ठ जनों की अभिलाषा व आरज़ुओं को अपनी आरज़ू बनाकर गुज़ारेंगे, उनकी सोच व फ़िक्र को अपनी सोच व फ़िक्र बनाएंगे ।

हज से वापसी पर हर आदमी अपने स्वजन और रिश्तेदार से तोहफ़े व उपहार का अभिलाषी हुआ करता है । किसी को केवल खजूर व ज़मज़म के पानी के द्वारा संतुष्ट किया जाता है, तो किसी को अन्य विशेष उपहारों के द्वारा । वास्तव में हाजी हरम शरीफ़ का सही अर्थों में कोई उपहार पेश कर सकता है, तो वह हाजी की बदली हुई और सुधरी हुई ज़िन्दगी है । हाजी अपने क्षेत्र के लोगों के लिए अपने अच्छे कर्मों से स्वच्छ व पवित्र जीवन उपहार के रूप में पेश करे ।

अगर हाजी ईमानी क़ुव्वत और अमली ज़िन्दगी से सुसज्जित होकर अपने क्षेत्र में आता है, तो इलाक़े वालों के लिए रहमत है । लोग यह महसूस करें कि हज से वापसी के बाद यह व्यक्ति हरम हज से पहले फ़लां बिन फ़लां था, लेकिन हज करने के बाद लोगों की निगाहों में उसके व्यक्तित्व का महत्व बहुत बढ़ गया है । यह सामान्य व्यक्ति नहीं रह गया, बल्कि उसके आचरण में बुलंदी आ गयी है । अत: अब उसके मामलात में लोगों की निगाहें उस पर टिकेंगी । अब उनके हर काम का लोग जायज़ा लेंगे । उनके मस्जिद के हालात से लेकर बाज़ार आने-जाने तक के मामलात लेन-देन में लोग उन्हें जांचेंगे-परखेंगे । उनके वक्तव्य को क्षेत्र में प्रमाण की हैसियत मिल जाएगी । अक्सर मुक़दमे के निर्णय के रूप में उन्हें बुलाया जाएगा । अगर हाजी अच्छी सोच व फ़िक्र के साथ आया है और उसी पर स्थिर है, तो समझ लीजिए कि अल्लाह तआला ने उसे मक़बूले हज की दौलत से सरफ़राज़ फ़रमाया, वरना अरफ़ात की तौबा व गिड़गिड़ाहट के बावजूद पिछले बेअमली व बदअमली पर बदस्तूर क़ायम रहा, तो हज से उसे कुछ हाथ न आया ।

आधुनिककाल में असंख्य लोग सफ़रे हज से लाभांवित होते हैं । इसके बावजूद उनके जीवन में कोई विशेष परिवर्तन दिखायी नहीं देता । केवल कुछ दिनों तक पाबन्दी, फिर इसके बाद पुरानी ज़िन्दगी वाला रवैया । न ही दाढ़ी बदली और न ही लिबास और न उन्हें अपने व्यक्तित्व की कोई पहचान ही हुई । इसके बावजूद हज से वापसी पर उन्होंने ज़मज़म का पानी और खजूर का तोहफ़ा पेश किया, मगर मूल व वास्तविक उद्देश्य का तोहफ़ा पेश करने से असमर्थ रहे । इसी को मशहूर शायर अल्लामा इक़बाल ने इस तरह कहा–

"जायरीने काबा से 'इक़बाल' ये पूछे कोई ।
क्या हरम का तोहफ़ा ज़मज़म के सिवा कुछ भी नहीं ।।"

خطبات

مولانا سید ابوالاعلیٰ مودودیؒ

موجودہ عہد کے لسانی وفکری مزاج کو سامنے رکھتے ہوئے اسلام کے بنیادی ارکان کی اہمیت وضرورت پر دل نشیں اور آسان انداز میں یقین آفریں کتاب۔

اردو

اول	[حقیقتِ ایمان]	16.00
دوم	[حقیقتِ اسلام]	16.00
سوم	[حقیقتِ صوم وصلوٰۃ]	22.00
چہارم	[حقیقتِ زکوٰۃ]	18.00
پنجم	[حقیقتِ حج وجہاد]	24.00
خطبات مکمل		125.00 [HB] 100.00 [PB]

ہندی

اول	[ایمان کی حقیقت]	19.00
دوم	[اسلام کی حقیقت]	18.00
سوم	[نماز، روزہ کی حقیقت]	23.00
چہارم	[زکوٰۃ کی حقیقت]	18.00
پنجم	[حج کی حقیقت]	17.00
خطبات مکمل		95.00

انگریزی

28.00	Fundamentals of Islam - I
30.00	Fundamentals of Islam - II
28.00	Fundamentals of Islam - III
26.00	Fundamentals of Islam - IV
30.00	Fundamentals of Islam - V
130.00 PB 160.00HB	Fundamentals of Islam

MARKAZI MAKTABA ISLAMI PUBLISHERS New Delhi ★ مرکزی مکتبہ اسلامی پبلشرز ★

مرکزی مکتبہ اسلامی پبلشرز، نئی دہلی ۲۵

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025

Phone: 26971652, 26954341, 26946447(D) Fax: 26947858

E-mail: mmipublishers@gmail.com • **Website:** www.mmipublishers.net

मुद्राराक्षस का इतिहास (?) बोध

❖ डॉ॰ रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर'
(फ़िरोज़ाबाद, उ॰प्र॰)

श्री मुद्राराक्षस जी ने अपने आलेख में बजरंग दल के जिस नेता के भाषण का उल्लेख किया है, वह निश्चित रूप से निंदनीय है परन्तु उन्होंने नेता के नाम और स्थान का भी उल्लेख कर दिया होता तो बात अधिक प्रमाणिक हो जाती। परन्तु उसका सहारा लेकर उन्होंने इतिहास के साथ जो खिलवाड़ किया है, वह प्रशंसनीय तो नहीं ही कहा जा सकता।

वस्तुतः वे उस महान विद्वत्समूह के सदस्य हैं जो इतिहास 'गढ़ते' नहीं, अपितु 'गढ़ते' हैं। ये लोग भारतीय समाज को एक शिशु मानते हैं जिसे इतिहास को उसके यथातथ्य रूप में स्वीकार करने की अक़्ल आयी ही नहीं हैं। वे इतिहास को विकृत करने का कोई भी अवसर हाथ से नहीं जाने देते। अब मुद्राराक्षस द्वारा प्रस्तुत ऐतिहासिक (?) तथ्यों पर दृष्टिपात करें–

1. बोधिवृक्ष को कटवा कर जलवाने वाला उन्होंने शशांक को बताया है। शशांक बंगाल का शासक था। वह प्रतापी शासक बताया गया है। उसके वंश का निश्चित पता नहीं, कुछ लोग उसे गुप्त वंश का बताते हैं ? उसके सिक्कों से स्पष्ट है कि वह शिव का उपासक था, किन्तु चीनी यात्री ह्युए एनत्सांग द्वारा वर्णित उसके बौद्ध धर्म से विद्वेष और बौद्धों पर अत्याचार की कहानियां अतिरंजित हैं, उनमें सत्यांश नहीं लगता'' (र०च० मजूमदार कृत 'हिस्ट्री ऑफ बंगाल, प्रथम भाग' व भारतीय इतिहास कोश-सच्चिदानन्द भट्टाचार्य)।

2. संस्कृत काव्यशास्त्री पंडित राम जगन्नाथ को मुद्राराक्षस जी औरंगज़ेब का दरबारी बताते हैं जबकि पंडितराज केवल 1658 तक मुग़ल दरबार में रहे, वे शाहजहां के राज दरबारी थे। शाहजहां के दरबार में रहते हुए उन्हें एक अन्य राजा का निमंत्रण प्राप्त हुआ। इस पर उन्होंने उसे लिख भेजा–

'दिल्लीश्वरों' वा जगदीश्वरो वा मनोरथान पूरपितु समर्थः।
अन्यैर्न्टवालै परिदीषमानं शाकाय वा स्थाल्लवणयवा स्यात ।।

(या तो दिल्ली के स्वामी अथवा जगत के स्वामी ही मेरे मनीरथी को पूर्ण करने में समर्थ हैं अन्य राजा जो कुछ देते हैं उससे तो केवल साग-सब्ज़ियों या नमक की ही पूर्ति हो सकती है)।

शाहजहां के शासनकाल में दारा ने अनेक संस्कृत विद्वानों को आश्रय दिया था। अनेक संस्कृत ग्रंथों का फ़ारसी व फ़ारसी ग्रंथों का संस्कृत व हिन्दी में अनुवाद कराया था। वह साम्प्रदायिक सौहार्द का स्वर्णकाल था। 1659 में औरंगज़ेब के शासनधीन होते ही पंडित राज ने मुग़ल दरबार छोड़ दिया था, छोड़ने पर उन्हें विवश किया गया। वे असम के राजा प्राण नारायण के दरबार में चले गये। वहां रहकर 'प्राणामरण' नामक ग्रंथ की रचना की। जीवन की संध्या में वे बनारस आ गये और वहीं गंगा तट पर प्राण विसर्जन किया। उनके द्वारा सृजित ग्रन्थों में 'आसिफ़ विलास' भी है जिसमें आसिफ़ ख़ां की प्रशंसा है।

3. लवंगी संबंधी किम्बदन्ती को बहुत से इतिहासकार सच नहीं मानते। अगर वह सच भी हो तो वह औरंगज़ेब की

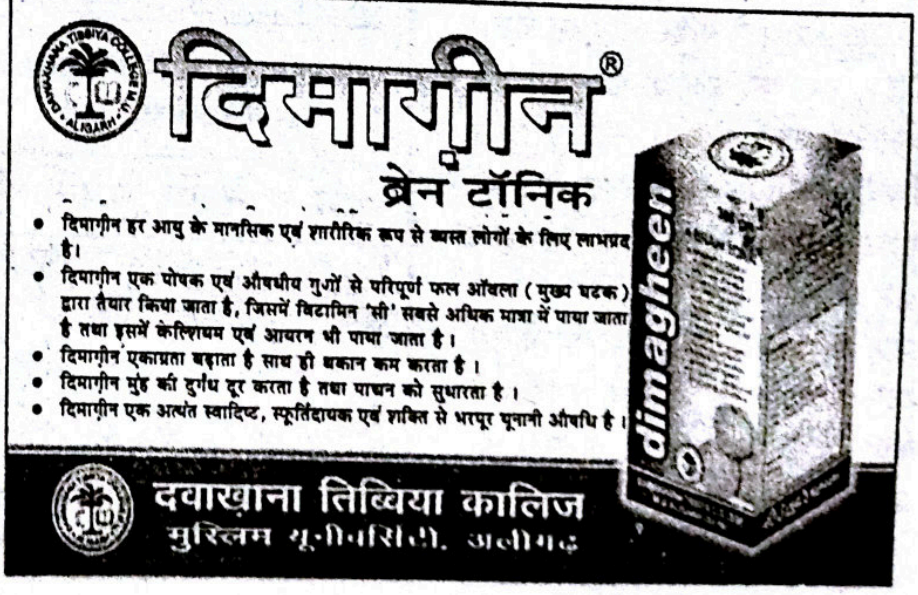

बहिन कदापि नहीं थी । जिस तरह यह सच है कि औरंगज़ेब ने बौद्ध शिक्षा संस्थानों को नहीं जलवाया था, परन्तु यह भी उतना ही सच है कि लवंगी (जगन्नाथ की प्रेयसी-पत्नी) उसकी बहन नहीं थी । अगर पंडितराज उसके दरबार में रहे भी होते तो उस समय वे वृद्धावस्था की आख़िरी चौखट पर थे । उस समय प्रेम प्रसंग होना असंभव था । हां लवंगी किसी मुस्लिम दरबारी सरदार की कन्या हो सकती है जैसा क़ि लगभग सभी इतिहासकार मानते हैं । वह दरबारी शाहजहां का होगा औरंगज़ेब का नहीं ।

4. हर्षवर्धन के द्वारा हिन्दू मंदिरों के तोड़े जाने का उल्लेख उन्होंने किस प्रामाणिक इतिहास ग्रंथ में पढ़ा है ? फिर वह हिन्दुओं के सबसे बड़े सम्मेलन कुम्भ के मेले में क्यों जाता था ? और वहां अपना सर्वस्वदान क्यों किया करता था ?

5. औरंगज़ेब के द्वारा अनेक मंदिरों को ज़मीनें दान देने की बात ऐतिहासिक है, परन्तु यह भी सच है कि बल्लभाचार्य द्वारा स्थापित श्री नाथ जी के मंदिर की 'श्री नाथजी' व 'द्वारकाधीश' की प्रतिमा लेकर पुजारी उन्हें तोड़े जाने के समाचार पर ही लेकर भागे थे जिन्हें क्रमशः श्री नाथ द्वारा तथा कोकरोली में स्थापित करके महाराजा राज सिंह ने एक मंदिर बनवाया था ।

6. वाराणसी मंदिर की जिस घटना (हिन्दू राजा की रानी के पुजारियों द्वारा बलात्कार की घटना) का उल्लेख किसी ऐतिहासिक ग्रंथ में नहीं है । यह मुद्राराक्षस जी की कल्पना है, जिसे जब चाहें जहां चाहें उस मंदिर के साथ जोड़ दिया जाता है । कमलेश्वर ने उसे सोमनाथ मंदिर और महमूद गज़नवी से जोड़ा है । यह कपोल कल्पना के अतिरिक्त कुछ नहीं ।

मुझे लगता है कि शासन की हनक क़ायम करने को धर्म स्थल तोड़े जाते होंगे, इससे शत्रु का मनोबल भी टूटता होगा । फिर जब राज्य अपने अधीन हो जाता होगा तो सुशासन व निष्पक्षता की छवि के लिए उन्हें ज़मीनें व दान दिये जाते होंगे । मैं उनकी केवल अंतिम बात से सहमत हूं कि इतिहास को अपनी आस्था या धारणा के अनुसार नहीं : तार्किक दृष्टि से देखना चाहिए । उनकी तरह विकृत व कपोल कल्पित (लक्ष्य मूर्ति हेतु) को कदापि नहीं करना चाहिए ।

अपने घर को

इस्लाम के प्रकाश से रोशन कीजिए

स्वयं पढ़िए, अपने प्रियजनों, संबंधियों और अन्य लोगों को भी पढ़ाइए

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका
कान्ति
www.kanti.in

सहयोग राशि वार्षिक : Rs. 220/-
आजीवन : Rs. 5,000/-

दावत
دعوت
www.dawatonline.com

सहयोग राशि वार्षिक : Rs. 600/-
आजीवन : Rs. 10,000/-

कान्ति
स्वस्थ चेतना का वाहक हिन्दी साप्ताहिक अख़बार

सहयोग राशि वार्षिक : Rs. 250/-
आजीवन : Rs. 5,000/-

सहयोग राशि
वार्षिक
स्वदेश में
: Rs. 220/-
विदेशों में
30 अमेरिकी
डॉलर
आजीवन
: Rs. 5,000/-

ماہنامہ زندگی نو
www.zindgienau.com

मांगे जाने पर नमूने की प्रति निशुल्क भेजी जाएगी।

MANAGER, DAWAT TRUST,
D-314, DAWAT NAGAR, ABUL FAZL ENCLAVE,
JAMIA NAGAR, NEW DELHI-110025,
TEL.: Dawat: 09818799113, Kanti: 09818799223,
E-mail: dawattrust@yahoo.co.in

निजी अनुभव पर आधारित लेख

बाबाओं के चक्कर में फंसते हताश लोग

❖ सी॰ के॰ रहमानी

कुछ समय पहले समाचार पत्रों में पढ़ा कि दिल्ली के सेवा नगर में दो परिवारों के घर से शनि की महादशा का कोप दूर करने के लिए एक पंडित जी ने हवन किया और 11 तोले सोने के जेवर लेकर उड़न छू हो गये । पुलिस ने सर्विलांस का सहारा लिया और बिहार तक की खाक छान आयी लेकिन पंडित जी महाराज का सुराग़ नहीं लगा । यह अपने तरह की पहली या आख़िरी घटना नहीं है । हर रोज़ इस तरह की ठगी के मामले सामने आते रहते हैं और आगे भी होते रहेंगे इसकी पूरी संभावना नहीं बल्कि यक़ीन है ।

सभी समस्याओं का समाधान, नौकरी में बाधा, बशीकरण, गढ़े धन का पता लगाना, बीमारी में दवा का न लगाना, भूत-प्रेत से छुटकारा, विदेश यात्रा, शादी में रुकावट, नौकरी लगकर छूट जाना, व्यापार में घाटा, शत्रु पर विजय प्राप्त करना, मुक़दमे में जीत, किसी ने कुछ कर दिया है, पैसा आता है लेकिन घर में रुकता नहीं, गृह क्लेश, बॉस खुश नहीं है, घर नहीं बन पा रहा, नौकरी में तरक़्क़ी नहीं हो रही है जैसी तमाम समस्याओं के लिए पूरे देश भर में बाबाओं-तांत्रिकों का जाल फैला हुआ है । गांवों, शहर-क़स्बों से लेकर महानगरों में जगह-जगह इस तरह की समस्याओं के समाधान के लिए बाबा, तांत्रिक गली कूचों में मिल जाते हैं । अगर गली मुहल्ले में नहीं मिल पा रहे तो टी॰वी॰ पर मौजूद हैं । यहां एक से एक पहुंचे हुए तांत्रिक बाबा, ज्योतिषी मिल जाएंगे । कई हज़ार मंत्रों से सिद्ध किया हुआ लॉकेट, अंगूठी, यंत्र मिल जाएंगे ।

सब मानते और जानते हैं कि यह सब ठगी है, अंधविश्वास है और इससे कुछ होने वाला नहीं है, फिर भी धंधा चल रहा है, चल ही नहीं रहा दौड़ रहा है । हर रोज़ लोग ठगे जा रहे हैं, फिर भी लोग बाबाओं के पास जा रहे हैं । दरअस्ल, इस धंधे के चलने के कई कारण हैं । एक, मानवीय स्वभाव है कि हम समस्या से जूझने के बजाए उसके हल का आसान तरीक़ा तलाशते हैं । ऐसा तरीक़ा जिसमें श्रम न हो, हो तो कम हो और समय भी न लगे, अगर लगे तो बहुत कम । यह रास्ता अंधविश्वास और झाड़-फूंक, ताबीज़-गंडा की तरफ़ जाता है, क्योंकि यही शार्टकट है । आदमी चारों ओर से जब निराश, हताश, असफल हो जाता है तब वह इनका सहारा लेता है, सोचता है चलो इसको भी आज़मा कर देख लिया जाए, क्योंकि इसको इस तरह प्रचारित किया जाता है कि समस्या का समाधान घंटों में हो जाएगा । यानी हताश, निराश, नाकाम, असुरक्षित व्यक्ति बाबाओं के पास जाता है, टोटके आज़माता है और ठगा जाता है । हमारे देश में भाग्यवादियों की कमी नहीं है क्योंकि यहां घनघोर ग़रीबी है । ग़रीब चमत्कार की उम्मीद करता है और चमत्कार दिखाने का दावा बाबा करते हैं । यही कारण है कि लगभग हर अख़बार दैनिक और साप्ताहिक भविष्यफल छापता है । लोग रोज़ उसे पढ़ते हैं और उस पर भरोसा भी करते हैं । तीसरे यह कि लालच भी आदमी को तांत्रिकों के पास ले जाता है । भौतिक सुख की चाह और जल्द धनी होने की लालसा भी शार्टकट ढूंढ़ती है, वह शार्टकट बाबा हैं । जब आदमी भाग्यवादी बनता है तो उसे खुद पर और अपने कर्म पर भरोसा नहीं रह जाता । फिर वह ईश्वर के आगे नहीं कथित रूप से चमत्कार करने वाली ताक़तों के आगे झुकने लगता है ।

निराश आदमी के जीवन में विज्ञापन की यह लाइन 'सब जगह से निराश हो चुके लोग ही मिलें' हथौड़े की तरह वार करती है । इस लाइन में अघोषित रूप से सौ प्रतिशत गारंटी का भाव छिपा है । दूसरी बात, जो लोग ठगे और छले जा चुके हैं उनमें से 99 प्रतिशत बताते ही नहीं है कि वे ठगे गये हैं क्योंकि वह जानते हैं कि लोग उसकी मूर्खता पर हंसेंगे । पूर्व रेल मंत्री पवन कुमार बंसल ने भी असुरक्षा की भावना के चलते ही बकरे की पूजा या बलि चढ़ाई थी । (टी॰वी॰ में बकरे को दिखाया गया था) यानी जो व्यक्ति असफल और असुरक्षित है वह बाबाओं और तांत्रिकों की शरण में जाता है । बांझपन दूर करने, बच्चा पैदा करने या फिर पति को वश में करने के नाम पर तांत्रिक कई युवतियों की इज़्ज़त लूट चुके हैं और आगे ऐसा नहीं होगा इस बात

की कोई गारंटी नहीं है ।

मेरा निजी अनुभव है कि व्यक्ति हताशा में इनका शिकार होता है । यह अलग बात है कि ठगी कम ज़्यादा व्यक्ति के विवेक पर होती है । मेरा बड़ा बेटा दस साल से नशे का आदि है । कई साल तक यह पता नहीं लगा कि वह नशा करता है, लेकिन उसकी हरकतें अजीब थीं । दीवार में सिर मारना, रास्ता चलते या सोते हुए उछल पड़ना, बिस्तर से न उठना, चीख़ना-चिल्लाना शामिल है । इससे पूरा घर परेशान है । दिल्ली के कई जाने-माने अस्पतालों में उसे दिखाया लेकिन कोई लाभ नहीं । तभी किसी ने पत्नी को बताया कि 'ऊपरी चक्कर' है, फ़लां मुल्लाजी, फ़लां मज़ार पर जाकर ठीक हो जाएगा । चूंकि चारों ओर से निराश हो चुके थे इसलिए पत्नी और बहू के दबाव में न चाहते हुए यह सोचकर कि शायद इन्हीं का 'हाथ' लग जाए और घर का तनाव ख़त्म हो जाए, इस उम्मीद से बाबाओं का सहारा लिया । यह भी सोचा कि जो हम तिल-तिल मर रहे हैं शायद उससे मुक्ति मिल जाए । जिसने जहां बताया वहां गये । तमाम मज़ारों और मुल्लाओं के दर की ख़ाक छान मारी । कई ज्योतिषियों और बाबाओं के पास गये ।

सबने ठीक करने की गारंटी दी, लेकिन हुआ कुछ नहीं । सब तंत्र-मंत्र, ताबीज़-गंडे बेकार साबित होने थे सो हुए । बाद में किसी ने बताया कि आपका बेटा भांग खाने का आदी है, इसलिए ऐसी हरकतें करता है । इसके बाद कई नशा मुक्ति केन्द्रों में भर्ती कराया लेकिन कुछ नहीं हुआ । अब भी यह उम्मीद पाले बैठे हैं कि शायद कहीं कोई चमत्कार हो जाए तो उसके बच्चों को रोटी-कपड़ा मिलने लगे, क्योंकि नशे का आदी आदमी काम तो करता नहीं है । यह बताने की ज़रूरत नहीं कि ऐसे घर में हर समय क्लेश रहता है । समाज में अपमान और आर्थिक विपन्नता अलग । ऐसा भी नहीं है कि लोगों ने उसकी मदद नहीं की । जमाअत इस्लामी हिन्द (दिल्ली-हरियाणा प्रदेश) के तत्कालीन अध्यक्ष डॉ० रफ़अत साहब ने संस्था की तरफ़ से आर्थिक मदद की । उनके अलावा भी कई लोग मदद को आये लेकिन उसमें सुधार नहीं आया ।

ऐसे घोर निराशा के दौर में यदि कोई विज्ञापन सामने आता है कि फ़लां आदमी ठीक कर देगा तो घर वाले वहां ले जाने की सोचने लगते हैं या उससे बहुत उम्मीद बंधने लगती है । इसलिए यह बात निकलकर आयी कि आदमी निराशा, हताशा और असुरक्षा में ही इस रास्ते को चुनता है । दिल्ली के सेवा नगर में जो ठगी हुई उसके पीछे भी ऐसी ही कहानी थी । उस परिवार का बड़ा बेटा कोई काम नहीं करता था । इस पर पंडित जी ने कहा कि बेटे पर शनि की महादशा चल रही है इसलिए वह कोई कामकाज नहीं कर रहा है । अगर घर में हवन करा लिया जाए तो शनि की महादशा का प्रकोप ख़त्म हो जाएगा । पंडितजी के कहने पर युवक के मां-बाप ने हवन कराया और उस हवन को कामयाब बनाने के लिए पंडित जी के कहे अनुसार उन लोगों ने घर के जेवर भी हवन स्थल पर रख दिये जिसे लेकर पंडित जी चलते बने ।

मुक्तक

तड़पोगे तुम अगर किसी को तड़पाओगे
ठोकर दोगे तो केवल ठोकर पाओगे
नागफनी बोने वाले हो सावधान तू
हर पग पर बस नागफनी चुभती पाओगे

■

बोझ इतना रहा था कि कांधे झिले
राह में हर क़दम शूल अनगिन मिले
झूठ रावण रहा अग्नि रथ पर मगर
हमने तोड़े सदा उसके सारे क़िले

■

युग अभिशापों को खोता है
सारे पाप कलुष धोता है
तम से लड़ने जले दीप सा
जग में अमर वही होता है

■

प्राणों में विश्वास आपका
कण-कण में आभास आपका
झलक नहीं मिलती पर फैला
आस-पास एहसास आपका

■

मानव कितना वन्य हो गया
जीवन आज जघन्य हो गया
परहित की चेतना सो गयी
रिश्तों का सौजन्य सो गया ।

डॉ० यायावर
88, तिलक नगर, बाईपास रोड,
फ़ीरोज़ाबाद-283203

सफल लोकतंत्र का मार्ग

❖ डॉ॰ माहे तिलत सिद्दीक़ी
(कानपुर, उ॰प्र॰)

भारतीय राजनीति की व्यापक रुढ़िवादिता या असफलता की पृष्ठभूमि में एक प्रश्न सदैव ही बुद्धि को कुरेदता है कि सत्य क्या है–बहुमत या बुद्धिमत ।

बुद्धि और शक्ति में से बुद्धि ही श्रेष्ठ है चाहे शक्ति किसी भी रूप में हो–राजशक्ति, जन-शक्ति, धनशक्ति, यंत्रशक्ति, अस्त्रशक्ति या अणुशक्ति । शक्ति सदैव बुद्धि से सुनियंत्रित एवं संचालित होनी चाहिए । जहां बुद्धि का नियंत्रण हटा या शिथिल हुआ, जहां शक्ति ने स्वयं को स्वतंत्र और सर्वप्रथम समझ लिया, वहीं शक्ति अव्यवस्थित, उच्छृंखल, अनियंत्रित, विकृत और पाशविक हो जाएगी–जिसे नियमित करने को बुद्धि को उसे पुनः दमित या व्यवस्थित करना होगा । बुद्धि का गुण प्रतिक्रियात्मक, विचारात्मक एवं निर्णयात्मक है, इसीलिए बुद्धि अधिक समय तक तटस्थ नहीं रह सकती । बुद्धि कभी बेकार नहीं बैठती ।

जहां प्रजातंत्र बुद्धि पर आधारित है वहां वह सफल सिद्ध हो रहा है तथा जहां इसकी बुद्धिरहित अंधानुकृति की जा रही है, वहां वह असफल हो चुका है या हो रहा है । वस्तुतः बुद्धिरहित बहुमत प्रजातंत्र में अनेक विकार उत्पन्न कर देता है ।

एक आदर्श लोकतंत्र का संगठन तभी संभव है, जबकि वहां का बहुमत शत-प्रतिशत बुद्धिमत या शिक्षित हो अन्यथा परिणाम विपरीत होंगे और लोग अशिक्षित बहुमत को दोषी न ठहरा कर प्रजातंत्र को ही कलंकित करेंगे । भारतीय प्रजातंत्र की यही स्थिति है । अशिक्षित बहुमत के कारण प्रजातंत्र का भोंडा नाटक चल रहा है । बुद्धिमत केवल मूक द्रष्टा बना हुआ है । प्रजातंत्र की मौलिक आस्थाओं का पतन हो रहा है । सत्य अब भी यही है कि बुद्धि या ज्ञान ही प्रत्येक स्थिति में सर्वोपरि है । ज्ञान की गति सदैव अंधकार से प्रकाश की ओर रहती है । अतः आज भारतीय प्रजातंत्र के बहुमत या भीड़मत और रूढ़िवादी बुद्धिमत को बुद्धि की कसौटी पर कसना नितांत आवश्यक हो गया है । इसमें विलम्ब, त्रुटि या प्रमाद कोई ऐसा दुष्परिणाम दे सकता है, जो भविष्य में अपरिमार्जनीय हो ।

सामंतवाद का कंकाल ही प्रजातंत्र का जंजाल बना हुआ है । तंत्र का आवरण बदला है, प्रजा की आत्मा नहीं बदली है । क़ानून-कचहरी, पुलिस, प्रशासन, दंड-व्यवस्था, कर-प्रणाली सभी अब भी सामंतवादी ढांचे की हैं । लोगों में अब भी कृत्रिम प्रदर्शन, ऐन्द्रिय भोगवाद, पदों की अधिकार, अनुचित रोब, मिथ्या, अहं की स्पर्धालु अनुकृति विद्यमान हैं । निर्धन राष्ट्रों में ये ही व्यापक असंतोष और ईर्ष्या की मनोदशा उत्पन्न करती हैं ।

भारतीय बुद्धिमत का यदि विश्लेषण किया जाए, तो हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि पहले तो भारत में बुद्धिमत है ही अल्पांश में और जो कुछ है भी, वह मैकाले की दिमाग़ी गुलामी की शिक्षा में शिक्षित होने के कारण नितांत पारंपरिक और मौलिकताविहीन है । नैतिकता और बुद्धिमता का विकराल अभाव है । देश में कोई दार्शनिक दृष्टिगत नहीं होता । हम दुनिया के दिये हुए रूढ़िवादी ज्ञान को अवश्यमेव येन-केन-प्रकारेण धकेल रहे हैं । महाविद्यालयों-विश्वविद्यालयों के प्रोफ़ेसर भी अंग्रेज़ी के अनुवादों पर अपना नाम चिपका कर बरबस विद्ता की कृत्रिम धाक जमाये बैठे हैं ।

सच्चा प्रजातंत्र तभी स्थापित हो सकेगा जब प्रत्येक नागरिक सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा धार्मिक रूप से पूर्ण स्वतंत्र हो, पूर्ण बहुमत बुद्धिमत हो तथा लोगों में परस्पर पर्याप्त सहिष्णुता, स्नेह एवं उत्तरदायित्व की भावना हो । इसके लिए हमें अपनी शिक्षा-पद्धति में आमूलचूल परिवर्तन करने होंगे जिससे कि प्रजातांत्रिक नैतिकता को संस्कारित किया जा सके । जनता में यह योग्यता होनी आवश्यक है कि वह सक्षम, योग्य एवं विद्वान व्यक्तियों का ही चयन करे तथा आवश्यकता पड़ने पर विद्वानों को राष्ट्रीय उत्तरदायित्व हेतु सादर आमंत्रित करें । इस प्रकार का बुद्धिमत और बहुमत का समन्वय तथा चरित्रिक सत्यता निश्चित रूप से सफल लोकतंत्र के मार्ग को प्रशस्त कर सकते हैं ।

मुनअम पब्लिक स्कूल

(सी०बी०एस०ई०, दिल्ली से सम्बद्धता प्राप्त, 10+2, ईंग्लिश मिडियम विद्यालय)

महाराजगंज, पो० दादपुर, जिला हजारीबाग, झारखण्ड।

नामांकण सुचना



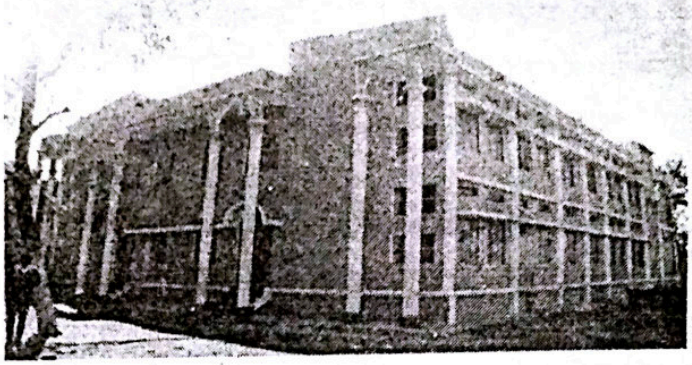

हजारीबाग के प्राकुतिक सौन्दर्य से भरपुर पहाडी क्षेत्र में स्थापित, विशाल कैम्पस में फैला एक अति-आधूनिक शैक्षणिक संस्था जहां छात्र-छात्राओं के लिए माडर्न स्कूल की तमाम सुविधाएं उपलब्ध हैं।

सफलता का सत्रहवां साल - मुस्लिम लडकीयों के लिए नायाब तोहफा

लडकीयों के लिए 100 बेड का शानदार हॉस्टल

सत्र 2013-2014 के लिए छात्रावास में रह कर शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक छात्र-छात्राएं 150/- रू0 अदा कर के फार्म एंव प्रास्पेक्टस स्कूल काउंटर से प्राप्त करें या 175/- रू0 का ड्राफ्ट भेज कर डाक से भी प्राप्त किया जा सकता हैं। विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें -

मो0 09431530878, Website : munammission.org

E-mail-munam_school2000edu@yahoo.com

एस0एम0 नईम
डायरेक्टर
एम0ए0, बी0एड

वकील अहमद
प्रिन्सिपल
बी0एस0सी0, बी0एड

ठूंठ

मासूम अंसारी
(लखनऊ, उ०प्र०)

पूस का महीना था । पाला बरसे तो बरसे । सांस लेने पर ठंडी-ठंडी भांप मुंह से निकल रही थी । बीच दोपहरी में सूरज की दुर्बल-सी किरणे फैली तो हांथ की दूरी पर छुपी चीज़ें नज़र आने लगीं । पाला पानी बनकर छप्परों से टपकने लगा । वह सुवह से कराह रहा था । तब से जब से ढापली में मुर्ग़े ने बांग न दी थी । कहने को पौ फट चुकी थी, कोहरे का धुंधला अंधेरा छाया रहा । जितना सर्द मौसम उतनी ही सर्द उसकी कराहें हो उठती । कराह तो कोई सुनने वाला न था उसके दर्द का एहसास कौन करता । बड़ी मुश्किल से उसने करवट बदली थीं, कुछ तो बीमारी के कारण जिस्म हरकत नहीं कर पा रहा था । और कुछ उस खाट का क़सूर था, जो बड़े-बड़े फन्दों की बुनी हुई थी । जिसे देखकर लगता था आज गयी या कल गयी । यह खाट उसके दुनिया से जाने के इन्तिज़ार में डाली गयी थी । उसका तो बढ़िया-सा मज़बूत तना हुआ बड़ा-सा पलंग था दस हट्टे-कट्टे लोग बैठ जाए तो चर्रमर्र की आवाज़ न आये । और इस खाट पर तो उसका दुर्बल शरीर ही था जिसके लिए वह काफ़ी था । उसने भी तो अपने बाप के साथ कुछ ऐसा ही किया था । उनकी फटी-फटी सी आंखें एक टक मुझे ही देखे जा रही थी । जब मैंने कहा था, "अब यह कितने दिन जिएंगे इतनी बढ़िया रज़ाई इन्हें उढ़ाने से क्या फ़ायदा । बाद में बेकार ही तो जायेगी, तुम लोगों को समझ नहीं आती । ऐसे ही ठिठुरन ऐसे ही पाला पड़ रहा था । और जो सबसे पुरानी रज़ाइयां बाप को दी थी उसकी रूई जगह-जगह इकट्ठा हो गयी थी । उसमें जाड़ा कहां कटता वह भी एक मरीज़ का । एक आह-सी उसके दिल से निकली । उसने बेचैनी में करवट बदलनी चाही मगर बदलने में अशक्त था । फिर उसी करवट लेट रहा । बाप के समय पड़ने पर अम्मां थी करवट बदलना, उसके कपड़े बदलना उसके बालों में तेल डालना । वह अपने बूढ़े कमज़ोर हाथों से सब कुछ किया करतीं । उसने तो अपनी पत्नी को सख़्त ताकीद कर रखी थी कि बापू के क़रीब भी न जाना उनकी सेवा करना तो दूर रहा ।

"मेरे वक़्त में तो वह भी नहीं रही मुझ से पहले ही चल बसी उस पर भी तो काफ़ी सितम ढाये थे, उसके ऐनक की छड़ टूट गयी थी सौ बार कहा होगा उसे बनवा दो मगर मेरे कान पर जूं तक न रेंगी । और धागा बांधने लगी । एक-एक कौड़ी बचाना अच्छा लगता था ।

दोपहर की अज़ान है डेढ़ दो बज रहा होगा सुबह से खाने को कुछ दिया जाने कौन आज कौन खाने को दे, बड़ी बहू देगी या छोटी बहू । वह सोच रहा था कि इतने में सात साल की पोती अम्बर ने उसे आवाज़ दी "दादू खाना ।" कटोरे में ठंडी दाल और उसमें रोटी के छोटे-छोटे टुकड़े पड़े थे । अपने हाथों से खिलाने लगी । दाल तो मुंह में लगाने का जी नहीं कर रहा था दो चार निवाले खाने के बाद उसने अम्बर को मना कर दिया । थोड़ा-सा दूध दलिया में पड़ा मिल जाता तो शायद पेट भर जाता, एक बार बहू से कहा तो अच्छे से सुनने को मिला था । दोबारा हिम्मत न पड़ी कुछ कहने को । बेटे तो खाट के क़रीब न आते । बड़ा बेटा कभी-कभार पूछ भी लेता मगर उसका जवाब पूरा भी न हो पाता वह खेतों पर काम को चल देता । वह फ़रमाइशें किससे करता ।

उस दिन उसका बापू तड़प कर रह गया था । उसने मछली खाने की फ़रमाइश की थी और उसने सुना-अनसुना कर दिया था तो अम्मां ने कई बार बेचैन होकर कहा था कि, "बेटा इन्हें मछली ला दो इनको पका कर खिला दें," उसने उनके इतने कहने पर ऐसी ज़ोर की डांट लगायी कि अम्मां के मुंह से कुछ न फूटा मगर आंख से आंसू ज़रूर फूट पड़े थे । बाप भी था कि पूरी रात मछली-मछली करता रहा और अम्मां अपना सीना खुरचती रही तड़प कर सिसकियां भरती रहीं । सुबह उसकी कोई आवाज़ न निकली बस कुछ सांसें बचीं थीं जिनमें वह पाले से टपकती छप्पर की छत को ताकता, तो कभी अम्मां का मुंह ताकता । बारिश पाले के मौसम से पहले वह नयी परछती बुनकर छप्पर पर

डालता । और अपने परिवार को पानी-पाले से बचाता था । उस वक़्त वह बच्चा था और अपने बाप की इस हरकत को ग़ौर से देखा करता था । थोड़ी देर में बापू का शरीर भी ठंडा पड़ गया । बापू के कफ़न-दफ़न पर होने वाला ख़र्च ही उसे भारी पड़ रहा था । घर के सामने बड़ा-सा ठूंठ पड़ा था जिसे बापू बैलगाड़ी में लाद कर लाया था । काफी बड़ा और मज़बूत था, जिसमें वह अपने जानवर बांध दिया करता था ।

कितनी धूप-बारिश पड़ गयी उस पर मगर वह ठूंठ ज्यों का त्यों रहा । जाने किस लकड़ी का था वह । आज भी वह पड़ा होगा एक महीने से तो खाट लगा हुआ था । घर की दहलीज़ तक पार न की थी ठूंठ को क्या देखता ।

उस वक़्त उसे बापू के मरने का ग़म कहां था उनके कफ़न-दफ़न पर होने वाला ख़र्च का सदमा था उसे । और वह वहीं ठूंठ पर बैठ गया सर पकड़ के और तब तक बैठा रहा जब तक बापू का जनाज़ा क़ब्रिस्तान न पहुंच गया । कई बार बूढ़े पुराने लोगों ने आकर कहा था । चलो गोंगे जनाज़े की नमाज़ तो पढ़ लो ।'' वह सबसे यही कहता रहा कि ''मैं नापाक हूं ।'' सब में मन-मुटाव पैदा हो गया था जनाज़ा उठ भी गया था पर किसी ने आकर न कहा था कि क़ब्रिस्तान चले चलो । वह ज्यों का त्यों ठूंठ पर बैठा रहा था । कुछ महीने बाद अम्मां भी कोई तमन्ना किये बिना दुनिया से चल बसीं । आज क्यों उसे यह सब सोचकर रंज हो रहा था । इस बात का एहसास पहले क्यों न हुआ था ? वह किस अहंकार में डूबा हुआ था ?

आज सुबह से न तो वह कुछ सोच पा रहा था न ही सुन पा रहा था । सब कुछ धुंधला-धुंधला दिख पड़ता था । सांस थी कि अन्दर जाती तो ऊपर आने में काफ़ी देर लग जाती बहुत ही मुश्किल घड़ी से वह गुज़र रहा था ।

''दादू को क्या हो गया ।'' अम्बर की चीख़ से सब दौड़ पड़े । आस-पास के लोग इकट्ठा हो गये थे । नहीं क़रीब आये तो उसके पुत्र । गोंगे ख़त्म हो गये टोले पड़ोस के लोगों में गुमसुम गुपचुप होने लगी । बेचारे काफ़ी दिनों से खाट पर पड़े थे आजकल में अनहोनी टल रही थी ।'' मौसम का मिजाज़ ठीक न था कफ़न-दफ़न की जल्दबाज़ी हो रही थी । किसी ने यह भी ध्यान न दिया कि जनाज़े की नमाज़ में कितने और कौन लोग हैं । जब जनाज़ा उठने लगा तो कांधा देने की बारी आयी तो लोगों की निगाहें गोंगे के पुत्रों को खोजने लगीं । तभी किसी ने कहा ''वह देखो ठूंठ, ठूंठ पर असग़र बैठा है नमाज़ में खड़ा नहीं हुआ ।'' बूढ़े पुराने लोगों ने ठूंठ की ओर देखा और मुस्कराये ''चलो मौसम और ख़राब हो इससे पहले पहुंच चलो वह नहीं आएगा, अपनी परंपरा को निभा रहा है ।



औपचारिक बनाम सच्चा न्याय

❖ राम पुनियानी

केन्द्रीय गृहमंत्री सुशील कुमार शिंदे ने 30 सितंबर 2013 को सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों को संबोधित एक पत्र में लिखा है कि सरकार को लगातार ऐसी शिकायतें प्राप्त हो रही हैं कि विभिन्न जांच एजेंसियों द्वारा निर्दोष मुस्लिम युवकों को प्रताड़ित किया जा रहा है। अपने पत्र में शिंदे ने मुख्यमंत्रियों से अनुरोध किया है कि वे यह सुनिश्चित करें कि किसी भी निर्दोष मुस्लिम युवक को आतंकवादी होने के नाम पर गिरफ़्तार न किया जाए और न ही ग़ैर-क़ानूनी हिरासत में रखा जाए। पत्र में यह सलाह भी दी गयी है कि यदि किसी मुस्लिम युवक के साथ इस तरह का अन्याय होता है तो उसे मुआवज़ा देने की व्यवस्था की जाए।

हाल के वर्षों में लगभग पूरे विश्व में आतंकवाद ने अपने पैर पसार लिए हैं। 'काफ़िर' और 'जिहाद' जैसे शब्दों के अर्थ को तोड़ा-मरोड़ा गया। इस सबसे उपजा 'इस्लामिक आतंकवाद'। इस शब्द को गढ़ने वाले भी निहित स्वार्थी तत्त्व थे।

इस संदर्भ में यह भी कहा जाने लगा कि, "सभी मुसलमान आतंकवादी नहीं हैं परंतु सभी आतंकवादी, मुसलमान हैं"। यह मिथ्या धारणा न केवल सामूहिक सामाजिक सोच का हिस्सा बन गयी वरन इसी अवधारणा के आधार पर पुलिस और अन्य आपराधिक जांच एजेंसियां अपनी कार्यवाही करने लगीं। बिना पर्याप्त जांच-पड़ताल के, मुस्लिम युवकों को जल्दबाज़ी में और अकारण गिरफ़्तारियां करने की पुलिस की प्रवृत्ति के पीछे अन्य कारक भी थे। इस प्रवृत्ति के उभरने के शुरुआती वर्षों में केवल मुट्ठी भर सामाजिक कार्यकर्ताओं ने पुलिस के इस पक्षपातपूर्ण रवैये के ख़िलाफ़ आवाज़ उठायी।

कुछ जन न्यायाधिकरणों ने राज्यतंत्र के पूर्वाग्रहग्रस्त व्यवहार के शिकार हुए युवकों की करूण गाथा सुनी। इनमें से अनेक के साथ जो गुज़रा, वह बहुत दुखद था। कई को अपनी पढ़ाई अधबीच में छोड़नी पड़ी। इनमें मेडिकल और इंजीनियरिंग के छात्र भी शामिल थे। ये सभी युवक समाज में व्याप्त सांप्रदायिकता के ज़हर से उपजे पूर्वाग्रहों के शिकार बने।

मालेगांव में सन 2008 में हुए बम धमाकों की जांच करने वाले महाराष्ट्र पुलिस के आतंकवाद निरोधक दस्ते के प्रमुख हेमंत करकरे इन पूर्वाग्रहों से मुक्त थे। और इसलिए वे अस्ली दोषियों तक पहुंच सके, जिनमें शामिल थीं साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर, स्वामी दयानंद पांडे, स्वामी असीमानंद और अन्य कई। ये सभी अब जेल में हैं। स्वामी असीमानंद के इक़बालिया बयान ने जांच की दिशा ही पलट दी और उसके बाद पुलिस ने इन हमलों के सिलसिले में कई अन्य लोगों को गिरफ़्तार किया।

इस पकड़-धकड़ के बाद देश में आतंकवादी घटनाओं में तेज़ी से कमी आयी परंतु हाल में, अल-क़ायदा की कई शाखाओं ने अपना सिर फिर उठाया है और आतंकी हमलों की एक बार फिर शुरुआत हो गयी है। अगर जांच एजेंसियां पर्याप्त सतर्कता और सूक्ष्मता से जांच करें तो वे अस्ली अपराधियों तक पहुंच सकती हैं परंतु इसकी जगह, वे मुस्लिम युवकों को जेल में डालकर अपने कर्तव्य की इतिश्री कर लेती हैं। यह कोई नहीं कहता कि एक भी मुस्लिम युवक आतंकी घटनाओं में शामिल नहीं है। बेशक, कई मुस्लिम युवक अल-क़ायदा और उसकी सड़ी, विकृत विचाधारा से प्रेरित होकर आतंकी हमलों में हिस्सा ले रहे हैं। यह एक कैंसर है, जो भारत के साथ पाकिस्तान में भी फैल चुका है।

कुछ बातें बहुत साफ़ हैं। पहली यह कि आतंकवाद का धर्म से कोई लेना-देना नहीं है। अल-क़ायदा की ताक़त और उसके प्रभाव क्षेत्र में वृद्धि, अमेरिकी नीतियों का नतीजा है। दूसरी ओर, स्वामी असीमानंद और सनातन संस्था की विचारधारा से भी आतंकवादी उपज रहे हैं। इन आतंकवादियों का उद्देश्य है हिन्दू राष्ट्र का निर्माण।

सनातन संस्था की वेबसाइट कहती है कि कलयुग में मुसलमान और ईसाई, दानव हैं जिनसे मुक़ाबला करना ज़रूरी है। इसलिए मालेगांव से लेकर अजमेर और समझौता

एक्सप्रेस से लेकर मक्का मस्जिद तक विस्फोट ऐसे स्थानों और समय पर किये गये जब वहां बड़ी संख्या में मुसलमान इकट्ठा थे । समझौता एक्सप्रेस के अधिकांश यात्री भी मुसलमान ही होते हैं । इस प्रकार हमें आतंकवाद की दो धाराओं से एक साथ निपटना है । एक है अल-क़ायदा की धारा और दूसरी, स्वामी असीमानंद की । ये दोनों ही धाराएं धर्म का लबादा ओढ़े हुए हैं परंतु अस्ल में इन्हें धर्म से कोई मतलब नहीं है । वे केवल राजनीति कर रही हैं । यहां प्रश्न यह उठता है कि अगर देश में दो क़िस्म के आतंकवादी संगठन कार्यरत हैं तक फिर केवल एक ही समुदाय के युवकों को चुन-चुनकर क्यों गिरफ़्तार किया जा रहा है ?

इस बारे में सच को दुनिया के सामने लाने के लिए पत्रकार आशीष खेतान ने अपना एक वेबपोर्टल शुरू किया है जिसका नाम है 'ग़ुलेल' । इस वेबपोर्टल में कई ऐसी घटनाओं का विवरण दिया गया है, जब पुलिस ने पूर्वाग्रहग्रस्त होकर जांच की और मुसलमान उन पूर्वाग्रहों के शिकार बने । इन दिनों लखनऊ में रिहाई मंच का धरना चल रहा है । मंच की मांग है कि ऐसे निर्दोष मुस्लिम युवकों को, जिन्हें आतंकी होने के नाम पर गिरफ़्तार किया गया है और जिनके ख़िलाफ़ कोई सुबूत नहीं हैं, तुरंत रिहा किया जाए ।

कुछ मुस्लिम संगठनों ने मालेगांव से मुंबई तक शांति मार्च निकालकर यह मांग की कि मालेगांव धमाकों के सिलसिले में गिरफ़्तार मुस्लिम युवकों को तुरंत रिहा किया जाए । स्वामी असीमानंद का इक़बालिया बयान एक वैध क़ानूनी सुबूत है और उस बयान के बाद, मालेगांव धमाके करने के आरोप में मुस्लिम युवकों को जेल में रखने का कोई औचित्य नहीं बचा है ।

सुशील कुमार शिंदे के मुख्यमंत्रियों को संबोधित पत्र को इसी संदर्भ में देखा जाना चाहिए । हर चीज़ को सांप्रदायिकता के चश्मे से देखने के अपने रोग के चलते, भाजपा ने इस मुद्दे का भी सांप्रदायिकीकरण कर दिया है और वह कह रही है कि यह सरकार की तुष्टिकरण की नीति का उदाहरण है । भाजपा के अनुसार, इस पत्र को वापस लिया जाना चाहिए क्योंकि इससे देश बंटेगा । भाजपा का यह दृष्टिकोण, हिन्दू राष्ट्र के उसके एजेंडे के अनुरूप है, उस एजेंडे के, जो केवल बहुसंख्यक समुदाय के श्रेष्ठीवर्ग का हितरक्षक है ।

एक ओर भाजपा कहती है कि संविधान के अनुसार सब बराबर हैं । अगर ऐसा है तो दलितों और आदिवासियों की सुरक्षा के लिए अनुसूचित जाति, जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम व महिलाओं की सुरक्षा के लिए घरेलू हिंसा क़ानून की क्या ज़रूरत है ? प्रत्येक संवेदनशील, मानवीय प्रजातांत्रिक समाज यह जानता और समझता है कि कमज़ोर को अतिरिक्त सुरक्षा, अतिरिक्त प्रावधानों की ज़रूरत होती है ताकि 'औपचारिक बराबरी' के पैरों तले उनके अधिकार न रौंद दिये जाएं । कोई भी प्रजातांत्रिक समाज, औपचारिक समानता से अस्ली समानता की ओर बढ़ता है । भाजपा इस यात्रा की आवश्यकता और इसके औचित्य को नहीं समझ सकती क्योंकि वह जातिगत और लैंगिक पदानुक्रम के मामले में यथा-स्थितिवाद की हामी है । वह चाहती है कि समाज में हिन्दू श्रेष्ठी वर्ग की प्रधानता बनी रहे और इसलिए ऐसे किसी भी क़दम, जिसका उद्देश्य निर्बल की रक्षा करना है, उसे समाज को बांटने वाला प्रतीत होता है ।

सच तो यह है कि शिंदे ने यह क़दम काफ़ी देरी से उठाया है । उन्हें तो यह पत्र सालों पहले तब लिख देना था जब जन न्यायाधिकरणों, धरनों व जन जांच समितियों द्वारा सामाजिक कार्यकर्ताओं ने इस घोर अन्याय के प्रति देश का ध्यान आकर्षित किया था । शिंदे को देश के शीर्ष पुलिस अधिकारियों की बैठक बुलाकर उनसे आतंकवाद की जड़ों पर चर्चा करनी चाहिए । उन्हें समाज के हाशिये पर जी रहे लोगों की दुर्दशा से परिचित करवाना चाहिए और उन्हें विभिन्न जन न्यायधिकरणों की रिपोर्टें पड़वाना चाहिए ।

न्यायपूर्ण व्यवस्था की स्थापना में पुलिस अधिकारियों की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है, अत: इस नाज़ुक सामाजिक मुद्दे की सही समझ उनमें विकसित की जाना आवश्यक है । कई भाजपा नेता साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर और स्वामी असीमानंद जैसे लोगों के प्रति सहानुभूति रखते हैं । उनमें से कुछ ने प्रधानमंत्री से मिलकर यह अनुरोध किया था कि इन लोगों के साथ नरमी का व्यवहार किया जाए । वाह, क्या पाखंड है ! वे बम फोड़ने वाले साधुओं और स्वामियों की रक्षा करना चाहते हैं । परंतु आतंकवाद के नाम पर प्रताड़ित किये जा रहे मुस्लिम युवकों की आह उन्हें सुनायी नहीं देती । यह है सांप्रदायिकता–जो इस पार्टी का वैचारिक आधार है । (वि॰फ़ी॰)

अन्तश्चेतना

■ डॉ॰ सतीशराज पुष्करणा

कक्षा पांच में प्रथम पीरियड नैतिक-शिक्षा का चल रहा है । शिक्षक पढ़ा रहे हैं कि हमें माता-पिता के प्रति आभारी होना चाहिए जो हमें पालते हैं, पढ़ाते-लिखाते हैं तथा समाज में रहन-सहन का ढंग सिखाते हैं ।

अभिषेक बहुत ही मेधावी छात्र है । कक्षा में सदैव आगे रहता है । प्रत्येक शिक्षक का प्रिय विद्यार्थी है । किन्तु आज ! आज वह शरीर से कक्षा में, किन्तु मन किसी अजीब उलझन में है । शिक्षक द्वारा पढ़ाए गये पाठ के कुछ अंशों पर उसका ध्यान जा सका है, कुछ पर नहीं । किन्तु जो अंश उसके कान में पड़े हैं, उन्होंने उसे दुखी ही नहीं किया, आत्मग्लानि से भी भर दिया है । अब उसका मन पूरी तरह से उचट गया है । रह-रहकर उसका हाथ नेकर की जेब में चला जाता है और फिर उसमें से ऐसे निकलता है, जैसे जेब के भीतर से उसे कोई डंक-सा लगा हो । उसकी जेब में उसकी मां का झुमका है, सोने का झुमका ।

उसे लगता है कि वह अभी इसी वक़्त घर भाग जाए और झुमका मां के क़दमों में रख दे । रह-रहकर एक तरफ़ शिक्षक की बातें उसके मन-मस्तिष्क पर उभरती हैं, तो दूसरी तरफ़ मां का रोता हुआ परेशान चेहरा उसके समक्ष उपस्थित हो जाता है । वह सोचने लगता है, मां अपना एक झुमका ढूंढ़ रही होगी । वह उसे मिल नहीं रहा होगा । वह परेशान होगी । पिता की डांट की कल्पना से वह सिहर-सिहर जा रही होगी । सोने की वस्तु खोना अशुभ माना जाता है–यूं भी क़ीमती वस्तु, वह जितना सोचता जाता है, दुखी होता जाता है ।

उसे ख़्याल आता है, मां उसके सभी बहन-भाइयों में उसे ही अधिक चाहती है । वह अपने बहन-भाइयों में सबसे बड़ा है । कोई भी खाने की चीज़ हो, उसे सबसे पहले, सबसे ज़्यादा देती है । उसे स्मरण हो आया एक बार जब उसके पेट में दर्द उठा था, तो मां ने रोते-रोते आकाश सिर पर उठा लिया था । मां तब तक आराम से नहीं बैठी थी, जब तक उसे आराम नहीं आ गया । यह सोचकर उसका मन ग्लानि की पराकाष्ठा तक भर आया । वह रुआंसा हो गया । हल्के-हल्के सिसकने भी लगा । पास बैठे लड़के ने जब अभिषेक की आंखों में आंसू देखे तो उठकर खड़ा हो गया, "सर ! अभिषेक रो रहा है ।"

"रो रहा है ! मगर क्यों ? अभिषेक खड़े हो जाओ, बताओ बेटे ! तुम क्यों रो रहे हो ? तुम्हें किसी ने कुछ कहा है ? इधर आओ, मेरे पास ।"

इतना सुनते ही तो वह फफक पड़ा और अविरल अश्रुधारा बह निकली । हिचकियां बंधने लगीं । शिक्षक उसे प्यार करने लगे । उसके सिर पर हाथ फेरा । उसकी हिचकियां थमने का नाम नहीं ले रही थीं । शिक्षक ने उसे सीने से लगाया और रोने दिया । शिक्षक समझ गया आज इसके साथ अवश्य ही कोई विशेष बात है, अन्यथा इतना मेधावी लड़का...यह तो सदैव प्रसन्न रहने एवं चहकने वाला लड़का है । आज इसका इस प्रकार रोना कोई अर्थ अवश्य रखता है । पीरियड समाप्त होने को आया । शिक्षक ने कहा, "बेटे ! तुम एक मेधावी छात्र हो, प्रत्येक शिक्षक तुम पर गर्व करता है । तुम्हारे इस प्रकार रोने ने मुझे चिन्ता में डाल दिया है । तुम्हारी आंखों में आंसू देखकर मैं भी भावुक हो उठा हूं । बताओ, क्या बात है ?"

अभिषेक ने अपनी जेब से झुमका निकालकर शिक्षक के हाथ पर रख दिया ।

"यह क्या ! झुमका ?" "सर! यह मेरी मां का है ।" "तो...?" "सर ! पतंग-डोर ख़रीदने की ग़रज़ से मैंने इसे चुरा लिया था ।" "तब ?" "सर ! एक तो मैंने जब से इस झुमके को उठाया है, तभी से परेशान हूं । फिर आज क्लास में आपके पढ़ाए पाठ ने तो मुझे और अधिक ग्लानि से भर दिया है । रह-रहकर मुझे मां का चेहरा परेशान एवं रोता हुआ नज़र आता है । आज मेरा दिल क्लास में बिल्कुल नहीं लगा रहा है । बस रोने का मन करता है । मुझे क्षमा कर दीजिए, सर ।" "बेटे ! तुम मेधावी ही नहीं, समझदार भी हो, और बहादुर भी । आज से मेरे हृदय में तुम्हारे प्रति और अधिक प्यार बढ़ गया है । चलो ! घर चलो ! मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूं ।"

सतीशराज पुष्करणा
'लघुकथानगर' महेन्द्रू
पटना-800006 (बिहार)

इस्लाम में शासन करने का अधिकार

■ अबरार अहमद

इस्लाम में शासन करने का अधिकार उन लोगों को सौंपा गया है, जो क़ुरआन और सुन्नत (रसूल के तरीक़े) के अनुसार लोगों के बीच फ़ैसला करते हैं। अल्लाह का वादा है कि वह शासन करने का अधिकार केवल अच्छे लोगों को देगा तथा ज़ालिमों को इस अधिकार से वंचित रखा जाएगा। यहां ज़ालिम से मुराद केवल इन्सानों पर अत्याचार करने वाला नहीं है, बल्कि सत्य और सच्चाई पर जुल्म करने वाला भी है। अर्थात जो सच को दबाने की कोशिश करे वह ज़ालिम है। ऐसे लोगों को यदि हुकूमत सौंप दी जाए तो वे ज़मीन में बिगाड़ पैदा करे दें। अतः अल्लाह तआला का हुक्म है कि ऐसे लोगों की आज्ञा का पालन हरगिज़ न किया जाए।

"उन मर्यादाहीन लोगों की आज्ञा का पालन न करो जो ज़मीन में बिगाड़ पैदा करते हैं और कोई सुधार नहीं करते। (क़ुरआन, 26 : 151-152)

यहां इबराहीम (अलैहि०) के साथ पेश आये वाक़िये का ज़िक्र आवश्यक है। जब अल्लाह ने इबराहीम (अलैहि०) को आज़माया और इबराहीम (अलैहि०) आज़माइश में खरे उतरे, तो अल्लाह ने कहा कि, मैं तुम्हें सब लोगों का पेशवा बनाने वाला हूं तो इबराहीम (अलैहि०) ने अल्लाह से निवेदन किया कि क्या मेरी संतान के लिए भी यही वादा है, तो अल्लाह ने उत्तर दिया कि मेरा वादा ज़ालिमों के लिए नहीं है। अर्थात इबराहीम (अलैहि०) की संतान में जो लोग अच्छे होंगे, सिर्फ़ उन्हीं को शासनाधिकारी बनाया जाएगा तथा जो लोग ज़ालिम हैं, वे चाहे इबराहीम (अलैहि०) की संतानों में से ही क्यों न हो, उन्हें शासनाधिकारी नहीं बनाया जाएगा। अर्थात शासनाधिकारी बनने के लिए अल्लाह के रसूल की संतान होना ही काफ़ी नहीं है।

अतः प्रजा को ज़ालिम शासक की आज्ञा का पालन करना आवश्यक नहीं है, इसके विपरीत जो शासक क़ुरआन व सुन्नत के अनुसार फ़ैसले करता हो, उसकी आज्ञा का पालन करना प्रजा के लिए अनिवार्य है। अतएव क़ुरआन में है–"ऐ लोगों जो ईमान लाए हो, बात मानो अल्लाह की और बात मानो रसूल की और उन लोगों की जो तुममें से आदेश देने के अधिकारी हों, फिर अगर तुम्हारे बीच किसी मामले में झगड़ा हो जाए तो उसे अल्लाह और रसूल की ओर फेर दो, अगर तुम वास्तव में अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हो। यही एक सही कार्य-प्रणाली है और परिणाम की दृष्टि से भी अच्छा है।" (क़ुरआन, 4:59)

अतः हम देखते हैं कि इस्लामी राज्य के संविधान की प्रथम धारा में चार सिद्धांत स्थायी रूप से क़ायम कर दिये गये हैं–

1. इस्लामी व्यवस्था में आदेश देने का अस्ल अधिकारी अल्लाह है। एक मुसलमान सबसे पहले अल्लाह का बन्दा है, बाक़ी जो कुछ भी है उसके बाद है।

2. इस्लामी व्यवस्था का दूसरा आधार रसूल का आज्ञापालन है।

3. उपर्युक्त दोनों आज्ञापालनों के बाद और उनके अधीन तीसरा आज्ञापालन उन आदेश देने वाले अधिकारियों का है, जो खुद मुसलमानों में से हों। इसमें वे सब लोग शामिल हैं जो मुसलमानों के सामूहिक मामलों के कार्यकारी अध्यक्ष हों, चाहे वे उलेमा हों या राजनीतिक मार्गदर्शक हों या देश के व्यवस्थापक अधिकारी या अदालती फ़ैसले करने वाले जज या सांस्कृतिक और सामाजिक मामलों में क़बीलों और बस्तियों और मुहल्लों की अध्यक्षता करने वाले बड़े बुज़ुर्ग और सरदार।

4. अल्लाह का आदेश और रसूल का तरीक़ा बुनियादी क़ानून और अंतिम प्रमाण है।

मुसलमानों के बीच या हुकूमत और प्रजा के बीच जिस मामले में भी विवाद उत्पन्न होगा, उसमें फ़ैसले के लिए क़ुरआन और सुन्नत की तरफ़ रुजू किया जाएगा और जो फ़ैसला वहां से हासिल होगा, उसके सामने सब स्वीकार के लिए सिर झुका देंगे।

For Information On
City Shops, Roads, Restaurants, Magazine, Schools and much more.
Syed Shahbaz Alam Barvi
Business Development Director (09049185093)
Visit us:
www.shoppinglanes.com

जीवनशैली बदलें, दिल के रोगों से बचें

■ राजेन्द्र कुमार राय

वर्तमान में हर पांचवां भारतीय दिल का मरीज़ है । अगले दस वर्ष में यह संख्या दो से तीन गुना अधिक होने की संभावना है । आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में हृदयरोगों के लिए एंजियोप्लास्टी व बाइपास जैसे उन्नत और कारगर उपचार होने के बावजूद इसके 50-70 फ़ीसदी मामले में एक से पांच साल के भीतर यह रोग दुबारा हो जाता है । लेकिन नयी दिल्ली के लाजपत नगर स्थित साओल हेल्थ एंड रिसर्च फ़ाउंडेशन के निदेशक और हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ॰ बिमल छाजेड़ के अनुसार तनाव रहित जीवन, शाकाहार व वसारहित खान-पान, ध्यान एवं नियमित व्यायाम और नशारहित दिनचर्या को अपनाकर न केवल 90 फ़ीसदी मामले में एंजियोप्लास्टी या बाईपास कराने की नौबत से बचा जा सकता है बल्कि 98 फ़ीसदी मामले में हृदयरोगों से मुक्ति पाने के इस कारगर उपाय को 'प्राकृतिक जीवन प्रबंधन विधि' कहते हैं ।

वास्तव में साओल यानी साइंस एंड आर्ट ऑफ़ लिविंग (ज़िन्दगी जीने का विज्ञान एवं कला) उन लोगों के लिए आशा की एक किरण के रूप में वैकल्पिक कार्यक्रम है, जो अपने दिल के अवरोधों को समाप्त करने के लिए लक्षणों के आधार पर एंजियोप्लास्टी एवं बाईपास सर्जरी द्वारा उपचार नहीं कर सकते । साओल के अनुसार उचित आहार एवं योग द्वारा हृदय रोगों की सफल चिकित्सा की जा सकती है ।

हृदय रोग होने का मुख्य कारण कोरोनरी धमनियों में 70 फ़ीसदी से अधिक रुकावट होना है । यह रुकावट या तो धमनियों के भीतरी परत पर वसा जमने के कारण होता है या रक्त का थक्का (थ्रम्बोसिस) बनने के कारण होता है । इसके कई कारण होते हैं परन्तु इसको दो वर्गों में बांटा जा सकता है । अनियंत्रित और नियंत्रित । अनियंत्रित कारण है उम्र का बढ़ना, महिलाओं में रजोनिवृति होना, आनुवांशिक गड़बड़ी होना, पुरुषों में हृदय रोग अधिक पाया जाना आदि अनियंत्रित कारण हैं । नियंत्रित कारण हमारी जीवनशैली से ताल्लुक़ रखता है । यह ऐसे कारण हैं जिन्हें बदला या रोका जा सकता है । हृदय रोग के 90 से अधिक फ़ीसदी मामले में इसके नियंत्रित कारण ही ज़िम्मेदार होते हैं ।

डॉ॰ बिमल दाजेड़ के अनुसार आज जीवन के हर क्षेत्र में बढ़ती प्रतिस्पर्धा, कम समय में अधिक पाने की ललक और अंधभौतिक विकास में पिछड़ने की चिंता ने मानसिक दबावों व तनावों को जन्म दिया है । मानसिक दबाव और हृदय रोग से गहरे संबंध हैं । हृदय रोग पैदा करने वाला यह सबसे बड़ा कारण है । मानसिक अवसाद के कारण रक्तचाप, हृदयगति, रक्त में शुगर और कोलेस्ट्रॉल की वृद्धि हो जाती है । इसके अलावा रक्त में वसा का जमाव तेज़ी से होने लगता है, कोरोनरी धमनियों में पेशीय आकुंचन होने लगता है और रक्त में थक्के बनने की संभावना बढ़ जाती है । यही कारण है कि मानसिक अवसाद सबसे अधिक ख़तरनाक है ।

हृदय रोग के दूसरे नियंत्रण कारण खान-पान संबंधित हैं । खान-पान में वसा की ज़रूरत से अधिक मात्रा होने के कारण रक्त में कोलेस्ट्रॉल और ट्राम्लिसराइड्ज (एक प्रकार का वसा) का स्तर ऊंचा हो जाता है जो कोरोनरी धमनियों की भीतरी परत पर जमाव पैदा करते हैं । अमेरिकी अध्ययनों के अनुसार एशियाई लोगों के रक्त में ट्राइग्लिसराइड्ज का स्तर ऊंचा होने के कारण हार्ट अटैक का ख़तरा यूरोपीय लोगों की अपेक्षा पांच गुना ज़्यादा रहता है । प्रतिदिन अधिक कैलोरी की मात्रा का सेवन करने से वह शरीर में वसा के

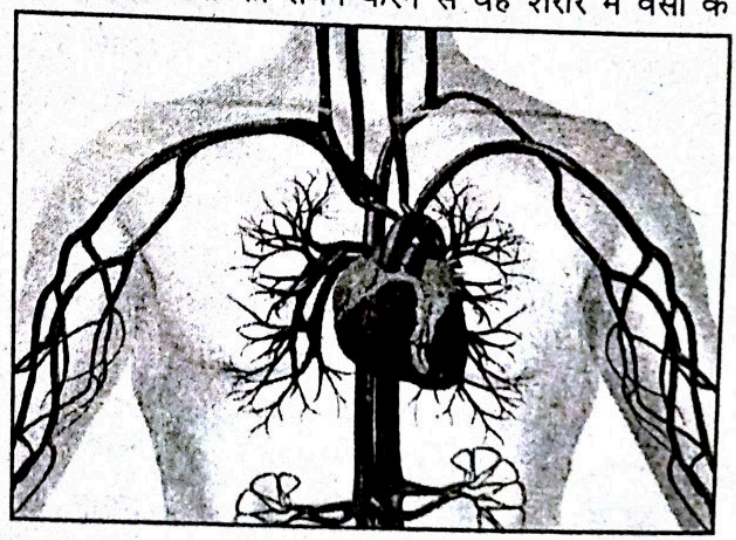

रूप में परिवर्तित हो जाती है । असंतुलित खान-पान के कारण शरीर में एंटीऑक्सीडेंट्स की कमी हो जाती है ।

मोटे लोगों को उच्च रक्तचाप और मधुमेह होने की अधिक संभावना रहती है । मधुमेह रोगियों का रक्तचाप और रक्त में कोलेस्ट्रॉल का स्तर हमेशा ऊंचा रहता है । ये सभी धमनियों में रुकावटों के लिए ज़िम्मेदार हैं । तीव्र मधुमेह रोगियों के दिल के दौरे कम उम्र में पड़ जाते हैं । साथ ही ऐसे लोग हमेशा मानसिक तनाव में रहते हैं । हृदय रोग के कारणों पर विश्व स्वास्थ्य संगठन के लिए गये अध्ययनों के अनुसार धूम्रपान करने वाले को सामान्य जन की अपेक्षा हार्ट अटैक का ख़तरा 10 गुना अधिक रहता है । धूम्रपान के आदी लोगों के शरीर में कार्बन मोनो ऑक्साइड की अधिक मात्रा मौजूद होने के कारण कोलेस्ट्रॉल का जमाव बहुत तेज़ी से होता है । इसका कारण धूम्रपान को हृदय रोग का ख़तरनाक कारण माना जा रहा है ।

यदि अचानक उत्तेजना, चिंता, सीढ़ियां चढ़ते हुए, पैदल चलते हुए, नहाते हुए, तनावपूर्ण कार्य करने पर, वसायुक्त बोझिल खाने के बाद या थोड़े से भी श्रम करने पर छाती के बाएं हिस्से में दर्द की अनुभूति हो जो बायीं बाजू में पहुंच जाए और सांस तेज़ी से चलने लगे या उखड़ने लगे या घुटने लगे, पसीना आने लगे, जी मितलाने लगे, क़ै की अनुभूति हो, चक्कर आ जाए तो इसे एंजाइना कहा जाता है । एंजाइना हृदय रोग का प्रारंभिक सूचना है । कोरोनरी धमनियों में रुकावट 70 फ़ीसदी से अधिक होने पर ही एंजाइना होता है । लेकिन इन धमनियों में पूर्ण रुकावट होने पर दिल का दौरा पड़ता है । इसे हाई एंजाइना की स्थिति कहते हैं । इसमें आराम की स्थिति में भी एंजाइना के लक्षण उभरते हैं । इसमें छाती में तेज़ दर्द होता है । एंजाइना कुछ मिनटों के लिए होते हैं जबकि दिल का दौरा पड़ने पर एंजाइना के लक्षण आधा या इससे अधिक घंटे के लिए स्थायी तौर पर महसूस होते हैं । कोरोनरी धमनियों में पूर्ण रुकावट के कभी-कभी तात्कालिक कारण भी होते हैं, जैसे इनमें कोरोनरी थ्रम्बोसिस या ब्लड कलोटिंग का रक्त का थक्का बनना ।

दिल की बीमारियों के रोकथाम के लिए साओल जिस प्राकृतिक विधि को अपनाता है उसे अमेरिकी चिकित्सक डॉ॰ डी॰ आर्निश द्वारा प्रतिपादित किया गया है । डॉ॰ छाजेड़ ने बताया कि साओल साइंड एंड आर्ट ऑफ़ लिविंग का संक्षिप्त रूप है । इसका तात्पर्य जीने के लिए विज्ञान और कला का तर्कसंगत तालमेल है । उपचार के इस प्रबंधन विधि को अपनाकर मरीज़ इलाज के ख़र्च में कई गुना तक कटौती कर सकते हैं ।

डॉ॰ आर्निश ने संतुलित भोजन, संयमित जीवन और आचरण को अपनाने पर बल दिया है । उन्होंने कहा कि मानसिक तनाव का प्रबंधन के लिए, श्वास संबंधी व्यायाम करने चाहिए । खुद को तरोताज़ा रखने के लिए नियमित व्यायाम–तेज़ चलना, शारीरिक अंगों के हल्के व्यायाम, उछलना-कूदना, खेलना, श्रम करना आदि करने चाहिए । डॉ॰ बिमल छाजेड़ के अनुसार आहार को क़ाबू में रहना चाहिए, वसा युक्त भोजन, अंडे की ज़र्दी, मांस, मछली, संतृप्त तेल, घी मक्खन, मलाई, क्रीम, अधिक कैलारी आदि से परहेज़ करना चाहिए । भूख से अधिक नहीं खाना चाहिए। चीनी और नमक की अधिकता से बचना चाहिए ।

इस प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति से लगभग 2500 हृदय रोगियों को रोग मुक्त कर चुके डॉ॰ बिमल छाजेड़ कहते हैं कि आधुनिक चिकित्सा तकनीक में उपलब्ध कई प्रकार की चिकित्सा पद्धतियों और नयी-नयी दवाइयों की अपेक्षा यह पद्धति ज़्यादा कारगर और लाभदायक है । इसके पश्चात रोगी पूरी तरह से रोग मुक्त हो जाता है और सबसे विशेष बात यह है कि व्यक्ति ऐसी आदत डाल लेता है कि अन्य बीमारियां भी दुबारा पास आने का नाम नहीं लेतीं । जो लोग इस चिकित्सा पद्धति का परीक्षण के बाद भी पालन करते रहते हैं उन्हें हृदय विकारों का ख़तरा बिल्कुल नहीं हो सकता ।

वास्तव में देखा जाए तो हमारी जीवनशैली ही तमाम बीमारियों का कारण बनती है । संतुलित और सरल जीवन जीने की कला सीख लेना ही सब रोगों से मुक्ति का रास्ता है ।

लेखकों एवं रचनाकारों से

''कान्ति'' में प्रकाशनार्थ जो रचनाएं हमें मिलती हैं, उनकी स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना अथवा रचनाओं की वापसी के लिए अपना पता लिखा लिफ़ाफ़ा डाक टिकट सहित अवश्य भेजें । इसके अभाव में रचनाओं के विषय में हम आपको जानकारी देने में असमर्थ हैं । ध्यान रहे कि पर्याप्त डाक टिकट लगाकर प्रकाशनार्थ सामग्री भेजें, ताकि डाक, बैरंग न हो । आशा है, आपका सहयोग मिलता रहेगा ।

-संपादक

रोज़गार के अवसर हैं मैटीरियल मैनेजमेंट में

सूचना प्रौद्योगिकी की धूम और बायोटेक्नोलॉजी के शोर के बावजूद कैरियर की दृष्टि से प्रबंध स्नातक उन लोगों में शामिल हैं जिन्हें आज भी निजी क्षेत्रों में सर्वाधिक वेतन व सुविधाएं प्राप्त हैं। साथ ही उन्हें नौकरी के चयन में तमाम अवसर और विकल्प भी उपलब्ध हैं। यही वजह है कि इंजीनियरिंग पाठ्यक्रमों के करने के उपरांत तमाम युवा नौकरी की अपेक्षा अच्छे प्रबंध संस्थानों में दाख़िले को प्रथम वरीयता देते हैं। प्रबंध स्नातकों/डिप्लोमाधारियों की अनवरत मांग और देश के कुछ चुनिंदा विशिष्ट संस्थानों में ही इसकी उपलब्धता को देखते हुए तमाम शैक्षणिक संस्थानों में प्रबंधन से जुड़े कई पाठ्यक्रमों को शुरू कर दिया है।



अमूमन प्रबंध शिक्षा से अभिप्राय एम॰बी॰ए॰ (व्यवसाय प्रशासन) से लगाया जाता है जबकि असलियत यह है कि प्रबंधन अपने आप में न जाने कितनी विधाओं को समेटे हुए है। लेकिन अधिसंख्य युवा संस्थान विज्ञापनों के भ्रमजाल में पड़कर व्यापार, वित्त, मानव संसाधन विकास, विपणन, बैंकिंग, मार्केटिंग प्रबंधन जैसे लोकप्रिय पाठ्यक्रमों में दाख़िला ले लेते हैं, जहां आमतौर पर पहले से ही हज़ारों की भीड़ मौजूद रहती है। नतीजा होता है कि आई॰आई॰एम॰ व इसी तरह के अन्य ख्यातिलब्ध प्रबंध संस्थानों से निकले छात्रों की तुलना में रोज़गार बाज़ार में प्राय: टिक नहीं पाते हैं और उन्हें बाद में कम आय पर या तो नौकरी करनी पड़ती है या फिर वे अपने रास्ते को बदल देते हैं। लेकिन यदि प्रबंधन के क्षेत्र में कैरियर बनाने वाले युवा थोड़ा सचेत रहें तो वे प्रतिस्पर्धी प्रबंधकीय पाठ्यक्रमों से हटकर अन्य ग़ैर परंपरागत प्रबंधकीय पाठ्यक्रमों में दाख़िला लेकर अपना कैरियर स्वर्णिम बना सकते हैं। ऐसा ही एक पाठ्यक्रम है सामग्री प्रबंधन जिसे अंग्रेज़ी में मैटीरियल मैनेजमेंट कहते हैं।

सामग्री पाठ्यक्रम की अहमियत कुछ ख्यातिलब्ध प्रबंधन पाठ्यक्रम के उपरांत पहले स्थान पर है। किसी भी संस्था अथवा विभाग में चाहे वह सरकारी हो या निजी भले ही वहां 10+2 लोग ही क्यों न कार्यरत हों, भंडार विभाग अवश्य होता है। इस विभाग की देख-रेख व संचालन की व्यवस्था के लिए योग्य व्यक्तियों की आवश्यकता होती है। उसकी यह ज़िम्मेदारी होती है कि वह विभाग की ज़रूरतों के अनुसार सामग्री की ख़रीद करे उनका रख-रखाव करे और वितरण का लेखा-जोखा रखे। स्टोर विभाग की देख-रेख व प्रबंधन करने वाला व्यक्ति स्टोर कीपर (भंडारपाल) या फिर मैटीरियल मैनेजर कहलाता है। स्टोर कीपर, सामग्री प्रबंध का जानकार होता है। सरकारी और ग़ैर-सरकारी दोनों जगहों पर स्टोर कीपर या मैटीरियल मैनेजर की नियुक्ति के लिए सामग्री प्रबंधन में डिग्री/डिप्लोमा ज़रूरी माना जाता है।

सामग्री प्रबंधन (मैटीरियल मैनेजमेंट) पाठ्यक्रम में दाख़िले के लिए अमूमन शैक्षिक योग्यता स्नातक निर्धारित है लेकिन विज्ञान और वाणिज्य स्नातकों के लिए पाठ्यक्रम ज़्यादा फ़ायदेमंद साबित हो सकता है। सामग्री प्रबंधन में स्नातक डिप्लोमा या स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रमों की अवधि अमूमन दो वर्ष निर्धारित है। चयन प्रवेश परीक्षा और साक्षात्कार के माध्यम से होता है। इस पाठ्यक्रम की शिक्षा देने वाले प्रमुख संस्थानों में भारतीय सामग्री प्रबंध संस्थान, एन॰एच॰क्यू॰ शिक्षा स्कंध, 247 रोजा आरकेड कोरा मंगला, बेंगलूर-560095 का काम उल्लेखनीय है। यहां सामग्री

प्रबंध में स्नातक डिप्लोमा (जी॰डी॰एम॰एम॰) और सामग्री प्रबंध में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पी॰जी॰डी॰एम॰एम॰) संचालित किया जाता है ।

पी॰जी॰ डिप्लोमा पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए न्यूनतम 55 प्रतिशत अंकों समेत स्नातक के अलावा दो वर्ष का सामग्री प्रबंध में पर्यवेक्षकीय अनुभव ज़रूरी है । जबकि जी॰डी॰एम॰एम॰ के लिए किसी भी विषय में स्नातक डिग्री होनी चाहिए । पाठ्यक्रम की अवधि नियमित रूप से दो वर्ष व अंशकालिक पत्राचार माध्यम से तीन वर्ष है । इन पाठ्यक्रमों में दाख़िले के लिए सम्मिलित अभिरुचि परीक्षा ली जाती है । इसके अलावा अन्नामलाई विश्वविद्यालय (दूर शिक्षा निदेशालय) अन्नामलाईनगर-608002 द्वारा सामग्री प्रबंध में पत्राचार माध्यम से स्नातकोत्तर डिप्लोमा दिया जाता है । प्रवेश के लिए न्यूनतम शैक्षिक योग्यता स्नातक है । स्कूल ऑफ़ कम्युनिकेशन एंड मैनेजमेंट स्टडीज, मैनेजमेंट हाउस, साउथ लिमेस्सठी, कोचीन के अलावा इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी, मुंबई और खड़कपुर तथा इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी बनारस (बी॰एच॰यू॰) व रीजनल इंजीनियरिंग कालेज वारंगल कालातिया-आंध्र प्रदेश में मैटीरियल एंड मेटालर्जिकल इंजीनियरिंग में स्नातक पाठ्यक्रम उपलब्ध है । बारहवीं कक्षा भौतिकी, रसायन व गणित के साथ उत्तीर्ण अभ्यर्थी यहां दाख़िले के लिए प्रवेश परीक्षा में बैठ सकते हैं ।

समिटी स्कूल ऑफ़ डिस्टेंस लर्निंग, एविटी कैम्पस पी॰बी॰ नं॰ 503 सेक्टर-44 नोएडा में एक वर्षीय मैटीरियल मैनेजमेंट पाठ्यक्रम उपलब्ध है । जबकि लखनऊ वि॰वि॰ लखनऊ में क्वालिटी कंट्रोल मैनेजमेंट की सुविधा है । यह पाठ्यक्रम मैटीरियल मैनेजमेंट से ही जुड़ा एडवांस कोर्स है । इन पाठ्यक्रमों में दाख़िला लेकर प्रबंधन के इस अछूते पाठ्यक्रम के ज़रिये कैरियर की ऊंचाइयों पर पहुंचा जा सकता है ।

● **महेन्द्र प्रताप सिंह**

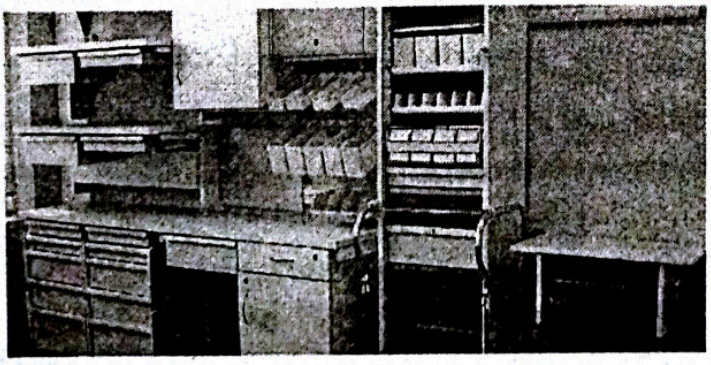

हवाई सुरंग

हवाई जहाज़ का आविष्कार सदियों पहले हुआ था । इसमें निरंतर सुधार किया गया है और नये-नये प्रकार के हवाई जहाज़ बने हैं और आज भी बन रहे हैं । नये बने हवाई जहाज़ों के परीक्षण की विधि होती है । इन विधियों में एक विधि है हवाई सुरंग परीक्षण । जब कोई हवाई जहाज़ चलता है तब उसके पास हवा विचित्र ढंग से बहती है । नये बने हवाई जहाज़ के परीक्षण के समय भी यह देखना आवश्यक होता है कि उसके पास हवा कैसी बहेगी । यह कार्य हवाई सुरंग में किया जाता है जो एक बड़ी नली या कमरे जैसा होता है । इसमें बड़े-बड़े पंखों द्वारा बहुत तेज़ हवा चलायी जाती है । इस तरह हवाई सुरंग में वही स्थिति उत्पन्न हो जाती है जिसका सामना हवाई जहाज़ को उड़ते समय करना होगा । यही नये बने हवाई जहाज़ के परीक्षण की विधि है जिसके द्वारा निर्माणकर्ता हवाई सुरंग में यह देखता है कि हवाई जहाज़ कैसा काम कर रहा है । इस क्रिया से इस बात का भी पता चलता है कि हवाई जहाज़ में सुधार की आवश्यकता है या नहीं । यदि सब कुछ ठीक है, तभी हवाई जहाज़ को उड़ान के लिए भेजा जाता है । इस तरह हवा के बहाव का हवाई जहाज़ की गति से गहरा संबंध होता है ।

उजले पेट वाला बगुला

पूर्वी हिमालय की छोटी-छोटी पहाड़ियों पर उज़ले पेट वाले बगुले बहुतायत से पाये जाते हैं । भारत के अलावा ये बंगलादेश, म्यांमार तथा भूटान में भी पाये जाते हैं । इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन ऑफ़ नेचर (आई॰यू॰सी॰एन॰) ने इन्हें विलुप्त प्राय: जीवों की श्रेणी में माना है । ये स्वभावत: एकांत प्रिय जीव हैं तथा कम बहाव वाली नदियों के किनारे रहना पसन्द करते हैं । इनके शरीर का रंग भूरा होता है, जबकि गर्दन लम्बी, पेट का रंग उजला तथा चोंच काली होती है । इनकी ऊंचाई लगभग 127 सेंटीमीटर होती है । एशिया में पाये जाने वाले बगुलों में ये सबसे बड़े तथा विश्व में दूसरे सबसे बड़े बगुले हैं । सिर्फ़ गोलियथ बगुलों की ऊंचाई ही इनसे अधिक होती है । ये ज़मीन पर बहुत धीरे-धीरे चलते हैं तथा आसपास देखने के लिए गर्दन भी देर से घुमा पाते हैं । जंगल तथा नमी वाली ज़मीन की कमी तथा प्रदूषण के कारण इनकी संख्या में ज़बरदस्त कमी आयी है ।

● **विद्या प्रकाश**

मौसम और अल्लाह की महानता

बाल कहानी

गर्मी के मौसम की शुरुआत हो चली थी । धूप ख़ुश्क थी और हवाओं में धूलभरी गरमाहट का असर क़ुदरतन पैदा हो चुका था । पक्षी आम के दरख़्त की शीतल छांव में शाख़ा पर बैठा सुस्ता रहा था । जीव-जंतु तपन से बेहाल थे ।

गुड्डू जब सालाना इम्तिहान का अन्तिम प्रश्न पत्र देकर घर लौटा, दोपहर के साढ़े 12 बज रहे थे । गर्मी से व्याकुल गुड्डू ने ड्राइंग रूम में घुसते ही पेंसिल बॉक्स, कलर बाक्स और प्रश्न पत्र मेज़ पर रखा और सीलिंग फ़ैन का स्विच ऑन कर थका-मांदा बिस्तर पर जा लुढ़का और बोला, मम्मी ! आज गर्मी कल से ज़्यादा बढ़ गयी है । स्कूल घर से अधिक दूर नहीं है, मगर परीक्षा देकर आने में गर्मी की वजह से वह परेशान हो उठा । हवा में भी गरमाहट है 'गर्मी का मौसम अल्लाह ने कितना बेकार और तक़लीफ़देह बनाया है ।' वह लेटे ही बोला ।

मम्मी ने यह सुनकर कहा, 'परवरदिगारे आलम अल्लाह के तमाम दुनियावी और ग़ैर-दुनियावी इन्तिज़ाम के मामले में कभी किसी प्रकार की शिकायत नहीं करनी चाहिए ।

गर्मी, बरसात, जाड़ा, पतझड़ और बहार के सालाना सिलसिलेवार मौसमों की आमद अल्लाह की शक्तिमत्ता, ख़ूबसूरत कारीगरी और सन्नाई को तस्दीक़ करने वाली है ।

गर्मी में बहने वाली गरम लू, बसंती बयार, जाड़े में शीत की शिद्दत में दरख़्त की पत्तियों से रात में टप-टप टपकने वाली ओसीली बूंद, पतझड़ की गंभीरता और वर्षा की रिमझिम-रिमझिम ठंडी-ठंडी फुहार अल्लाह के सुव्यवस्थित प्रबंध कौशल को दरशाती हैं । इन मुख़्तलीफ़ मौसमों में से यदि एक न हो तो हमें दूसरे मौसम की महत्ता के संबंध में अनुभूति ही न हो । कोई मौसम व्यर्थ एवं अनुपयोगी नहीं है और सब मौसमों का अपनी-अपनी जगह पर समान महत्व है । जाड़े का मौसम कंपाता है तो बरखा धरती की प्यास बुझाती है, बहार ज़िन्दगी के ख़ूबसूरत पहलू को उजागर करता है तो पतझड़ मानव-जीवन के दूसरे पक्ष यानी संसार की क्षणभंगुरता का दिग्दर्शन कराता है ।

सृष्टि में इतनी सुन्दर व्यवस्था करने वाला अल्लाह कितना महान शक्तिमान और कितना मेहरबान है जो उसने इतनी सुन्दर व्यवस्था हमें प्रदान की । हमें उसकी मेहरबानियों, अनंत उपकारों तथा कृपालुता का सदैव एहसानमंद होना चाहिए ।

यह सुनकर गुड्डू का सिर अल्लाह के प्रति श्रद्धा में झुक गया ।

● विद्या प्रकाश

मचा हुआ कोहराम है

हर पर क़ातिल, हर पल मुजरिम
मचा हुआ कोहराम है
आंखों में पत्थर, धड़कन में
भारी सौ चट्टाने हैं,
होठों पर कांटों के जंगल
रिश्तों में वीराने हैं,
चाहत, प्यार, वफ़ा का लोगो
बचा नाम ही नाम है
सारे 'पूजाघर' सूने हैं
दामन सबके उलझे-उलझे
अंधेरों की भीड़ में अब तो
राह कोई भी सहज ना सूझे
रातों के संग हाथ मिलाना
उजालों का मात्र काम है
जो ऊंचे थे, बौने हो गये
लगे रेंगने सड़कों पर
कैसे लिखें कहानी कोमल
गली के भोले लड़कों पर
हर चमकीले बिस्तर पर
औंधी-सी लेटी शाम है ।

शुचि वंदना
लाजपतनगर, नयी दिल्ली-24

इन्हें भी जानिए

● भारत वर्ष के दक्षिण में हिन्द महासागर है । संसार में यही एक ऐसा महासागर है, जिसका नाम किसी देश के आधार पर रखा गया है ।

● विश्व के समुद्र तल को 24 भागों में विभक्त किया गया है । इसमें प्रशांत महासागर 12 भागों में बंटा हुआ पाया गया है । एटलांटिक महासागर सात भागों में और हिन्द महासागर पांच भागों में बंटा हुआ पाया गया है ।

● कुछ समुद्रों का नाम उनके पानी के रंगों के आधार पर रखा गया है । जैसे उत्तरी रूस के सागर को श्वेत सागर कहा गया है । चीन के पास के सागर को पीत सागर और लाल सागर ।

● प्रशांत महासागर का म्यूना ज्वालामुखी समुद्र तल से 1400 फुट ऊंचा है । महासागर के अन्दर इसकी ऊंचाई कुल मिलाकर 3000 फुट ऊंचा है । यह ऊंचाई एवरेस्ट की ऊंचाई से भी ज़्यादा है ।

● काफी समय पहले पृथ्वी अपनी धुरी पर 24 घंटे में न घूमकर, 6 घंटे में घूमती थी । उस समय चंद्रमा भी पृथ्वी के काफ़ी पास था । उस समय बहुत ऊंचे-ऊंचे ज्वार भाटे के कारण पृथ्वी हिल जाती थी और जो कुछ भी उस पर होता था, वह बहकर समुद्र के तल में चला जाता था ।

● कुछ समुद्र तलों में मूंगे पाये जाते हैं । इन्हें एक कीड़ा बनाता है और इतनी बड़ी संख्या में बनाता है कि उनकी चट्टाने बन जाती हैं ।

● हिन्द महासागर के नीचे एक पठार है जो भारत से अंटार्कटिका तक फैला हुआ है ।

● विश्व की सबसे लम्बी पर्वत श्रेणी समुद्र के नीचे मध्य एटलांटिक पर्वत श्रेणी है । यह उत्तर में आइसलैंड से लेकर अमेरिका तक फैली हुई है । यह 10 हज़ार मील से अधिक लम्बी है ।

● बहुत अधिक समय नहीं हुआ, जब उत्तरी अमेरिका और एशिया मिले हुए थे । उस समय इंग्लैंड यूरोप का ही एक भाग था और अफ़्रीक़ा का सहारा रेगिस्तान एक उथला समुद्र था ।

● समुद्र में उठने वाली साधारण लहरों की गति 15 मील प्रति घंटा मापी गयी है । इससे तेज़ गति वाली लहरें भूचाल और ज्वालामुखी के कारण बनती हैं । भूचाल के कारण उठने वाली लहरों की गति जेट विमान की गति से भी तेज़ होती है । इनकी गति 700 मील प्रति घंटा मापी गयी है । ये बड़े-बड़े जहाज़ों को तोड़ डालती है और समुद्र के किनारे बसे नगरों को बहा सकती है ।

● डायोनिया मस्कीप्यूला एक प्रकार का शिकारी पौधा है जो कीड़ों-मकोड़ों का आहार होता है । यह इतना सक्रिय होता है कि हल्की-सी आहट पर भी कीड़ों को तत्काल पकड़ लेता है । इसके दो पत्ते शिकार करने में मदद करते हैं तथा किसी भी कीट के निकट आते ही यह उसे एक सेकेंड में ही निगल जाता है ।

● वेलविशिया माइराबिलिश नामक पौधे में सिर्फ़ दो ही पत्तियां होती हैं जिसके सहारे यह पूरा जीवन बिता देता है । यह पौधा एक हज़ार साल से भी अधिक समय तक जीवित रह सकता है । काफ़ी भयानक दिखने वाला यह पौधा अफ़्रीक़ा महाद्वीप के देश नामीबिया के रेगिस्तान में पाया जाता है ।

● इंडोनेशिया में एमाफाफेलस टाइटेनम नामक एक ऐसा पौधा पाया जाता है जो देखने में फूल की तरह लगता है । इस पौधे का आकार आदमी से बड़ा होता है । इसकी गंध बहुत तेज़ तथा असहनीय होती है जिसके कारण इसके पास जाना मुश्किल होता है ।

● दुनिया में कुछ पौधे बहुत तीव्र गति से वृद्धि करते हैं । लेकिन बांस सबसे तेज़ी से बढ़ने वाला पौधा है । यह एक दिन में लगभग एक मीटर तक बढ़ सकता है ।

■ विद्या प्रकाश

मुद्रक एवं प्रकाशक ख़लील अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि०), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट, गली क़ासिम जान, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से मुद्रित ।
फोन: 09818799223, 011-26949430
संपादक : डॉ० मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है ।



قُلْ يَٰٓأَيُّهَا ٱلْكَٰفِرُونَ لَآ أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ
وَلَآ أَنتُمْ عَٰبِدُونَ مَآ أَعْبُدُ وَلَآ أَنَا۠ عَابِدٌ مَّا عَبَدتُّمْ
وَلَآ أَنتُمْ عَٰبِدُونَ مَآ أَعْبُدُ لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِىَ دِينِ

कह दो :

"ऐ इन्कार करने वालो!
मैं वैसी बन्दगी नहीं करूंगा
जैसी बन्दगी तुम करते हो,
और न तुम वैसी बन्दगी करने वाले हो
जैसी बन्दगी मैं करता हूं।
और न मैं वैसी बन्दगी करने वाला हूं
जैसी बन्दगी तुमने की है।
और न तुम वैसी बन्दगी करने वाले हुए
जैसी बन्दगी मैं करता हूं।
तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म है
और मेरे लिए मेरा धर्म!"

(क़ुरआन)

A WELL WISHER
MUMBAI

Posted on 20-21 November 2013
December 2013
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.11.2013

कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2012-2014
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2012-14





بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَدٌ اللّٰهُ الصَّمَدُ
لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُ كُفُوًا أَحَدٌ

कहो : "वह अल्लाह यकता है, अल्लाह निरपेक्ष (और सर्वाधार) है, न वह जनिता है और न जन्य, और न कोई उसका समकक्ष है।"

(कुरआन)

A WELL WISHER
MUMBAI